पञ्चस्तवी

कश्मीरी (देवनागरी, फ़ारसी) अनुवाद सहित।

लेखक :- पंडित जिया लाल सराफ़।

प्रकाशक :- मालिकानि
नया कश्मीर होटल, लाल चौक,
अमीराकदल, श्रीनगर।

मिलने का पता :-
श्री भवानी आश्रम, पुरशीयार, श्रीनगर।

जून = १९६८ मूल्य = ५.०० पैसे

-: संपदाक :-



स्वर्गवासी

पंडित जिया लाल सराफ

3rd May, 1901—17 April 1975



श्री पञ्चस्तवी

तथा

दुर्गासप्तशती का चौथा अध्याय

(श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में
अर्थ सहित)

स्वयंसा :—

जिया लाल सराफ
नया कश्मीर होटल, लाल चौक,
श्रीनगर, कश्मीर।

मिलने का पता:—

भवानी आश्रम
पुखरीबल (हारी पर्वत)
श्रीनगर, कश्मीर।



ملنے کا پتہ :—
بھوانی آشرم
پکھری بل (ہاری پربت)
سرینگر کشمیر

(شالیمار آرٹ پریس سرینگر)

ॐ

शक्ति रहस्य

संसार में किसी भी कार्य में हाथ डालने से पहले शक्ति की आवश्यकता है। जब तक शक्ति जो जीव को अपने ही अन्दर मौजूद है। उस शक्ति को काम में न लावे। किसी काम में सफलता न होती है और न होगी।

जीव को अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। सब पदार्थों में अपनी अपनी शक्ती अपने अन्दर है, जीव में शक्ती का भण्डार है। जिसतरह लकडी के अन्दर आग छुपी हुई है और लकडी को मालूम नहीं कि मुझ में आग की शक्ती अन्दर है। जब इसकी शक्ती 'आग' प्रकट होकर बाहर आती है तो पदार्थों को भस्म कर देती है तो लकडी अपने असली 'आग' के स्वरूप को प्रकट करती है। इसीतरह जीव के अन्दर शक्ती का भण्डार है और वह शक्ती जीव के अन्दर है। उस को मालूम नहीं कि मैं क्या हूँ। उस शक्ती से

जैसा चाहें अपनी अवस्था को बना सकते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि, मुन्नी महात्माओं में शक्तियां और सिद्धियां थीं। वह शक्तियां हम में भी हैं। (पुरषार्थ) पुरुषार्थ करने की ज़रूरत है। पुरुषार्थ का मतलब है, (पुरुष-ऽर्थ) पुरुष का धन। जब जीव पुरुषार्थ करें, और दृढ़ रहें तो उस महाशक्ति को उजागर कर सकता है। वह महाशक्ती जो जीव के अन्दर है। उसको परा शक्ति, ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति, इस्सा शक्ति, चित्त शक्ति वैगरा २ कहा गया है। इस महान शक्ति को जगदम्बा (जगत् माता), जगत जननी इत्यादि नामों से कहा गया है। और इन्हीं नामों से शक्ति को पूजन अर्चन किया जाता है। सारा जगत शक्ती से ही बना है और बनाया जाता है। तमाम आविष्कार जो जगत में हुए हैं और नए नए आविष्कार होते हैं। शक्ति ही उनका मूल कारण है। शक्ती के सिवा कुछ नहीं बन सकता।

भवानी सहस्रनाम में पहले शंकर और नन्दीगण का समवाद लिखा है। नन्दीगण

शंकर से पूछता है। महाराज मुझे प्रश्न है। कृपा करके मुझे प्रश्न का उत्तर दीजिए।

आप जगत के स्वामी होकर आप आंखें बन्द करके सदा किस का स्मरण करते हैं और किस के ध्यान में सदा रहते हैं। क्या आप से बढ़कर कोई और ऊपर भी है। जिसका आप ध्यान करते हैं। तो शंकर उत्तर देता है। हे नन्दीगण सुनो! यह रहस्य है। तीन गुण वाली श्री शक्ती नाम की शक्ती मेरे अन्दर है उसी के बल से मैं इस संसार को पैदा करता हूँ, पालता हूँ और उसी में लीन होता हूँ। उसी के बल से मैं जगत, पहाड नदियां समन्द्र, जो भी संसार में देखते हो; बनाता हूं। यह सब जगत उसी शक्ती का प्रकास है। उसी शक्ति का ध्यान करने से अर्चन करने से सब सिद्धियां प्राप्त होती हैं इसी लिए इसी का सदा स्मरण करता हूँ। हर एक मनुष्य में यह देवी रूप शक्ती छुपी है और इस को जाग्रत करने की आवश्यकता है।

आपको मालूम होगा कि हम जब बच्चे थे तो हमारी माता बचपन में हमको इसी शक्ती माता के स्वरूप का बीज डालती थी और कश्मीरी भाषा में हमको बार बार कहती रहती —— (कश्मीरी में) —— "ज़ेन मांज ज़ूनुय, अम्मन अन्गान क्यथ तय ज़ीव, यिम कस गनेयि, राय यस गनेयि, राय क्या छुतुय खसुन गुर वसवुन नाव, तेव्य क्यथ वेछुस व दुन ज़ूनुय, तरि हुकुम ज़ेटुय मोटुय सासलि हना, रसि दुलम ख्वन टर, सुय लोटुम जरीरे, जजीर लोजिम नचुने, काव लोगेम लुछिने, गोन्ठ लजिम असुने, सु कुस म्योन कौलु तारकुय"——अर्थात माता 'ज़ून' प्रकाश जीतना है। प्रकाश क्या है? अंग अंग में अर्थात हर एक चीज़ में चित्त और जीव जानना है। वह किसको प्राप्त है। जिसको राव अर्थात ख्याल की दृढ़ता ने क्या दिया, चढ़ने के लिए घोड़ा और उतरने के लिए किश्ती अर्थात (प्राणायाम)। उसी किश्ती

से उतर गई। "तून" यानी नाभि (नाभिस्थान) के तरफ वहां मैं ने देखा, छोटी सोटी कुण्डलिनी, उसी ने मुझे "श्री" बरतन में, दिया, वह मैं ने अन्दर डाला और मुझको सारा जगत अपना ही स्वरूप दिखाई दिया। लोगों ने हंसा, पर कौन मेरा, जो मेरे कुल का तारक होगा माता अपने पुत्र को बचपन से ही उसको यह ख्याल रूपी बीज डाल देती थी। कि हे पुत्र तुम्हारा कर्तव्य है। अपने कुल का तारक बनना, यह उपदेश माता सबसे पहले अपने बच्चे को देती थी। ताकि यह बच्चा बड़ा होकर अपने कुल का तारक बनेगा। पञ्चस्तवी के पहले स्तव में दो श्लोकों में इसी का निर्णय किया गया है।

यहां कश्मीर में शक्ति उपासना ही प्रचलित थी जिस समय श्री शंकराचार्य महाराज बुद्धमत को खण्डन करते कश्मीर पहुंचे- तो उस वक्त यहां श्री अभिनवगुप्त जी शक्तिमत के आचार्य थे। तब श्री शंकरा-

चार्य जी उनके पास शास्त्रार्थ करने आये। श्री शंकराचार्य जी शिव के उपासक थे। शक्ती को नहीं मानते थे। श्री अभिनवगुप्त जी ने उन को कहा। यह जगत शक्ती का विकास है। वह [illegible] है। उस शक्ती का विकास ही यह सारा संसार है। पञ्चस्तवी के पहले तव के पहले तीन (३) श्लोकों में श्री कुण्डलिनी शक्ती का बर्णन किया गया है। साड़े तीन वार लिपटी हुई वह छोटी मोटी कुण्डलिनी जिसको जाग्रत हो। तो वह जन्म मरण से छूटता है। उसको दूसरा जन्म प्राप्त नहीं हो सकता। वह मुक्त हो जाता है।

श्लोकः— संसार कुहरादऽस्मात् निगन्तव्यं स्वयं बलात्।
पौरुषं यतनमाश्रत्य हरिणो वारि मञ्जरात्॥

अर्थः— [illegible] ज़िसि मंज़ छ़ोर,
पनुने बल किन्य छि नीरिथ छ्यकान।
पुरुषार्थ पनुनि यत्न सूत्य,
सिथु पांछ्य सुइ पंजरु मंज़ छुय नेरान॥

श्लोक :— सारेण पुरुषार्थेन स्वेनैव गरुडध्वज,
कश्चित इव पुसानेव पुरुषोतमतां गता॥

अर्थ :— पनुने पुरुषार्थु कि ज़ोरु किन्य,
ज़ीव ति छुय पानु नारायण बनान।
पुरुषण मंज़ आसान खाल काह पुरुष,
युस पुरुषोत्तम बानस प्यठ छु वातान॥

अपनी शक्ति के बगैर उपासक को परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।

श्लोक :—
आपद्वनमऽननतोहा, परिपल्लवित्ता कृति।
पुरुषार्थं क्रकच च्छिन्नं, नैव भूयः परोहिति॥

अर्थ :— आपदारूपी युस अन्तु रोसजंगल,
फलमति शकलि युस बोज़नु यिवान।
पुरुषार्थ कि लॅन्नि सुत्य च़ट्य च़ट्य,
यि आपदा जंगल पत् छुनु खसान॥

"अयमात्मा शक्तिहीने लभ्यः"

अर्थ :— शक्तिहीन को परमात्मा प्राप्त नहीं होता ; और जन्म मरन से छूट नहीं सकता।

इसलिए शक्ति की उपासना करनी चाहिए। चित शक्ति पूर्ण प्रेम स्वरूप है और सर्व व्यापक है। चेत शक्ती के प्रसन्नता के लिए ख्वाहिश, काम, क्रोध और अहंकार रूपी मस्त को ज्ञानी रूपी तलवार से काटकर शक्ती माता के चर्ण कमलों पर अर्पण करें। तमाम प्राणियों से प्रेम उत्पन्न करें। अपने स्वरूप का औरों में देखें और तमाम प्राणियों के स्वरूप को अपने में देखें। भेद भाव का हमेशा के लिए छोड़ दें। अपनेजैसा औरों को आत्मवत समझें।

बालक, यौवन, वृद्ध स्त्री, राजा, साधु, पापी, मूर्ख, विद्वान वगैरह सब के ऊपर प्रेम पूर्वक एक नज़र से देखें। शुद्ध विचार को ही निरंतर अन्तःकर्ण में उदय होने दें, अशुद्ध विचार को पास मत आने दें। शुद्ध विचार और शुद्ध-आचरण का पालन करने से शक्ति माता प्रसन्न होती है। शक्ति माता को ही प्रसन्न करना है। इसलिए शक्ति माता का ध्यान करें। उपासना करें। शक्ति ही जीवन है।

शक्ति ही सत्य है। शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही सब कुछ है। शक्ति ही की सर्वत्र आवश्यकता है। शक्तिशाली बनें, बलवान बनें, वीर बनें, निर्भय बनें और स्वतन्त्र बनें।

इस मांस और रक्त रूपी जिस्म में जिसको शरीर कहते हैं। आप के लिए एक रथ है। जिस पर चढ़कर आप कहीं भी पहुंच सकते हो। इस शरीर रूपी रथ को काम में लावें। इस शरीर रूपी रथ के ज़रिये वैकुण्ठ पहुंच सकते हो। कायरता छोड़कर सजीव बनें। आपके अन्दर शक्ति का भण्डार है; आपके जीवन का उद्देश्य, विशेष जीवन को प्राप्त करने का है।

जियालाल सराफ

(समाप्तम्)

प्रार्थना

मांज़ भवान्य छुम में बेड चान्य आश
में ति बोज़तम चु ज़ारी।
छुस पथर प्योमुत तुलुम थोद,
कासतम में लाचारी।
पाद्य सेवन करहावोन्य बे चोन,
लगय पादन चे पारी।
ध्यान दार चोन हृदयस मंज़ ज़न,
बिहिथ चु तिलकदारी।
वोन्य बे ग्यव चान्य गुण तु लक्षण,
कांशिरिस मंज़ सारी।
पादुनुय चान्यन बे लागय,
लोलु पोश च्रांथ न्यारी।
चानि दर्शनु बापथ में गोम,
वख़काल प्रांथ प्रारी।
हावतम मोख कासतम में ज़न्म,
ज़न्मन हुज़ खारी।
कोर में पञ्चस्तवी तरजम,
कांशिरिस मंज़ ज़ारी।

युथ परोपकार वाति बखत्यन,
मेंत्ति वनि चान्य यारी ॥

پرارتھنا

ماج بوآنی حیم مے بڈآش ہے تہ لوزتم ژ زآری
چھس پتھر پیٹھ مُت تلم تھوو کاستم ہے لاچآری
پادِ سیوٗن کرہا وونی بہ چون لگے پادن ژے پآری
دیان دارِ چون ہردیس منز زن بہتھ ژ تلک دآری
وونی بہ گیو چانی گون تہ لکھن کاشرس منز سآری
پادِ نے چانہٕ نہ بہ لاگے لولہ پوش ژآری ژآری

چانہ دُرشُنہ باپتھ مے گوم یُتھ کال ژآری ژآری
ہاوتم موکھ کاستم مے زُنمہ زُنمن ہنز خآری
گوڑ مے پنچتوی ترجمہ کاشرس منز جآری
یتھ ووپکارہ واتہ بکھتن مے تہ
ینہ چھپآنی بیکآری

ॐ

ध्यान

सृष्टौसमस्थापनायतुऽपहरण विधौ
मोहणेनौग्रहीपि,
सर्वेषामऽगंलानाम् निज मीहमवशाद्
ऽक्रमेनैवयालम।
नित्यं क्रीडा प्रसक्ता स्वर्थात सकलं
स्वांतम शक्त्या प्रपंचम ।
सा नः स्नानाय सुयाद्ऽभिमत फलदं,
भद्रकाली च काली ॥

یوسہ پنٕنہ مہاکٕنہ کرٲن سرشٹی تھیتی سنہار
ییٚس دوان موٗدٕ تس تشہِ پرٛیت گٲن
کرتہٕ روٗستے سارینٕے بندشن یو سہ
کھرٛاوتس پنٕنیٚ سارے تھوان
سو ہے بدرٕ کالی کالیان سورو سوٗس
زٕچھتن آسہ کٕنچھتی کھلہِ آستن اسہِ دپان

योसु पननि महिमा किन्य करान
सृष्टी थैती संहार:
युस दिवान मोह त्स मिश पोत कडान,

क्रमु रौंस्तुय सारिनुय वोंदिशन य्रुस्
मुच़रावनस प्यठ द्वय सामुर्थवान,
स्रोय भद्रकाली कल्याण् स्वरूप् स्रोंस
रछितन असि कांछमुत्य फल आंस्यतन असि
छिवान ॥



ओं नमः त्रिपुर सौन्दर्यं ॥

—ः लघुस्तवः ः—

ॐ ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती
मध्ये ललाटं प्रभां,
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगौरिव
शिरस्यातन्वती सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः
सदा हृः स्थिता,
छिन्द्यान्नः सहसा पदैस्त्रिभिरघं
ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥१॥

یتھ دزِ تھرے کمان ہش ونت منزلاس دارانی

ژٔندرٕمُس ہِشۍ سفید ؤرن دِفتی۔ شیرَس ہیٹھ لیو یہ چمکانی
ہرٕدلیٖس ہٕمیس بہریہ سپنٛدی پاَنٹھی، چمکہ وِنی دفتی روزانی
سوے ترٕلوکس سٕندری سانٛبس ہرٕدلیس منٛز روزی تَن
سوے جوتی سۄروُپ اَتھ سوٗتی سۄروپ ٹینٛتھ ابہ ٹھکی تن
تراَن پٲدان ہپٕشد اَنٛگ ییہ گنِو، ترٕود پاپ اَسہ ژٕری تن

येन्द्राज़ु सन्ज़ हिश कमान छख दारवुन्य ही भवांनी
मंज़ ललाटस गह छे चमकान दिप्ति छे शुबांनी।
सासुबंध सिरियि बैयि चंन्द्रसु ज़न छे फोल्यमुत्य त्रोपारि
त्रिभवनस योहय चोन जोति रूप कासि प्रथ
कांसि खांरी।
योहय ध्यान चोन माता त्रोपरायि हृदयस
मंज़ मे रूज़्य तन।
युथ छे बनुहा परिपूर्ण सथ चित्त आनन्द गण
छ़ेटितनम पापन स्यान्यन कंर्यतनम लिछ़
मे जांनी।
सरस्वती हुन्द प्रसाद बेन्यतनम, युथ मे
खुलिहे वांणी।

या माता त्रपुसी लता तनुल सत्तन्तुस्थिति स्पर्धिनी,
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां तन्महे ते वयम्।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा,
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नराः
॥२॥

یوسہ زاوِجہ توریلہ لٔنجہ ہشہٕ تارِ ہش چھ پھہلاو
ساڈ ترٛوٲر زاوِج وٕلتھ یَس کنڈلنی شکتی چھ ناو
بیزٕ اچھرس منٛز کلا یوسہ ٹھیکت چھ آسانی
سوے کلا زٕگت پادٕ کرنس پتہٕ آسوِنی وُدیوگی
امہِ سٕے دیان ییس منش زانہٕ کرٕ سنا کرٕ تہٕ سپرش
گربہٕ باوس تٕرٕ باوس اَدٕ کرٕ بنِہ پیٛیہ منش

युस ज़ाविजि तोरेलि लंजि हुंज़ि तारि हिश यथ छु फ़्हलाव,
साढ़ त्रुवार ज़ाविज वॅलिथ यस कुण्डलिनी शक्ती
छु नाव।
बीज़ु अछरस मंज़ कला योसु ठीकिथ छु आसानी,
सोय कला ज़गथ पादु करनस आसुन्य कुय
वुद्यूगी।
अमिकुय ध्यान युस मनुष्य ज़ानि, कर सना
करि सु सपर्श,
गर्भु बावस श्रुयं बावस अदु कर बनि ह्येयि मनुष्य॥

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तु सहसा
ऐ ऐ इति व्याहृतं,
येनाऽऽकूत वशादऽपीह वरदे
बिन्दुं विनाप्यक्षरम्।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे,
वाचः सूक्ति सुधारसद्रवमुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात्
॥३॥

ہی دیوی یوٗد کانٛہہ خوفناک چیز وُچھتھ جل جل
کرِ اے اے بِنٛدرۄ ستےٚ شبدی مطلب تس حل
ییٚمہ مُجرا تَس تہ منتر بَنہِ تَس چوٚن اَنُگرہ
نیرِ وانی تَسنٛدِ موکھہ نِشہٕ ژَھٹہِ امرتہٕ کی سِشٹرٔہ

ही दीवी योद कांह खोफनाक चीज़
वुछिथ जल जल,
करि ऐ ऐ बिन्दु रौस्तुय सपदि
तस ती हल।
यियि मुजरा तसति मन्त्र बनि तस चोन अनुग्रह,
नेरि वांणी तसुन्दि मोखु निशि छुटि अमरथ तकुय
सु श्रेह ॥

यन्नित्ये! तव कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं,
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद्बुधश्चेद्भुवि।
आख्यानं प्रतिपर्व सत्य तपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पदं प्रणयितां
नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम्॥४॥

ہی نِتہ رُوٗپی دوٗیُم مَنتر چوٗن کامہ راجہ ناو آسِہ وُن
سُے مَنتر نِشکل بَنِتھ کانہہ پرتھوی پیٹھ چھُ زانہہ وُن
سُے گو سارسوتہ بیز اَکھر سَتہ تپ ہی رِشی چھِ پران
وو تَم پرون پیٹھ برہمن اسُیک ویاکھیان چھِ کران
وانِہ ناوِتھ اوٗنچ جایہ پیٹھ یی مَنتر اُچارن کران

ही नित्यरूपी दौयुम मन्त्र चोन कामः राज नाव
आसुवुन।
सुय मंत्र निष्कल बनिथ कांह पृथ्वी प्यठ छु ज़ानुवुन,
सुय गव सारसोत बीज़ अक्षर सततप ही ऋषि
छि परान।
वोतस परवन प्यठ ब्राह्मण अस्युक व्याख्यान
छि करान,
वातुनाविथ ओंचि जायि प्यठ यी मन्त्र उच्चारण
करान॥

०

यत्सद्यो वचसां प्रवृत्तिकरणे दृष्ट प्रभावं बुधै,
स्तातीयीकमहं नमामि मनसा त्वद्बीजमिन्दुप्रभम्।
अस्त्वौर्वोऽपि सरस्वतीमनुगतो जाड्याम्बु-
विच्छित्तये,
गौः शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं
विनासिद्धिदः॥
॥५॥

ترٚیمہ بیٚز اکھٕرک ہیا واٗنی کھلنس سیٹھہٕ گاٹٕلی وَچھان
تِتھٕ اکھرس ژٕنٛدٕر دِتھ سوٗ ستس چھُس یہ مٔنہ کٔنی ژرٛام کران
سوٗرٗوپ تٔتھ سہ لوگ دار نایہ روٗستے و ستٔیدی دوان
موٗرکھ روٗپی پاپِیس گالنہ باپتھ واڈو نامی اگن بنان

त्रेयमि बीज़ अक्षरुक महिमा वाणी खुलनस प्यठ
दाना वुछान,
तथ अक्षरस चंन्दुर दिफ़ति सोंसतिस छुस बंमनु
किय प्रणाम करा
सोंरूप बंनिथ सु योग दारनायि रोंसतुय सेंदी
दिवान,
मूर्ख रूपी पांपियस गालनु बापथ वाडव नांमी
अंगुन बनान

एकैकं तव दवि बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं,
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वास्थितं
व्युत्क्रमात्।
यं यं काममऽपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा
चिन्तितम्,
जप्तं वा सफलीकरोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम्॥
(६)

ہی دیوی یُس پَرِ چون بیز اَچھر یود کُنُے
دوٗشہ رۆس یا دوٗشہ سۆس یا وُلٹہ سیود یا بیٚون بیٚونُے
یِمہ یِمہ کامنایہ بابتھ یُس مَنُش آسہ زپان
تَمِس مَنُشَس بوٚزِس مَنز ساری مَطلَب چھی نیران

ही दीवी युस परि चोन बीज़ु अक्षर
योद कुनुय,
दूषि रौस या दूषि सौस या वुल्टु स्यौद या
ब्यौन ब्यौनुय।
येमि येमि कामनायि बापथ युस मनुश आसि ज़पान,
तमिस मनुशस बबुसरस मंज़ सारी मतलब छी
नेरान॥

वामे पुस्तक धारिणीमऽभयदां साक्षस्रजं दक्षिणे,
भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरांकर्पूर कुन्दोज्ज्वलाम्
उज्जृम्भाम्बुज पत्रकान्त नयन स्निग्धप्रभालो-
किनीं,
ये त्वामऽम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां
कवित्वं कुतः ॥७

کھووریس اتھس منز ژھے پوستک دورمت ہی بوانی
دچھنیس اتھس زپہ مال بییہ ستی ابھے دوانی
بیاکھ اتھ چون پمپوش زن بکھتین ور دوانی
کیوٗلی ستی پمپوشہ نیترو زن ژ بکھتن وچھانی
یُس یہ دیان کر چون امبا من تس پرسن بنانی
آسہ کانہہ سہ یتھ زگتس منز تس چھ دانا بنانی

खोवरिस अथस मंज़ छ़ै पोस्तक दोरमुत ही भवांनी,
दछिनिस अथस ज़पुमाल वैयि सुत्य अभय दिवांनी।
ब्यारव अथु चोन पम्पोश ज़न बख्तत्यन वर दिवांनी,
कौल्यसुत्य पम्पोशि नेत्रव ज़न त्रु बखत्यन वुछांनी।
युस यि ध्यान करि चोन अम्बा मन तस प्रसन्न बनांनी,
आसि कांह सु यथ ज़गतस मंज़ तस छि दाना बनांनी।

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीकपटल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
सिञ्चन्तीमऽमृत द्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम्।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षर पदा निर्याति वक्त्राम्बुजा,
तेषां भारति! भारती सुर सरितकल्लोललोलोर्मिवत्॥
(८)

یُس سفید پمپوش ڈلہٕ پٲٹھ خوش ژٕرے دِفتی وُچھانی
وٚرشُن کران امرتہٕ کۍ ژھٹہٕ تمہٕ چے پی آسے
یُس یہ دِیان کرِ برہمانڈس منٛز چھ تس نیرانی
بے روک پانٹھی تسندِ ہس کھہ نشہ سرسوتی ہنز وانی

युस सफेद पम्पोश डल पांठ्य
खोश छ्रै दिफती वुछानी,
वर्शुन करान अमरथ कुय कट्र,
तमिचे चिवानी ।
युस यि ध्यान करि ब्रह्माण्डस
मंज़ छि तस नेरानी,
बे रोक पांठ्य तसुन्दि सोरवु निशि
सरस्वती हुंज़ वांणी ॥

ये सिन्दूर पराग पुञ्जपिहितां त्वत्तेजसां द्यामिमा,
मुर्वीं चापि विलीनयावकरस प्रस्तारमऽग्नामिव।
पश्यन्तिक्षणमऽप्यऽनन्यमनसस्तेषामऽनङ्गज्वर,
क्लान्तास्त्रस्त कुरङ्ग शावकदृशो वश्या भवन्ति स्फुटम्।
॥ ६ ॥

چانہِ تیزٕ کنیٖ یُس اکھا وُچھہِ سینْدرٕ بریٖتھے آکاش
پرٛتھوی لاچہِ رنگہٕ فٹمٕتر وُچھہِ آسْتس مَنس باس
نہٕ ڈَلہِ وُنی کھینہٕ ماترس یُس یِہ دِیان دارآنی
سارے شکتی تِریہ رُوپ بَنتھ تِمنٕ چھہٕ قولو لوآنی
تِمہ شکتی یِمنٕ کامہ دیو تیرٕ سِتی بند کرآنی
(۹) تِتھہٕ پانٹھی یِتھ کھوٗرمت مرٛگہٕ بچہٕ کانہہ چھے رٹآنی

चानि तीजु किन्य युस अखा वुछि सेन्दूरि बंयथुय आकाश,
पृथ्वी लाछि रंग फटमुत्र वुछि आस्यस मनस बास।
न डलुवुन्य क्षण मात्रस युस यि ध्यान दारांनी,
सांरुय शखती त्रुयि रूप बनिथ तिमन छि कोलू यिवांनी।
तिमु शखती यिमन कामदीव तीर सुत्य बन्द करांनी,
तिथु पांठ्य यिथु खूचमुत मृगु बचि कांह कुय रटांनी॥

o

चञ्चत्काञ्चनकुण्डलाङ्गदधरामाबद्धकाञ्चीस्रजम्
ये त्वां चेतसि तद्गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितम्।
तेषां वेश्मसु विभ्रमादहरहः स्फारीभवन्त्यश्चिरं,
माद्यत्कुञ्जरकर्णताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः॥
((२०))

چمکوِنہ سونہ موختہ کنہ واجہ مُنٛدرِ بَنٛد ژُلاگانی
سونہ سنٛز تاگر پرزلہ وٕنۍ چھکھ ژُ کمرس گنٛڈانی
یُس یہ دیان چون مَنٛز مَنس تتھۍ پیٹھ یُس لگانی
تس روزِ شانہ شوکت گرس ژیر تامتھ لچھمی
سو لچھمی یوسہ مدہشی کنہ چھ ہسرکژ پاٹھۍ ژنچل آسانی
((१०)) سارے سمپدا یہ تس پوٗرشس قرار کرِتھ چھہ روزانی

चमकवुनि सोनु मोख्तु कनुवाजि मछुबंद च़ुलागांनी,
सोनु सुंज़ तागुर प्रज़लवुन्य छुख च़ु कमरस गंडांनी।
युस यि ध्यान चोन मंज़ मनस तथ्य प्यठ युसलगांनी,
तस रोज़ि शानु शौकत गरस च़ेर तामथ लक्ष्मी।
सो लक्ष्मी योसु मद हेस्य कनुचि हस्तच़ पाठ्य चञ्चल आसांनी,
सारेय सम्पाद्य तस पुरुषस क़रार करिथ छि रोज़ानी॥

o

आभंख्याशशि खण्ड मंडित जटाजूटां नृमुण्डस्रजं,
बन्धूक कुसुमारुणाम्बर धरां प्रेतासनाध्यासिनीम्।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामाऽपीनतुङ्गस्तनीं;
मध्ये निम्नवलित्रयाङ्किततनुं त्वद्रूप संवित्तये ॥११॥

شوٗبہ وُنہ چانہ جٹہٕ مُکُٹہٕ نالٕ مَنشہ کلہٕ مالہٕ سوٗس
بنٛدوٗقہ پوشہٕ رنٛگہٕ سوٗرخ پوشاکہٕ تلہٕ موٗردٕ آسنہٕ سوٗس
کمرس تاگر گنٛڈِتھ ژوٗتر بوٗز ترٛیہ نیٛتھر دارآنی
چوٗن سوٗروٗپ زانٕنہٕ باپتھ یہ دیان کھتی چھ سوٗرانی
«۱۱»

शूब्वुनि चानि जटु मुकटु नांल्य मनशि
कलु मालु सोंस ,
बन्दूकु पोशि रंगु सोरुख पोशाकु
तलु मोरदु आसुनु सोंस।
कमरस तागुर गंन्डिथ च़ोंतुर बोंज़
त्रै नैथुर दारांनी,
चोन सोंरूप ज़ानुनु बापथ यि
ध्यान कांछती छि सोरांनी॥

जातोऽप्यल्प परिच्छेदे क्षितिभुजां
सामान्य मात्रे कुले ;
निःशेषावनि चक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः।
यद्विद्याधर वृन्द वन्दित पदा श्री वत्सराजोऽभवत्,
देवि! त्वच्चरणम्बुज प्रणतिजः सोऽयं
प्रसादोदयः ॥२२॥

کانٛہہ راجا مومولی کولس منٛز آسہِ زامُت
کُل پرتھوی پیٹھ کران آسہِ راج آسِن پرووُت
تَس چکرورتس پادن دیوتا چھِ پوزان ++
چھُ مہما تَس چانہِ پادِ پوزایہِ ہنٛز مہربانی ((۱۲))

कांह राजा मोमूली कोलस मंज़ आसि ज़ामुत,
कुल पृथ्वी प्यठ करान आसि राज
आस्थान प्रोवमुत।
तस चक्रवर्तस पादन दीवता छि पूज़ांनी,
छु महिमा तस चानि पादि पूज़ायि हुन्ज़
मेहरबांनी ॥

चण्डि! त्वच्चरणाम्बुजार्चनगिरौ बिल्वी दलोल्लुण्ठनः
त्रुट्यत्कण्टक कोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः।
ते दण्डाङ्कुश चक्रचाप कुलिश श्रीवत्स मत्स्याङ्कितै-
र्जायन्ते पृथिवी भुजः कथमिवाम्भोज प्रभैः पाणिभिः॥
«२३»

ہی ژنڈی چانی ژرن پوزایہ یس اَنانی
بیل پوش ژٹنہٕ کنڈہٕ ستی اَتھ لیس چھ زصانی
لونگ تہٕ تیر کمانہٕ ہینڈی یس کنڈہٕ خشتہٕ ستی وسانی
تیتھی اَتھ سوس پوٚرش بنیہ زنمہ راجہ مہاراجہ بنانی
(۱۳)

ही च़ंण्डी चांन्य च़रनु पूज़ायि य्यड युस अनांनी,
ब्यल पोश चटय्‌ च़टय्‌ कण्डि स्त्य अथु,
यस कि छुयनांनी।
टोंग तु तीर कमानि हुन्द्य यस कण्ड खशि
स्त्य वसानी,
तिथ्य अथु सोंस पोरुष बैयि ज़न्मु राजि
महाराजि बनांनी॥
(13)

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्य मध्वासवैः,
त्वां देवि! त्रिपुरे! परापरमयीं संतर्प्य पूजाविधौ।
यां यां प्रार्थयते मनःस्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवम्,
तां तां सिद्धिमऽवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृता॥
((२४))

برہمن راجہ ویش یا شودر چانی پوزا کرانی
دود، گیو، ماچھ، شراب پوزایہ کنی ژنے اَرپن کرانی
شرادایہ کنی یہ کینژھا منگن چھکھ ضرور تمن دوانی
بے روک پانژھ وگنہ روستے سیدی شہ پراوانی
((۱۴))

ब्रह्मण राजि वैश्य या शुद्र चानी पूज़ा करांनी,
द्वोद, ग्यव, माछ, शुराब पूज़ायि किन्य
च़े अर्पन करांनी।
श्रदायि किन्य यि केंछा मंगन छुख
ज़ौरूर तिमन दिवांनी,
बे रोक पांछ्य वेंगनु रोस्तुय सेंदी
सु प्रावांनी॥

शब्दानांजननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे,
त्वत: केशववासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति सफुटम्।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेप्यमी,
सा त्वं काचिदचिन्त्य रूपमहिमा शक्ति: परा-
गीयसे ॥२५॥

ہی ماتا ترٛبوَنس منٛز شبد روٗپہٕ ژٕ آسانی
زگتس منٛز ناد چوٗنے سرسوتی چھی وَنانی
ژینے نشہ کیشو ئیندرا، دیوتا پرکٹ بنانی
کلپہ انتس برہمادک ژینے نشہ لے گژھانی
کوٚستانٛی نہ سورنی مہماسو ساتس تتھ شکتی چھی وَنانی
॥१५॥

ही माता त्रिबवनस मंज़ शबद रूप च़ आसांनी,
ज़गतस मंज़ नाद चोनुय सरस्वती छी वनांनी।
चेंय निशि केशव, यन्द्राज़, दीवता प्रकट बनांनी,
कल्पु अन्तस ब्रह्मादिक चेंय निशि लय गछांनी।
कोसताान्य न सोरनी महिमा सोंसतिस थज़
शक्ती छी वनांनी॥15॥

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्मवर्णास्त्रयः।
यत्किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं,
तत्सर्वं त्रिपुरीति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः॥
॥१६॥

دیوَن مَنٛز ترٛٚنوٕے دیو چھےٚ، اَگنَن مَنٛز ترٛٚ اَگن چھےٚ
شَکھتی مَنٛز ترٛٚ شَکھتی چھےٚ، سوَرَن مَنٛز ترٛٚنوٕے سوَر چھےٚ
وَرنَن مَنٛز ترٛٚ وَرن چھےٚ، گنگا، جمنا، سرسوَتی چھےٚ
بُو، بُوَہ، سوَہ گایتری چھےٚ، سَت تہٕ آنند چھےٚ
یہ کینٛژھا نیم ترٛٚ گون سوَروپ، سوَرے پتہٕ پتہٕ
پکان چھےٚ۔ ॥۱۶॥

दीवन मंज़ त्रनुवय दीव चुय, अंगुनन मंज़ त्रुअंगुन चुय,
शक्ती मंज़ त्रु शक्ती चुय, स्वरण मंज़ त्रनुवय स्वर चुय।
वर्णन मंज़ त्रु वर्ण चुय, गंगा, जमना, सरस्वती चुयँ,
भू, भुवः, स्वाह, गायत्री चुय, सत च्यथ आनन्द चुय।
यि केंछा नियम त्रि गौण स्वरूप, सोरुय पतँ,
पतु पकान चुय ॥१६॥



लक्ष्मीं राज कुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करीम ध्वनि,
क्रव्यादद्विप सर्प भाज़ि शवरीं कान्तार दुर्गे गिरौ।
भूत, प्रेत, पिशाच, जम्बुक भये स्मृत्वा महाभैरवीं,
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोय
प्लवे ॥१७॥

راژ گرن منز تُھی، چھے ژے منزرن لومی
وُلٹہ وتہ کلیان روپی خوفناک جانورن منز شکاری ژے
کوہن بیٹھ چھکھ ژہ دُرگا، پیشاچن منز بیروی
یم وُلٹہ جایہ دیان چون سورن، تمن ژہ آپدا دور
کرانی۔
((۱۷))

राज़ु ग्रज़न मञ्ज़ चु लछ्य मी, जयचे मंज़ रणभूमि
वुल्ट वति कल्यान रूपी खोफनाक जानवरन
मंज़ शिकारि चुय।
कोहुन प्यठ छख चु दुर्गा, पिशाचन निशि
भैरवी।
यिम वुल्टु जायन चान चोन स्वरन, तिमन चु
आपदा दूर कर।

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी,
मातङ्गी विजयाजया भगवती देवि शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शङ्कर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता कुमारी त्यसि।
((१८))

مایا ژٕے ، کُنڈلنی ژٕے ، کِریا مدُمتی ژٕے
کآلی ژٕے ، کلا ژٕے ، مالنی ماتنگی ژٕے
وِجیا ژٕے ، جیا ژٕے ، یَچھتیار واجنی ژٕے
زیتھ سوروٗپ ژٕے ، سامرتھ ژٕے ، شامبوی شکتی ژٕے
شنکر سُنز ٹاٹھ چکھ ژٕے ، سرسوتی بیروی ژٕے
ہرینگ شکلہ پرٕ ترپرا ماتا یم روٗپ ژٕے
((١٨))

माया च़ुय, कुण्डलिणी च़ुय, क्रिया मदुमती च़ुय,
कोली च़ुय, कला च़ुय, मालिनी मातङ्गी च़ुय।
विजया च़ुय, जया च़ुय, यछतियार वाजन्य च़ुय,
ज़्यथ स्वरूप च़ुय, सामरथ च़ुय, शाम्भवी शक्ती च़ुय॥
शंङ्कर सुन्ज़ टाठ ख्वख च़ुय, सरस्वती भैरवी च़ुय।
ह्रीन् शुकलि परापर त्रिपुरा माता यिम रू
((१८))

आर्द्रैः पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रि क्रमाद्यक्षरैः ,
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च
तैस्तैस्स्वरैः ।

नामानि त्रिपुरे ! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः॥
((१६))

'अ' پیٹھ سارنے اچھرن دوِیہ ترٕیہ کرٕتھ ملٕنآوِتھ
'क' پیٹھ 'क्ष' تانٛی شبدٕ سوٗس رلآوِتھ ناوٕ چانی بناوِتھ
ہی ترپراے وُہ(۲۰) ساس ناو چانی رہسیہ روٗپ بنانی
ہی بیرو پتنی تمن بہ رہسیہ ناون پرنام کرانی
((१७))

'अ' प्यठ सारिनुय अछरन दोयि त्रेयि क्रमसु मिलुनाविथ
'क' प्यठ 'क्ष' तान्य शब्द रलाविथ नाव
चोन्य बनाविथ।
ही त्रिपराय वुह(२०) सास नाव चोन्य रहस्य
रूप बनानी ;
ही भैरव पत्नी तिमन रहस्य नावन ब
प्रणाम करानी ॥
((१७))

बोद्धव्या निपुणं बुधैःस्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्गतं,
भारव्या त्रिपुरेत्यनन्य मनसी यत्राद्यवृत्ते स्फुटम्।
एक द्वि त्रिपदक्रमेण कथितं स्त्वत्पाद संख्याक्षरै-
मन्त्रोद्धार विधिर्विशेष सहितः सत्संप्रदा -
यान्वित:॥२०॥

ژانُنہٕ چھِ گاٹلین یی تۄہ ژےٚ کُن مَن لگاوِتھ ٭
چانِین پادَن ہِندِ شُمار کیٚتھۄ اَچھرو کِنی مِلہٕ ناوِتھ
گۄڈنِکہٕ دۄیِمہٕ ترییِمہٕ پد کرمہٕ منترودار بناوِتھ ٭
رٕتہٕ سمپرادایہٕ سۄتۍ یی تۄہ اۄنمہٕ ژےٚ کُن مَن ٹھیکراوِتھ
((۲۰))

ज़ानुनुय छुय गादुल्यन यी तवु चे़ कुन मन लगाविथ,
चान्यन पादन हुंन्दि शुमार क्यो अछरव किन्य
मिलुनाविथ।
गोडुनिकि दोयिमि त्रेयमि पदु क्रमु मन्त्रोदार
बनाविथ;
रुति सम्प्रदायि सोंस यी तवु ओंन मे चे़ कुन मन
ठीकराविथ॥
((२०))

सावद्यं निरवद्यंऽस्तु यदि वा किं वानया चिन्तय
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि
संचिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायमानं हठात्
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मिन्यापि ध्रुव

(२२)

نیٚندیایہ سوٗس یا نیٚندیایہ روٗس فکرا اَتھ ترٲوِتھ
لیٚس یہ ستوترٕ کاتھ منٛتھ پرٲسس بکھتی چانی
پننِس پانس لوچرٕ زانِتھ چھے تہ دڑتا پراوِم
چانہِ بکھتی ہیٚتھ زورٕ بکواسی بنتھ یہ تہ تا بناوِم

((۲۱))

नैन्द्यायि सोंस या नैन्द्यायि रोंस फ़िकिरा अमिच त्रांविथ,
युस यि स्तोत्र कांह मनुष्य परि आस्य भंक्ती चोनी।
पनुनिस पानस लोचर ज़ांनिथ मे ति दृढता प्रांवुम,
चानि भंकी हुन्दि ज़ोरु बकबांस्य बंनिथ यि लोला करांवुम।

(२१)

चर्चास्तवः

—ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै—

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त माल्यं,
मौलौ हठेन निहित महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर शिञ्जित मनोहरमऽम्बिकायाः ॥१॥

یاد چانی سوندر آنند وایک تیندرانن تراوتہ موختہ مال
تیتھ ستی زیر فریتھ مہشاسرس کھیتہ ماترس شرودتہ پاتال
تتھ ربہ یاد چون روزنوتن ہتہ ہردیس
تتہ بہ اسہ گسے بوزنہ شرونی ستارہ فتال
تیہ منوہر پاد نیتوتن ہتہ جیسہ کارکس ہاوتن کال

पाद चोन्य सोन्दर आनन्द दायक येन्द्राज़न त्रांव यथ
मोख्तु माल,
थमि सूत्यज़ीर दिथुथ महिषासुरसुय ह्यणु मात्रस मंज़
वोत सु पाताल।
सुय रोनि पाद चोन रछ़्यतन मे ह्यदयस,
युथ बे अम्बिकाय बोज़ु श्रोनि श्रोनि ताल ॥
सुय मनोहर पाद बंन्यतन में हीतो जौज़ैकारक में
हावतन कमाल॥

सौन्दर्यं विभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
संपत्ति कल्प तरुवस्त्रिपुरे! जयन्ति।
एते कवित्व कुमुद प्रकरावबोध,
पूर्णेन्दु वर [illegible] त्रिजगज्जननि प्रणामाः॥२

ییم پرنام سوندریکہ ولاسکی جاے چھے تھدی شمار کرنہ یوان
ترن لوکن ہندِ راج سمپدایہ ہنزِ کلپہ وُرکھی ہوی ییم پرنام چھ یان

ییم پرنام کوتایہ روپی کمد پوش پھولراونہ باپتھ زندہ مہ چھی بنان
ہی زگتھ زننی واتنے ترےٚ میانی چھی ہوی پرنام چھس بہٚ ترییہ
کنن کران (۲)

यिम प्रणाम सौन्दर्यिकि विलासक्य जाय बनिथ
थद्य शुमार करन यिव
त्रन बवनन हुन्दि राज संपदायि लुन्ध्य कल्पवृक्ष
हिव्य यिम प्रणाम छीव
यिम प्रणाम कवितायि रूपी कुमदु पोश फोलरावनु
बापथ चंन्द्रमु छी बनान
हीजगथजननी वातनय च्यांन्य यिथ्य हिव्य प्रणा
छुस बु चेय कुन करान

देवि! स्तुतिव्यतिकरे कृत बुद्धयस्ते,
वाचस्पति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति।
तस्मान्निसर्ग जडिमा कतमोऽहमत्र,
स्तोत्रम तव त्रिपुरतापन पत्नि! कर्तुम ॥३॥

چانٛۍ توتا کرنس پیٹھ چھُ نہٕ سامرتھ
بٕرہسپت تہٕ دیوتا جڑ بناوٲنی !
ہی ترن تاپن گالونۍ چھُس ہوٗرکھ بہٕ آسِتھ
(۳) کتہٕ سامرتھ بہٕ کرٕ توتا چانٛۍ -

चोन्य तोता करनस प्यठ छुनु सामर्थ,
ब्रहस्पत तु दीवता जड बनानी !
ही त्रन तापन गालुवुन्य छुस मूर्ख
बु आसिथ,
कति सामर्थ बु कर, तोता चानी ॥०॥
—(3)

०

मातः ! तथापि भवतीं भवती व्रताप,
विच्छित्तयेस्तुति महार्णवकर्णधारः ।
स्तोतुं भवानि ! समवच्चरणारविन्द,
भक्ति ग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥४॥

ہی ماتا زانِتھ یہ سنسار کٹھِن دوکھ
ژٹنہ باپتھ کرم توتا یہ چانی
یہے توتا سنسار ساگرس
بنہ ناوسیانی بیہ ہانز سیانی
چانہ پادِ کملکے لولچہ آوِشہ
بکواسی ہیُو چھُسے توتا کرانی ((۴))

ही माता ज़ॉनिथ यि सम्सार कठिन्य दोख,
ऱटुनु बापथ करुम तोताथि च्चानी ।
यिहय तोता सम्सार सागरस,
बनि नाव स्यान्य वैयि हान्ज़ स्यानी ॥
चानि पादि कमल के लोलुचि आविशि,
बकचोस्य हुव हुसय तोता करानी ॥।
((4))

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति,
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि।
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि,
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः॥ (५)

برٛہما رُوٗپہٕ زٕگتس کران پاد ژھے
وِشنو رُوٗپہٕ پالن کران ژھے
رودٕر رُوٗپہٕ سمہار آخرس کران ژھے
مُہ دِوان تہٕ بیٛیہ ژھنہٕ تہٕ گالان ژھے
لیلایہ یِمہٕ چانہٕ چھس وُچھان رنٛگہٕ رنٛگہٕ
جے جے کار آسی نے چانِن لیلایَن (۵)

ब्रह्मा रूपु ज़गतस करान पादु छुय,
वैष्णू रूपु पालन करान छुय।
रौदर रूपु समुहार आंखरस करान छुय,
मुह दिवान तु बैयि तथ ति गालान छुय॥
लीलायि यिमु चानि वुछ्युस छुवान रंगु रंगु,
जय जय कार आस्य नय चान्यन लीलायिनुय॥

o

यस्मिन्मनागऽपि नवाम्बुज पत्र गौरि,
गौरि! प्रसाद मधुरां दृशमादधासि।
तस्मिन्निरन्तरमऽनङ्ग शरव कीर्णां,
सीमन्तिनी नयन संततयः पतन्ति ॥६॥

ہی گوری پمپوشہ رنگہ صفا یس
امرتھ نظر چھکھ ژتراوانی
تس پیٹھ نیتہ نیمہ ساریے یوگنیہ
کامدیوس زن چھ وش گژھانی
((५))

ही गौरी पम्पोशि रंगु सफ़ा यस,
अमरथ्‌तु नज़र छख त्रावांनी।
तस प्यठ नैति नेमु सारेय यूगिनीयि,
कामुदीवस ज़न छि वश गछांनी॥

० ((६))

पृथ्वी भुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य,
विद्याधर प्रणति चुम्बित पाद पीठः।
यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणयः स एष,
त्वत्पाद पंकजरजः कणजः प्रसादः॥
((७))

اُدیَن راجَس کھڑاوِ ہیٹھ کرَان پیٹھی ❖
وِدیادرَ تہٕ دیوتَس چھی آدین ❖
چکرورتی عہدہ اوس تمی پرووُمت
چانہٕ پادٕ گردِ ہشد انوگریہہ ستی
((۷))

उदयन राजस ख्रावि प्यठ क्रान सीठ्य,
विद्यादर तु दीव तस छी ओदीन।
चक्रवर्ति ओंहदु ओस तम्य प्रोवमुत,
चानि पादु गरदि हुन्दि अनुग्रेह सुत्य॥
((७))

०

त्वत्पाद पङ्कजरजः प्रणिपात पूतैः,
पुण्यैरनल्पमलिभिः कृतिभिः कवीन्द्रैः।
क्षीर क्षपाकरदुकूल हिमावदाता,
कैरपिवापि भुवन त्रितयेऽपि कीर्तिः॥
((८))

ہی دلوی چانین پھپوشہ پادن
ہنز گردِ پیٹھ کوّر یمو پرنام
تم بنیہ وو تم تیز لوّز سوّس
دانا وو تم کوی پرٛوو تمو نام
دود ژندرس رشیم وستر بیِہ شینہ پانٛدٕ
صفا بنٛتھ ترٛن بوَنن منٛز بنیہ نیکنام ((۸))

ही दीवी चान्यन पस्पोशि पादन,
हंज़ि गरदि प्यठ कोर यिमव प्रणाम।
तिम बनेयि वोतम तीज़ु बोज़ सोस,
दाना वोतम कवी प्रोव तिमव नाम॥
दोद चेन्दरसु रीशिम वस्त्र बेयि शीनु पांठ्य,
सफा बनिथ त्रन बवनन मन्ज़ बनेयि नेकनाम॥

०

((८))

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्रपूजा,
मुद्दीपित प्रियतमा मदरक्त गीतिम् ।
नित्यं भवानि! भवतीमुपवीणयन्ति,
विद्याधराः कनकशैल गुहागृहेषु ॥
(६)

کلپہ ورکچہ پوشو سیتی چانی پوزا
دلپہ ستی چہ گیوان چانی گیت
نیتھہ ستہ کے گپھا رونی گرن منز
(۶) وایان ودیادر سوز تہ ساز کیتی

कल्पवृक्ष पोशव सूत्य चान्य पूज़ा,
लोलु सूत्य कि ग्यवान चान्य गोत ।
न्यथ सम्नीरके गुफा रूपी गरन मंज़,
वायान विद्यादर सोज़ तु साज़ कूत्य
(६)

०

लक्ष्मी वशी करण कर्मणि कामिनीनां,
माऽकर्षण व्यति करेषु च सिद्धमन्त्रः।
नीरन्ध्र मोह तिमिरच्छिदुर प्रदीपो,
देवि! त्वद्ऽङ्घ्रि जनितो जयति
प्रसादः॥
(२०)

چانہٕ ژرنہٕ کملہٕ سیوایہٕ ہِنٛد پرٛساد
وَش کران لچھمی تہٕ بینٛیہٕ سیٚدِیَن
شَکھتی سُہ پراوان مُہ روٗپی گیٖنہٕ
اَنہٕ گٹہٕ گالان ژانٛگہٕ سیتی ژٕن ((۱۰))

चानि चरण कमलु सीवायि हुन्द प्रसाद,
वश करान लक्ष्मी तु बैयि सैंदियन।
शक्ती सु प्रावान मुह्य रूपी गैनि,
अनिगटु गालान चाँगि सूत्य ज़न॥



((१०))

देवि! त्वदंघ्रि नखरत्न भुवो मयूखाः
प्रत्यग्र मौक्तिक रुचोमुद मुद्वहन्ति।
सेवानति व्यतिकरे सुर सुन्दरीणां,
सीमन्त सीम्नि कुसमस्तव कायितं यैः॥
(२२)

مٲج بوٚآنی چانین ژرٕنٕن ہٕنٛدی تِمہ ژٕتٕن
موختہ دِرٕفتی داران زٕن کرٕن
یوٚگنیہ ییٚلہ پٔرٕن پیوان ژٕرٕ ژرٕنٕن پیٹھ
تِمہ چمکہ پرٕزلان مٔس تہٕ سِمہ تِمٕن

(॥)

मांज खवांन्य खान्यन ज़रनन हुन्द्य
नमु रत्न,
मोख्तु दिप्सी दारान ज़न किरण।
यूगिनियि यैलि परन प्यंवान च़ैं
ज़रनन प्यठ,
नमु चमकि प्रज़लान मस तु सुमु तिमव॥
(११)

०

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिन दीधिति दीप्ति
दीप्तं,
मध्ये ललाटमऽमरायुधरश्मि चित्रम्।
हृच्चक्र चुम्बि हुतभुक् कणिकानु-
रूपम्
ज्योतिर्यदेत दिदमम्ब! तव स्वरूपम्॥
॥ ४२ ॥

ماتا ژےٚ مستک ژندٕر زَن پرزلوٗن ❖
رام رام بیدرنۍ دنۍ چمکونۍ ❖
ہردیَس منز اگنی جیوتی سوٗروٗپ زَن
ماج چون سوٗروٗپ چھُے پرکاش آسوٗن
((۱۲))

माता चै मस्तक चंन्दुर ज़न प्रज़लवुन,
राम राम बेदरन्य दन्य चमकवन्य।
हृदयस मंज़ अग्नी ज्योती सोरूप ज़न,
मांज चोन सोरूप छुय प्रकाश आसुन॥

○

सिन्दूर पांसु पटलच्छुरितामिव द्यां,
त्वत्तेजसा जतुरस स्नपितामिवोर्वीम्।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे विहाय,
व्रीडां मृडानि सुदृशस्तमनु द्रवन्ति॥
॥२३॥

سینٛدرِ گَردِ سۄستےٚ جوٗرمُت آکاش
لاچھِ رنٛگہٕ پرِتھوی شران کٔرِتھ زٔن
یُس وُچھِ کھنہٕ ماترَس لاج ترٲوِتھ
تس سیٛدی ماج بوٲنی پتہٕ دوران ((۱۳))

सैंन्दरि गर्दि सौस्तुय जौरमुत आकाश,
लाछ्रि रंग पृथ्वी श्रान कॅरिथ ज़न।
युस वुछि क्षण मात्रस लाज त्रॉविथ,
तस सैंदी मांज बवान्य पत दोरान॥
((13))

भालः! मुहूर्तमऽपि यः स्मरति स्वरूपं,
ताक्षारस प्रसरतन्तु निभं भवत्याः।
ध्यायन्त्यनन्य मनसस्तमनङ्गतप्ताः,
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्वगुणं तरुण्यः॥
((२४))

ہی ماتا یُس مہورتس دیشان کری
چون سۆرۆپ لاچھہ رنگہ تارِ سمان
سوندر جوان اَژھ رژھ نہ ڈلونہ منُسس
کامنایہ تاوِ منز تس چھہ سمران
((۱۴))

ही माता युस महूरतस ध्यान करी,
चोन सोरूप लाछि रंगु तारि समान।
सोन्दर जवान अछु रछु न डलवुनि मनुसस
कामनायि ताविमञ्जु तस छि सुमरान॥

o ((14))

आधार मारुत निरोध वशेन येषां,
सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि! वपुस्त्वदीयं,
ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्या॥
॥१५॥

مولادارُک پرٲن بَنٛد کرِتھ یمَن
سیٚنٛدرِ ریٚتی روٗنگمُت پمپوش زَن
ہردیس منٛز اتھ پمپوشس پیٹھ
چون سوروٗپ باسان راتھ کیٛو دَن
تِمنے پورشن ہنٛد چھِ دیان داران
((١٥)) سیٚدی ساد دیوتاہ تہٕ بیٚیہ سَتھ زَن

मूलादारुक प्राण बन्द कॅरिथ यिमन,
सैन्दरि सूत्य रौंगमुत पम्पोश ज़न।
हृदयस मंज़ अथ पम्पोशस प्यठ,
चोन स्वरूप बासान राथ क्यो द्यन॥
तिमनुय पोरशन हुन्द छि ध्यान दारान,
सैद्य साद, दीवताह तु बेयि सथ ज़न॥
«15»

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवर्ति,
रूपं त्वांऽम्ब ! नवयावक पङ्कपिङ्गम ।
तेषां सदैव कुसुमायुध बाणभिन्न -
वक्षः स्थला मृगदृशो वशगा भवन्ति॥
((२६))

سِری یہٕ منڈلکہ پرٛکاشہ وۄزلہٕ رنٛگہٕ سوٚس ییٚہ
لاچھ رنٛگہٕ سوٚس یم چون دیشان داران ؛
کامدیو سٕندِ تیرٕ چھِ چھیہِ وچھ سوٚستھ-
اَنزِ رَژ تِمن ماتحت چھِ روزان
((١٤))

सिर्यिय मण्डलुकि प्रकाशि वोज़लि रंग सोंस वैयि,
लाछि रंग सोंस यिम चोन ध्यान दारान ।
कामदीव सुन्दि तीरु वचमाचि वछि सोंस,
अछु रछु तिमन मातहत छि रोज़ान ॥
((16))

रूपं तव स्फुरित चन्द्र मरीचि गौर,
मऽालोकते मनसि वागऽधिदैवतं यः।
निस्सीम् सूक्ति रचनामृत निर्भरस्य,
तस्य प्रसाद् मधुराः प्रसरन्ति वाचः॥
((१८))

ییم پورِش مَنَس منز ژَندرَم ہیو چمکوُن
سَرسوٗتی رۄٗپہ چون دیان دارُن
حَد رۄٗس وانی مۄدُر اَمرِتھ بَرِتھ
نیرِ تِمَن نِرمَل پرواہ ہیوٗ زَن
((۱۸))

यिम पोरुश मनस मंज़ चन्द्रम, ह्युव चमकुन,
सरस्वी रूप, चोन ध्यान दारन ।
हद रौस वांनी मोदुर अमर्यथ बॅर्यथुय,
नेरि तिमन न्यरमल प्रवाह ह्युव ज़न॥
((17))

शर्वाणि ! सर्वजन वन्दित पाद पद्मे,
पद्मच्छद च्छवि विडम्बित नेत्र लक्ष्मि ।
निष्पाप मूर्ति जन मानस राज हंसि,
हंसि त्वमाऽपदमऽनेक विधां जनस्य ॥१८॥

ہی پاپ گالہ وُنی ژےٚ پادِ کملن
ساری زیو چھی پرنام کرانی
پمپوشہ بَرگہ کے دِپتی ہِندی پاٹھی
چانی نیتر کمل چھی شوبانی
شُدّ مَنشَس چھکھ ژہ تہ ساگرس منز
راز ہنسس ہش زن ژہ روزانی
ژےٚ چھکھ سادکن نانا پرکارکی
دوکھ تہ داؤی آپدا دور کرانی ॥(۱۸)॥

ही पाप गालवुन्य च़ेय पादि कमलन,
सोरी ज़ीव छी प्रणाम करानी ।
पम्पोशि बेरगुके दिप्ती हुन्द्य पाठ्य,
चांन्य नेत्र कमल छि शबांनी ॥

श्रोद्र ममश्रास क्रुख व्यथ सागुरस मज़,
राज़ु हन्स हिश ज़न च्रु रोज़ानी।
च्युय हुख साद्कस नाना प्रकारक्य,
दो[illegible] न दोह आपदा दूर करानी॥ ((१८))

—o—

इच्छानुरूपमऽनुरूपे गुण-प्रकर्षं,
संकर्षिणि! त्वमनुभृत्य यदा विमर्षि।
जायेत स त्रिभुवनैकगुरुस्तदानीं,
देवः शिवोपि भुवनत्रय सूत्रधारः ॥१९॥

ہی سنکرشنی پننہ تے یژھایے
ییلہ چھکھ تژگون سورُوپ پانہ داران
تیلہ ہی دیوی تژن لوُنن ہشہ
کیول گورو شیوناتھ چھُ وو پران
اُدیسے شوبو تژن لوُنن ہشہ
نوسُود پاٹھی سو تژدار بنان

((۱۹)) ही संकरषणी पनुने यछाये,
यैलि छुख च्रगोण स्वरूप पान दारान।

तैलि ही दीवी त्रन भवनन हुन्द,
केवल गौरु शेवनाथ कु वोपदान।
अद् सुय शौम्बू त्रब ववनन हुन्द,
नौमूद पोठ्य सूत्रदार बनान ॥१९॥

—o—

योयं चकास्ति गमनार्णव रत्नमिन्दु–
र्योयं सुराऽसुर गुरुः पुरुषः पुराणः।
यद्वामम ऽर्थमिदमऽन्धक सूदनस्य,
देवि! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ॥२०॥

آکاشہ سوٗدرس ہنٛز ژتٕن لوٗسہٕ ۷
شوٗبا ژٕندرمس چھےٚ اَنآنی ۷
دلیوٗن تہٕ اَسرن لیٚس گوٗرٕو چھُ آسہٕ وُنےٚ
ہگواٗنس شکتی لیٚس دِوآنی
نیوٗسہٕ ہاد لیوٗ ستھٕز چھ اَردانگی ہوٕے
ژھٕکھ ژٕے یہ چھُ مآج سبدٕ بانی
((۲۰))

आकाशु सोंदरस मंज़ रत्नन योस,
शूना चन्दरमस छुय अनांनी ।
दीवन तु असरन युस गुरु छु आसवुनुय,
भगवानस शक्ती योस दिवांनी ;
योसु महादीव सुन्ज़ छि अर्दांङ्गनी सोय,
कुस छुय यि छु मांज स्यद बनांनी ॥
((२०))

—o—

ध्याताऽसि हैमवति ! येन हिमांशुरश्मि-
मालाऽमलद्युतिरऽकल्मष मानसेन ;
तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमऽनल्प कल्पः;
मऽल्पैर्दिनैः सृजसि सुन्दरि ! वाग्विलासम ॥
((२१))

ییٚس سوٚرِ چھوٚن دِیان نِرمٕل کرٕ تہٕ سوٚس
ژٕنٛدرمس سمان اَندرٕ شوٗد منہٕ کینہٕ
ہی سُندری تس تٕرٕ چھیٚٹ بیٚٹ کران یاد
سرسوٚتی ہُند وِلاس اَتہٕ گژھان کہو

((۲۱))

युस सोरि चोन ध्यान न्यरमल किरनव सोस,
चंन्दरमस समान अंन्दर् शोद्धु मनु किन्य।
ही सौन्दरी तस छु, जड़ पट करान पांदु,
सरस्वती हुन्द व्यकास अनुग्रैह किन्य॥
((21))

त्वां व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति,
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति।
त्वां मालिनीति ललितेत्यऽपराजितेति,
देवि! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति॥
((२२))

ساری سے وآنتھ ژِ کامنا دایک
لچھمی ، کلا ، بیئہ مالا رُوپ
دشمنس پیٹھ زِیہ سوس ژے للیتا
چھی وَنان ژیے زیا ژیے ووما رُوپ (٢٢)

सांयसुय वांतिथ चु कामना दायक,
लछमी, कला, बैयि माला रूप।
दुश्मनस प्यठ ज़यि सौस चुय ललिता,
छी वनान चैय ज़या चैय वोमा रूप॥
((22))

उद्दाम काम परमार्थ सरोज षण्ड-
चण्ड द्युति द्युतिमुपासित षट्प्रकाराम्।
मोह द्विपेन्द्र कदनोद्यत बोधसिंह-,
लीला गुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥
«२३»

یوسہ کامراجہ بیژاکھر پھیوپش ڈلہ کے
پھولنہ پانچھ ستری بیر رؤپہ روزآنی
موٗلادار پیٹھ شٹکون منزٕ
ووپاسی رؤپہ یوسہ تتہ آسانی
یوسہ ہُہ شُتی تیس گالہ پانچھ
گیانہ رؤپہ ستہ گو چھہ روزآنی
تمی سیے چھگُوتی ماتا ترو پرایہ کُن
گُلی گنہ متھ تس چھُس پرنام کرانی
«۲۳»

योस् कामराजि बीज़ाक्षर परूपोश डलुके,
फोलनु बायव दिवँय रूपु रोज़ानी।

मूलाधार प्यठ षठ च़्रंकरस मंज़,
चौंपासी रूपु युस रति आसांनी ।
यीसु मुहु हंस्यतिस गालुनु बापथ,
ज्ञानु रूपु सुहु गोफि छि रोज़ांनी ॥
तंम्यसुय भगवती माता अपराधि कुन,
गुल्य गंन्डिथ तस कुस प्रणाम करांनी ॥
((२३))



गणेश वटुकस्तुतारति सहाय कामान्विता,
स्मरारिवर विष्टरा कुसुम बाण बाणैर्युता ।
अनङ्ग कुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः,
कदम्बवन मध्यगा त्रिपुर सुन्दरी पातुनः ॥
((२४))

گنیش تہ بیرون چھےٚ توتا ژٕنے گرٕ پٕھر
ژٕتی سان کامدیو ژٕنےٚ سیوا کرون
شوُناھتہ پانہٕ چھےٚ آسن چوٚ تےٚ
کامدیو لوشہٕ بانن سٕہ داروُن
آننگہٕ کُسمو بیٚیہٕ تریٚیو سیدیو ژٕ و جنٕہٕ
کدمبہ بنس منٛز تۄ روزان تی

شُے رٔنب یِوٗن ماج ہی ترٛپُر سۄندری
کلیان مے کٔرِتھ تم تہٕ راچھ بیانی

((۲۴))

गणेश तु वीरवन छुय तोता चैंदर मुख़,
रती साल कामदीव चे सीबा करवुन ।
शिवनाथ पानु छुय आसन चौनुय,
कामदीव पोशि बानन सु दारवुन ॥
अनङ्ग कोससव वैंयि त्रेयव सैंदियव चु
वंजिमच़,
कदम्ब, जंगलस मंज़ चु रोज़ानी ॥
सुखरूप चोन मांज ही त्रैपुर सौन्दरी,
कल्याण में कॅथ्यतलम तु राछ्यानी ॥

((24))



त्वामैन्दवीमिव कला मनु भाल देश,
मुद्भासिताम्बर तलामऽवलोकयन्तः ।
सद्यो भवानि ! सुधियः कवयो भवन्ति,
त्वामभावनहितधियां कुल कामधेनुः ॥

((२५))

ییم مستکس منز زےٚ ژٔندرمہٕ کلا ہِش
وُچھ چمکاوی مِتھ آکاشہٕ سوٚس
ہی دلوٗی جلدے چھی تم بنان دانا
بیٚیہٕ بڈِ کوٗیتایہٕ سوٚسی
چھکھ تمن دِوان ژےٚ سارنے مطلبن
چانہٕ باوٗنایہٕ کنی تم نرمل لوٗز سوٚس

((۲۵))

यिम मस्तकस मज़ं च़्‌ै च़न्दरमु कला हिश,
वुछ चमकांव्य मुत्य आकाशि सौंस ।
ही दीवी जल्दय छी तिम बनान दाना,
बैंयि बडि कविताथि सौस्य ।
छुख तिमन दिवान च़ुय सारिनुय
मतलबन,
चानि बावुनायि किन्य तिम
न्यर्मल ह्रौज़ सौंस

उत्तमहेमरुचिरे ! त्रिपुरे ! पुनीहि ,
चेतश्चिरन्तनमऽघौघ वनं लुनीहि ।
कारागृहे निगड बन्धन पीडितस्य,
त्वत्संस्मृतौ झटिति मे निगडास्त्रुटयन्ति॥
॥२६॥

تووٚمُت سوٚن زَن ژٕ چمکان ترٛوٚپرٲے
شوٗدکر مَن مےٚ پاپہٕ کھلہٕ میانٛۍ لوٗن
سمسارٕ روٗپی جیلس مَنٛز چھُس بہٕ
کامنایہٕ بیڑٕن ہٕنٛد چھُم مےٚ بوٗر
چانہٕ سُمرنہٕ کِنۍ جلد جلد ژٕھٹن مےٚ بیڑ
ییٚلہٕ آسہٕ ﻋﺎرتس مےٚ انُگرٛہہ چوٗن
((۲۶))

तोवमुत सोन ज़न च़ चमकान त्रोपरांय,
शोद कर मन में पापु खिल म्यांन्य लोन।
सम्सार् रूपी जेलस मंज़ छुस बं ,
कामनायि बेड्यन हुन्द छुम में बोर ।
चानि सुमरनि किन्य जलुद जलुद छ़्यनन मे ,
येलि आसि आरतिस में अनुग्रह चोन ॥२६॥

रुद्राणि ! विद्रुम मयीं प्रतिमामिव त्वां,
ये चिन्तयन्त्यऽरुणकान्तिमऽनन्य रूपाम।
तानेत्य पक्ष्मलदृशः प्रसभंभजन्ते,
कण्ठाऽवसक्त मृदुबाहु लतास्तरुण्यः॥
((२७))

ہی رۄدرانی یُس چانِس سۄرۄپس وُچھ
رۄدر شکتہ سِرِیہ سُندی پاٹھی چمکان
اپُورو رۄپس یتھ سے دیان کرِ
سوندر نظرو سوس اچھ رچھ جوان
زور سیتی تمہ گردنہ پیٹھ اتھ ترٲوی ترٲوی
اندۍ اندۍ رٕز یتھ تس سیوا کران
((٢٧))

ही रौदरानी युस चांनिस सौरूपस वुछि,
रौदर शकत्ति सिर्ययि सुन्द्य पाठ्य चमकान।
अपूरव रूपस यिथ्य सुय ध्यान करि;
सौन्दर नज़रव सौस अछु रछु जवान।
ज़ोर सूत्य तमि गर्दनि प्यठ अथ त्रांव्यत्रांव्य,
अंन्द्य अंन्द्य रूज़िथ तस सीवा करान॥
((27))

त्वद्रूपमुल्लसित दाडिम पुष्परक्त,
मुद्भावयेन्मदन दैवतक्षरं यः।
तं रूपहीनमऽपि मन्मथ निर्विशेष
माऽलोकयन्त्युरु नितम्ब भरास्तरुण्यः॥
॥२८॥

یُس چون دِیان کرِ دآن پوشہ رنگہٕ سۆس
اوِناشہ کامراجہ بیز اَکھشرس
یۆدوے رۆپہ کِنی آسہ سُے بدشکل
اَچھ رَچھ وُچھن زَن کامدیوٚ تَس
٢٨ ॥

युस चोन ध्यान करि दोन पोशि रंग सोस,
अविनाशि कामराजि बीज़ अक्षरस।
योदवय रूप किन्य आसि सुय
बदशकल,
अछ रछ वुछन ज़न कामदीव तस॥
॥28॥

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धोऽदृशो-
स्त्वद्गुण
ग्रामाऽऽकर्णनरागिताश्रवणयो स्त्वत्संस्मृति
श्चेतसि।
त्वत्पादार्चन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं
वाचि मे,
कुत्राऽपि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि
मा शाम्यतु॥
(२६)

ہی دلوی چانہ درشنک ابلاش
ہر دم تیٚژ نے مشنز میٚے روٗزی تن
چانی گون لوٗزنک تمناہ میٚے آسی تن
ہر روٗزی تن میٚ ساتھ کنن
نامہ سُمرن زہتیں مشنز میٚے گرگہ
چانی یادِ لوٗز امہ
چون کیرتن کروٗنی روزدن میٚے وانی
دوپاسا چانی کُم مسہ میٚے گژھی تن (۲۶)

हीदीवी चानि दर्शनुक अबिलाश,
हरदम नैत्रनुय संज़ मे रछलन।
चोन्य गोुण बोज़ुनुक तमना मे आस्यतन,
हर दम रुज़्यतन ध्यान्यन कनन॥
चोन नामु सुमरन द्यतस मंज़ गरि गरि,
चान्य पादि पूज़ा म्यान्यन अथन॥
चोन कीर्तन करवुन्य रुज़्यतन मे वानी,
उपासना चान्य कम मतु मे गंछ्यतन॥
(29)

—o—

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरिचन्द्र सहस्त्र रश्मि,
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दिताये।
वागीश्वरी! त्रिभुनेश्वरि! विश्वमात-
रऽन्तर्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते॥३०॥

سرسوتی ترلپور ستھندر زگتھ ماتا
بٔژتی شوٗری جاکھ آسونی ژے
برہما پیشدر رودر سریہ ژندرمہ کمار
وشنو گنیش چھے پوزان ژے
اندریتیہ واتھ ژترہ بوٗلس سانٛزی ییے
گگن تھ پیوں پرنام واتی ژے
(۳۰)

सरस्वती त्रुपूर सौन्दरी ज़गथ माता,
बवनेश्वरी कुख आसुवुन्य चुय।
ब्रह्मा रौदुर येन्दुर सिधयि चंन्दरमु कुमार,
वेष्णो गणेश छुय पूज़ान चैय॥
अंन्दर नैबर वांतिथ त्रोववनस सांयसुय,
गुल्य गॉन्डिथ न्योन प्रणाम वांतिनय चैय॥
((३०))

—==o==—

यः स्तोत्रमेतदऽनुवासरमीश्वरा याः,
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा श्रृणोति।
तस्यैप्सितं फलति राजभिरीड्यतेऽसौ,
जायते स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम्॥ ३१॥

یُس یہ چھوٗن ستوتر پَرِ پَرِتھ دوہَہ لولہ سان
یا کَنُو بوزِ اَدِ بَبہٕ تَس کَلیان
چکرورت راجہ تِس کَرِن لوٗرزا
بیماری مطلب تَس چھ نیران
ہون منچ کامنا سِد تَس چھ سیدان
سےچھ لوگنین ہند زیاد لوٗگٹھ بنان
((۳۱))

युस यि चोन स्तोत्र परि प्रथ द्वोह लोलु सान,
या क्षनव बोज़ि अदु बनि तस कल्यान।
चक्रवृत राज़ि तस करन पूज़ा,
सांरी मतलब तस छि नेरान॥
मनुष कामना स्वद तस छि सपदान,
सुय छु यूगिनियन हुन्द ज़्यादु टोठ बनान॥
((२१))



ॐ नमो महामायायै
॥(अथ घटस्तवः)॥ [तीसरा स्तव]

देवि! त्र्यम्बक पत्नि पार्वती सति
त्रैयलोक्य मातः शिवे!
शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे
रुद्राणि कात्यायनि!
भीमे भैरविचण्डि शर्वरि कले! कालक्षये शूलिनि!
त्वत्पाद प्रणतानऽनन्य मनसः पर्याकुलान्पा-
हिनः॥१॥

ہی دِیوی چھکہ ژِ ترمبکہ پتنی
ژئے وَنان ستی ژئے پاروٗتی
ترٚلیوٗکی ہِنز ماتا بھگوتی
ژئے وَر دِوان ژئے چھکہ مرڑانی
ژئے ترٚپور سوندری ژئے روٗدرانی
ژئے بھیانک روٗپ ژئے شروری
ژئے چنڈی ژئے ترشوٗل دارانی
ژئے کٲلہ کالس ناش کرانی
آیے شرن ژِ پادن وسیے کٔژ چھ تھے
دِیا گٔژھنا یہ منزابہ رچھ ژئے

ही दीवी छख चु त्रम्बकु पत्नी,
चैय वनान संती चुय पारवती।
त्रेयलूकी हुन्ज़ माता भगवती,
चुय वर दिवान चुय छख मृडानी॥
चुय त्रुपोर सोन्दरी चुय रोंदरानी,
चुय भयानक रूप चुय शंवरी।
चुय चण्डी चुय त्रुशूल दारानी,
चुय कलि कालस नाश करानी।

आय शरण चै पादन ब्यनुकिन्य चै संम्यथुव,
व्याकोलतायि मन्ज़ [illegible]
उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक मूर्छा इव,
प्राप्त प्रौढमदा इवाऽतिविरह ग्रस्ता इवाऽर्ता इव।
ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्योत्तोपाधि विवृद्ध राग मनसो ध्यायन्ति वामभ्रुवः
॥२॥

مترٲوہ تہ پراہ سوٚس زہر کٔنی مۄرچھتہ لشہٕ سوٚس
وِرہن ژٔری ہتھ چانہٕ آرتُرپہ ستہ سوٚس
ہی ہمالہٕ پُتری یم کرن چون دیان
تِم آسَنہٕ وُنی چھہ سَتھا بٲگیہ وان
اَژھہ رٔژھہ اپکاگرٕ بٔنتھ اوپادِ روٚس
راگہ سوٚس تٔتہ سے دیان چھہ داران۔ «آس شرن»

मचुराह त प्राह सौंस ज़हर किन्य मूर्छित नशि सोंस,
विरहन चंदथमुत्य चानि आरत्तर, सोंस।
ही हिमालु पुत्री यिम करन चोन द्यान,
तिम आसवुन्य छि स्यठा भागवान।
अकुरह एकाग्र बनिथ उपाधि रोंस,
राग सौंस [illegible] हुय म्यान कि दारान॥ (आस [illegible])

देवि त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृत स्तं नम
न्त्याऽजन्म स्फुरदङ्घ्रिपीठ विलुठत्कोटीर
कोटिच्छटाः
यस्त्वामऽर्चयति प्रोच्यते सुरगुणैः यः स्तौति
न स्तूयते,
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्ति विधुरा ध्या
यन्ति सिद्धाङ्गना ॥३

یُس پورُش اَکہ لٹہِ کرِ ژےٚ کُن پرنام
تَسُنز کھراوِ پیٹھ راز مُکٹ ڈُلوان
یُس پورُش لولہٕ کرِ چأنی پوزا
تَس پوٗشِس پوزان دیو کھل
یُس پورُش کرِان آسہِ چأنی توتا
دیوتا تَسُنزے اَستوتی کرِان
یُس پورُش مَنہٕ کنی کرِ چونے دیان
سوٗرگچہ اَپچھرژ تَس چھ پوزان۔ (۳)

युस पोरुश अकि लटि करि चे कुन प्रणाम,
तसुज़ि ख्राव पेठ राज़ मुकट डुलवान।

युस पोरुष लोलु साल करि चांचं ङूङा,
तस पोरुषस गूङन दीवु खिल।
युस पोरुष करान आसि चांनी तोता,
दीवता तसुन्ज़ुय अस्तोती करान।
युस पोरुष मनु किन्य करि चोनुय ध्यान,
शेरगुषि अछु रछु तस छि सुमरान ॥३॥
(आय शरण॰)

—०—

ध्यायन्ति ये क्षणमऽपि त्रिपुरे! हृदि त्वां,
लावण्य यौवन धनैरऽपि विप्रयुक्ताः।
ते विस्फुरन्ति ललितायत लोचनानां.
चित्तैकभित्ति लिखित प्रतिमाः पुमांसः॥४॥

ہی ترپورسندری لُس کرِ دیان چون
شنز منش اَکی سے کھیتہٕ ماترس
یُدوے شہ آسی سو ندرتایہ رٕوس
بیٔیہ جوانی رٕوس بیٔیہ نہر دٕن ۴
اشتہ لتسندی لتس متھے لبہ سپھ
شکلہ کھنن تشُدے دیان سورن
«(۴)» (اے شرن)

ही त्रेपोर् सोन्दरी युस करि ध्यान चोन,
मन्ज़ मनस अंकिसुय क्षणुमात्रस ।
यौदवय सु आसी सोन्दरतायि रोस,
बैयि जवानी रोस बैयि न्यरधन ।
अछु सेंदी तस मनुचे लबि प्यठ,
शाकल् खनन सुय ध्यान सोरन ॥4॥

((आस शरण))

—o—

एतं किं नु दृशा पिवाम्युत विशाक्ष्यस्याङ्ग-
मङ्गैर्निजैः ;
किं वाऽमुं निभृतास्यऽनेन सहसा किं
वैकतामाऽश्रये !
तस्येत्थं विवशो विकल्पघटना कूतेन योषिज्जन;
किं तद्यन्न करोति देवि! हृदये यस्य त्वमाऽऽवर्तसे।
((5))

پتھس لور شتس کرہ آ پژولیش لٹری ستی
ازہ آمی ستہ دین وستہ خانے
کیا شنا نبہ شکلہ گژھ نا امس ستی
کنہ کینی پاتس ستی زٹہ ہتن
ازچھ رژھ سو نذر گرہ گرتس کن

بے روک پانٹھ آدین سپدن
سنسارس منز کیاہ چھے دوربلس
ہردیس منز یس ژپانہ پھیران۔

(५) यिथिस पोरुषस करहां प्रवेश नज़री सूत्य,
अच्वहां अंस्यसुन्धन वुस्तुखानन ।
क्था सना न्यन्गुल्लिथ गछुना अंमिस सूत्य,
कुनि किन्य पानस सूत्य रछहन ॥
अछ रछ सोन्दर गरि गरि तस कुन,
बे रोक पांठ्य आंदीन सपदन ॥
संसारस मंज़ कथा कु दीलब तस,
हृदयस मंज़ यस छु पानु फेरन ॥(5)
(आयि शरण)

—•—

विश्वव्यापिनि! युद्ववीश्वर इति स्थाणावऽनन्या-ऽऽश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि! त्वय्येव तथ्य-स्थितिः।
इत्थं सत्यपि शाश्वन्ति यदिमा क्षुद्रा रुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानऽपि न क्षिणोषि च रुषा तद्देवि चित्रं महत् ॥६॥

ہی زگتھ وِیاپنی ییتھ شِونا تھس،
الپشر نا وِ زگتس منز وَنان

تَتھ پاَٹھؠ ماَج بوٲنؠ ژےٚ زَگتس مَنٛز
شکتی ہُند ناو چھےٚ ژےٚ شوبان
یوٗدوے اِیشر ٹکھتن سمسارس مَنٛز
ماَج کُنؠ کُنؠ دوکھ چھُ دیوان
آشژر چھُ ماَج چوٗن کرٛوُدس پیٹھ تہٕ چھکھنہٕ
پننؠ ٹکھتن دوکھ ژُ ہاوان ॥ (آے شرن)

ही ज़गथ व्यापिनी युथ शेवु नाथस,
ईशरु नाव ज़गतस मन्ज़ बनान।
तिथय पाठ्य मांज बनांन्य च़ृय ज़गतस मंज़,
शक्ती हुन्द नाव कुय चे शूबान ॥
योंदवय ईशर बंखत्यन संसारस मंज़,
मांज कुनि कुनि दोख छु दीवान ॥।
आश्चर छु मांज चोन क्रूदस प्यठ ति कुखनु,
पनुन्य बंखत्यन दोख च़ु हावान ॥॥ 6 ॥॥

—o— . —(आ'यशरण०)—

इ-दोर्मध्यमतां मृगाङ्कः सदृशच्छायां मनोहारिणी
पाण्डूत्फुल्लसरोरुहासन गतां स्निग्ध प्रदीपच्छविम्।
वर्षन्तीमऽमृतं भवानि! भवती ध्यायन्ति ये देहिन-

स्तेनिर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झति तान्दूरतः
(१७)

ژندرمس ہش صفا ژندرہ گہہ سوٗس
پھوٗلی متس ہمپوشس پٹھ ژے
خوش یوبہ پرکاشہ گہہ سوٗس ژآسونی
یوٗسہ کران ورشُن امرِتہ کُے
یم یہ دیان کران تم ہمار روٗس روزان
آپدا چھے تمنٕے دوٗر سپدان ((۷))
(آے ترن)

चन्दरमस हिश सफा चन्दरम् गह सौंस,
फौल्य मुतिस पम्पोशस प्यठ चुय ।
खोश यिवनि प्रकाशि गह सौंस चु आसुवन्य,
योसु करान बरशुन अमरथ्यत कुय ॥
यिम यि ध्यान करान तिम ब्यमारि रौस रोज़ान,
आपदा छि तिमुनुय दूर सपदान ॥(७)(आयं ज्ञरण)

पूर्णेन्दोः शकलै रिवाति बहुलैः पीयूषपूरैरिव,
क्षीराब्धेर्लहरी भरैरिव सुधा पङ्कस्य पिण्डैरिव ।
प्रालेयैरिव निर्मितं वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया,
चित्तान्तर्निहितार्तितापविपदस्ते सम्पदं बिभ्रति ।

پُنِم ژٕنٛدٕرمہٕ زَن اَمرِتہٕ پٕرواہ زَن
گَژھ پِنڈٕ کھیٖر سوٗدرٕچ لہَر زَن
شٖنَس ہِیُو صفا چون سوٗروٗپ بَناوِتھ
یُس کٔرِ دیان تَنہٕ مَنہٕ لولہٕ کِنی
تَس چھِ دوٗر گژھان دوٗکھ آرٕژرتہٕ آپدا
سمپداسہٕ پٕراوان زَنمہٕ زَنمن «۸»
«آیے شرن»

पुनिम च़ेन्दरमु ज़न अमरुथ्यु प्रवाह ज़न,
गछ पिण्डु क्षीर सौंदर्च लहर ज़न।
ईशस ह्युव सफा चोन सोरुप बनाविथ,
युस करि ध्यान तनु मनु लोलु किन्य॥
तस छि दूर गछान दोख आरवर तु आपदा,
सम्पदा सु प्रावान ज़न्मु ज़न्मन॥४॥
(आयशरण)

ये त्वां स्मरन्ति तरलौ सहसोद्भवन्तीं,
त्वां ग्रन्थि पञ्चकभिदं तरुणार्क शोणाम्।
रामार्णवे बहुलरागिणि मज्जयन्ति,
कुरुते जगद्दूधति चेतसि तान्मृगाक्ष्यः॥६॥

یُس سادَک کرِ دیان چون باسہ وُن
زُتَل پرکاشہ سوّس بجلی سمان
پانٛژہ دَل ژٕٹۍ تھۍ بال سِرِیہ سندی پانٛژ
وۄزلہ رنٛگہ سوٗرتُے زَن چمکان
رنٛگ سوٗدرس منٛز پھوٗٹمُت سوٗرے
گنٛتھ زَن رنٛگ کِنۍ سوٗرہ رخی سان
یُس یہ دیان کرِ تس یوگنی ژٕ تس منٛز
تس دُیے گرِ گرِ دیان چھ داران ॥۹॥
(آیہ شرن)

युस सादुक करि ध्यान चोन बासुवुन,
ज़्वल प्रकाशि सौस बिजली समान ।
पांछ़ दल छ़ेट्यथुय बाल सिर्यायि संद्य पांछ़्य,
वोज़लि रंग, सौरतुय ज़न चमकान ॥
रंग सौदरस मन्ज़ फौटमुत सोरुय ;
गंथ ज़न रंग किन्य सौरुखी सान ;
युस यि ध्यान करि तस यूगिनी ज़्यतस मंज़,
तसुन्दुय गरि गरि ध्यान छि दारान ॥१॥

(आय शरण)

—०—

लाक्षारसस्नापित पङ्कजतन्तु तन्वी,
मऽन्तः स्मृत्यऽनुदिनं भवतीं भवानी।
यस्तं स्मर प्रतिभमऽप्रतिमस्वरूपा,
नेत्रोत्पलैर्मृगदृशो भृशमऽर्चयन्ति ॥२०॥

لاچھ ستیٔ رنگۍ متہ پمپوشہ تارِ ہیو ؛
پرتھ دوہہ یُس دارِ چونے دیان
تس کامدیو زانتھ کمہ یوگنی ،
نیترو روپہ پوشو چھے پوزا کران ۔ (۱۰)
(آیہ شرن)

लाक्षि सत्य रंग्य मुति पम्पोशि तारि ह्युव,
प्रथ दोह युस दारि चोनुय ध्यान।
तस कामदीव ज़ांनिथ कमु यूगिनी,
नेत्र रूपु पोशव द्वि पूज़ा करान ॥ १० ॥
—०—
(आय शरण०)

स्तुमस्त्वां वाच्यमऽव्यक्तां,
हिमकुन्देन्दुरोचिषम।
कदम्ब माला विभ्राला-
माऽऽपादतललम्बिनीम ॥ २१ ॥

توتا کران تھی اسی زِنٛگ واکھ دیوی
ژٕ نِرزِمَس کونٛد پوشَس ہِش یوٚسہ چھےٚ دِفتہ مان «
شۆبہ وُنۍ کَدَمبہ مال ماج چھکھ ژٕ داریوٚنۍ
نالہ چھےٚ ژٕ شیر سیٚٹھ پادَن تانۍ _______ «۱۱»
(آیہ شرن)

तोता करान छी अंस्य चें वाख दीवी,
फ़ेंदरमस कोन्द, पोशास हिश योस् छे
दिफ़्ति मान ।

शबुवुन्य कदम्बु माल मांज छख चे दारवुन्य
नाल्य छय चें शेरु प्यठु पादन तान्य ।
(आयशारम)

—०—

मृदनीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डु-
त्विषीं
वर्षन्तीमऽमृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपि रिन्द्रेऽपि च।
अच्छिन्नाच मनोहरा च ललिता चाऽपि प्रसन्नापि-
च,
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते! वाक्सर्वतो वल्गति
«१२»

کٔلس سیٹھ شۆبہ وُن زٕنٛدِرمہ ژٕے دِرامُت
پمپوشس سیٹھ ژٕ دِفتی سوٚستس

ژنتھ چھکھ ژٕ شوٗبہ وٕنی ژٕ ہمہ رٕنٛدرس ہنٛز
اَمرٕتھ ژھٹان بٔڈ شوٗبایہ سوٚس ؏
یُس یہ دیان کرِ چون ہی دیوی تس
سَرسوتی نیرِ مکھ بٔڈ ولکاسہ سوٚس ((۱۲))
(آیہ شرن)

कलस प्यठ चेन्द्रमु शूबुवुन चै द्रामुत,
पम्पोशास प्यठ चु दिफ्ती सौंस ।
बिहिथ छख चु शूबुवुन्य ब्रह्म रोंन्दरस मं
अमर्यथ छटान बडि शूबायि सौंस ॥
युस यि ध्यान करि चोनै ही दीवी तस,
सरस्वती नेरि मोखु बडि व्यकासु सौंस।
-(आय शरण) ॥१२॥

ददातीष्टानभोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति विप
दहत्याधीन व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनु
हठादऽन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टि च विरहं,
स कृद्ध्याता देवी किमिह निरवद्यं न कुरुते

دُشمنن ژٕ گالان
دوان مطلب چھکھ ((۱۳))
آسان ژٕ چھکھ آپسان

آدِیَن زالان وِیا دِیَن شوٗمراوان
سوٗکھ تہٕ سمپدا چھکھ ژولِستاران ٭
اَندرِیم دوکھ تہٕ دادی بٔریہ وِرہ ژٕ گالان
یِم اَکہٕ لٹہٕ ماج دیان چون کران
تِم اد کمہٕ پاپہٕ نِشہٕ چھی موکلان
یِم اَکہٕ لٹہٕ ماج دیان چون کران۔ (۱۳)
(آیہ شرن)

मतलब छुख दिवान दुश्मनन त्रु गालान,
आपदायन छुख त्रु नाश करान।
आंदियन ज़ालान व्यांदियन शींमुरावान,
सोख तु सम्पदा छुख च्रु व्यस्तारान।
अन्दरिम्य दोख तु दांद्य ब्रेयि विरह च्रु गालान,
यिम अकि लटि मांज द्यान चोन करान।
तिम अद् कमि नु पापु निशि छी मोकलान,
यिम अकि लटि मांज द्यान चोन करान॥
—॰—(आयशरण) ((13))

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यलोकते चिन्तय
त्यत्वादि [illegible] चयत कलयति स्तौत्या श्रयत्यर्चति।

यश्च त्र्यम्बकवल्लभो! तव गुणान्गाऽऽकं।यत्यादरा-
तस्य श्रीमं गृहादवैति विजयस्तस्याग्रतो-
धावति ॥२४॥

یُس چون کرِ سُمرن بوٗزِ سیتی یُس زانہِ
وِدیا یہِ کِنۍ ماج یُس ژٕے پراوِی
شودِ منہِ کِنۍ زپہِ ناو چون گرِ گرِ
لول نیترو ستی کرِ درشن
شرونہٕ کِنۍ منن کِنۍ یُس وِچارہِ
پَرو قتہ لوتایہ کرِ چانی پوزا
گون گیوٗ چانۍ لولہ سان دِتھ تہٕ راتھ
نتھمہ بُتھ ستی ... روزِ اکھ ساتھ
تسی چھے نہٕ تشنہٕ گرِ ... نیران
نُے نس پتہ وقتہ پرو تہھ دوران
((۱۶)) [(آسے شرن)]

युस चोन कीरि सुमरन बोज़ सूत्य युस ज़ानि,
विद्यायि किन्य मांज युस चै प्रावी।
शोदि मन किन्यज़पि नाव चोन गरि गरि,
लोल नेत्रव सूत्य कीरि दर्शुन।
श्रवण किन्य मननु किन्य युस व्यचारि,

हर वक्तु तोताय चोन्य बैयि पूज़ा।
गोण भैवि चानी तोलु सान ध्यन तु राथ?
तखि रैस्तुय दुसन, रोज़ि अखसाद।
लक्ष्मी छनु तसुन्दि गरि निशिनेरान,
ज़ाय तस प्रथ वक्त ब्रोन्ह छु दोरान ॥१४॥
(आयशरण)

किं किं दुःखं दनुजदलिनि! क्षीयते न स्मृतायां,
का का कीर्तिः कुलकमलिनि! ख्याप्यते न स्तुतायाम्।
का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यते नार्चितायां,
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम्॥
(१:५)

کہم ستا دوکھ چھ تہم ہی دوکھن گالہ وِنی
یم گلہ نے تہ ژھانہ سمرنہ ستی
کوسہ چھ نیک نامی ہی کولِس کھارونی
یوسہ نہ تنہ ژھانے ستوتایہ ستی
کوسہ کوسہ چھ سِدی ہا سِدِ داتری
یوسہ نہ آفتہ سِدِ ژھانہ پوزایہ ستی
کیم کیم چھ یوگ ہا زِ لگتے امبا !!!
یِم نہ سمدِ تِنی ژھانہ تہ نشتنہ ستی ((۱۵))
(آیہ شرن)

कम सना दोख छि तिम ही दोखन गालवुनि,
यिम गलनय नु चानि सुमरनि सुत्य।
कोसु छि नेक नामी ही कोलस खारवुनि,
योसु नु बनि चाने तोताथि सुत्य।
कोसु कोसु छि सेंदी ही सेंदी दार्न्नी,
योसु नु प्राप्त सपदि चानि पूज़ायि सुत्य।
कम कम छि तिम योग ही जगत अम्बा,
यिम नु स्यद बनन चानि व्यनतनु सुत्य॥

—o—

(आय शरणी)(१०)

ये देवि! दुर्धरकृतान्त मुखान्तरस्थाः,
ये कालि! कालघन पाश नितान्त बद्धाः।
ये चण्डि! चण्ड गुरु कलमष सिन्धु मग्ना
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥२६॥

ہی دیوی یم مہا کالہ سندِس کھٹس
موکھس منز باک کھنتی
ہی کالی یم مہا کالہ سنز مز
زنہ ژور باکھی چھ گنڈنہ آمتی
ہی چنڈی یم بار یک تہ کھٹس
پاپکس سمندرس منز چھ کھٹی تی

ییلہ کرن دیان چون تیلہ چھکھ رچھان
(۱۴)- تمن موکلاوان بییہ تاران ژۓ
(آے شرن)

ही दीवी यिम महाकालु सुन्दिसयकठिनिस,
मोखस मन्ज़ बाग गमुत्य ।
ही काली यिम महाकालु सुन्ज़ि मोचि,
रज़ि चुरि पांठ्य छि गन्डनु आमुत्य ।
ही चण्डी यिम बारीक तु कठिनिस,
पापुकिस समन्दरस मन्ज़ छि फंट्यमुत्य ।
यैलि करन ध्यान चोन तेलि छुख रछान,
तिमन मोकलावान बेयि तारान च्रुय ।
—०— (आय शरण) ॥16॥

लक्ष्मी वशी करणचूर्ण सहोदराणी,
तत्पाद पङ्कजरजांसि चिरं जयन्ति ।
यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे,
लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुरक्षराणि ॥
(२७)

تاج بوآی لچھمی وش کرنس سیٹھ

پادٕچ گرٕد ٹھانٕی چھِ طاقتہ سوٗس
چانہِ پرٕنامہ وِزِ لگہِ یمنٕ للاٹس
پادٕچ گرٕد چھانٕی بڈٕ نشانہ سوٗس
سوے پادٕچ گرٕد گالہِ دوٗرٕ اکٕھ پرلس
زگتس منٛز بنہِ سۆ جے کار سوٗس (۱۸)
(آسے شرن)

मांज़ बवान्य लछमी वश करनस प्यठ,
पादुच गर्द चान्य ताकत सोस।
चानि प्रणामु विज़ि लगि यिमन ललाट
पादुच गर्द चान्य बडि निशानु सोस।
सोय पादुच गर्द गालि दोर बाह्य बस,
ज़गतस मंज़ बनि सु जयकार सोस ॥१८

(आँद शरण)

रे मूढाः! किमऽयं वृथैव तपसा कायः
परिक्लिश्यते,
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्ती क्रियन्ते
गृहाः।
भक्तिश्चेदऽविनाशिनी भगवती भवानी

संध्यता-

मुनीन्द्राम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मीः
पुरी च्यावते ॥२८॥

ہی موڈ کیاز چھکھ بے فاید تیہ کنی
پننس شریرس تکلیف دِوان
یگنہ کنی دانہ کنی بجہ دکھنایہ کنی
کیاز چھکھ گرہ پنن خالی کران
گژھ شرن تہ ماجہ شارکایہ براو بکھتی
ہسے کرن تسندے پادِ سیون
اَدِ چھوکھ منہ بھوشنہ نیتر سوس
کنجی براہ براو ہسی دورن - (۱۸)
(آسہ شرن)

ही मूडु क्याज़ि छुख बे फांयदु तमु किन्य,
पनुनिस शोरीरस तकलीफ दिवान ।
यगु [illegible], दानु किन्य, बज़ि दखिनायि किन्य,
क्याज़ि छुख गरु पनुन खाली करान ।
गछ़ शरण तु, माजि शारिकायि प्राव बखती,
हैं करुन तसुन्दुय पादि सेवन ।
अदु कौलि मूर्ति पम्पोशि नेत्रव सोंस,

लंक्ष्मी ब्रोंठ ब्रोंठ हैंयी दोल्ण ॥१४॥

—०— —(आय शरण०)

याचे न कंचन न कंचन वञ्छयामि,
सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्यः।
श्लक्ष्णं वसे मधुरमाद्म भजे वरस्त्री-,
देवि ! हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ॥२६॥

کانٛسہِ منگہٕ نہٕ ہیٚنہٕ کانٛسہِ تارِنہٕ بآزۍ
عآرژن ژراو کرنہٕ کانٛسہِ سیٚوا
زآولی وستر دار کھیمہٕ مۆدرۍ چیز
اَرژھ رَزھ نے سٟتی کر کھیلا
ییٚلہٕ ماج بواۍ ہرِ دنیٚس منز مے روزکھ
(۱۹)- تیٚلہٕ ہشانہٕ کامنا ییٚہ ستیدن شیدن
(آۓ شرن)

कांसि मंगुन बैयि कांसि तार नु बोड़य,
आंरज़र गाव करनु कांसि सेवा।
ज़ांवित्य वस्तुर दार ख्यमु मौदुर्य चीज़,
अध्रु रछ़नुय सूत्य कर खेला।

यैलि सांज बवांन्य ह्रुदयस मंज़ में रोज़ख,
तैलि म्यानि कामुनायि स्यद सपदन ॥१९॥
(आय शरण॰)

—०—

शब्द ब्रह्ममयि ! स्वेच्छे ! देवि! त्रिपुर सुन्दरि,
यथा शक्तिजपं पूजां गृहाण परमेश्वरी ॥२०॥

ہی شبد روٗپی نیرمل سوٗروٗپی
ہی دیوی ہی تریپور سوٗندری
کرٕ یتھا شکتی مےٚ چانٛی پوٗزا
(۲۰) – کرٕ سوٗیکار ہی پرمیشوٗری
(آے شرن)

ही शब्द रूपी न्यरमल स्वरूपी,
ही दीवी ही त्रिपोर सोन्दरी।
कर यथा शक्ती में चान्य पूजा,
कर स्वीकार ही परमीश्वरी ॥२०॥
(आय शरण॰)

—०—

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः,
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः
सदा ॥२१॥

نندیتن سوٗکھی ماج سادک ساری

یم دوشٹ آسن تم گلی تن
شِو رُوپ اوستھا منز نہ بارچ نی تن
گورِ دیو سدا منز پیٹھ پرسن رُوزِ تن (۲۱)
(آےشرن)

रूज्यतन सोंखी मांज सादक सारी,
यिम दोष्ट आसन तिम गल्य तन।
शिवरूप अवस्था मैं ति मांज वेन्यतन,
गोरदीव सदा मैं प्यठ प्रसन्न रूज्यतन ॥४
(आयशरण)

ईशणात्पापशमनी जपान्मृत्यु विनाशनी।
पूजिता दुःखदुर्भाग्य हरा त्रिपुर सुन्दरी ॥२

چانہ درشنہ پاپ ساری چھ گلان
چانہ ژرپہ مرنیُو چھ ناش سپدان
پوزایہ کنی حین مہا گیونہ کنی
زپوس دوکھ تہ دوربھاگیہ دور شیدان (۲۲)
(آےشرن)

चानि ईशानु पाप सारी छि गलान,
चानि जपु मृत्यु छु नाश सपदान।

पूज़ायि ... क्रिन्य चोन महिमा य्यचुन
जीवस दोख त दोर बाग्य दूर सपदान ॥२२॥
(आयशर...)

—०—

नमासे यामनी नाथले खाल ङ कृत कुन्तलाम् ।
भवानी भवसन्ताप निर्वापन सुधा-नदीम् ॥२३॥

نمسکار چھس کران ییمس کیشس منز ژے
ژندرمہ پرزلان راتس دیتو
سمسارچ دوکھن چھکھ نواران ژے
امرتچ ندی سند پرواہ ستی ژن
(۲۳)
(آیشرن)

नमस्कार छुस करान येमिस केशस मंज़ ।
चेन्दरमु प्रज़लान रात्रो दय ॥
सम्सार दोखन छुख न्यवारान च़ ।
अमरयत नदी हुन्दु प्रवाह सूत्य ...
(आय शरन)

—०—

मन्त्र हीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्‌गतम् ।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि ॥२४॥

منتر ہین آسہِ کریا ہین آسہِ
ودی ہین آسہِ یہ کینژھا پرووم

تھہٕ سارِسے ہی پرمیشوری وٲنۍ
ژےٚ کرٛپایہ کِنۍ عارتس منٛز آج بخشم (۲۴)
(آرے شرن)

मन्त्र हीन आंसिथ, क्रियाहीन आंसिथ।
सिद्धि हीन आंसिथ, यि केंछा प्रोवुम॥
तथ सारिसय ही परमीश्वरी।
चुय कृपायि किन्य आंर्तिस मे माज
आय शरण चे पादन विनयि किन्य छि नमिथ बखशुम
याकोलताथि मंज़ु असि रछत, चुय॥(24)

ॐ

अथ अम्बास्तव
(चौथा स्तव)

ॐ नमो जगदम्बिकायै।
ॐ यामाऽमनन्ति मुनयः प्रकृति पराणीं,
नित्येर्यात यांश्रुतिरहस्यविदो वदन्ति।
तामऽर्धं पल्लवितशंकर रूप मुद्रां,
देवीमनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये॥१॥

یُس منیشر آدِ پرکرتی مانان،
یُس وَنان ودیا وید رہسیہ زانہ وُن
تَس شِو ناتھ سنز اردانگی یوس
شوبایہ سوُس زگتس چھہ رچھ وُن
تس آمُت بہ ایکاگر ژیتھ بنتھ
چھس پیوان تَس پادن پیٹھ پرن - (۱)

यस मुनीश्वर आदि प्रकृती मानान,
यस वनान विद्या वेद रहस्य ज़ानुवुन।
तस शिवनाथु सन्ज़ अर्धाङ्गी योसु,
शूबायि सौस ज़गतस छि रछिवुन्य॥
तस आमुत बे एकागर च़्यथ बनिथ,
छुस प्यवान तस पादन प्यठ परन॥1॥

—•—

अम्ब! स्तवेषु तव तावदऽकर्तृकाणि-
कुराठी भवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि।
डिम्बस्य मे स्तुतिरऽसावऽसमञ्जसाऽपि-
वात्सल्य निघ्न हृदयां भवती धिनोति॥ (2)

ہی ماتا چانی توتا کرلس پیٹھ
برہما وانی تہ جڈ بنانی
مے شری سنز یہ توتا یود چھ ژوٹ کھسے۔
باوناہہ کنی ہردیس ژ سوکھ دِوانی۔ (۲)

ही माता चान्य तोता करलस प्यठ,
ब्रह्मा वांनी ति जड़ बनांनी ।
मे शुर्यसुन्ज़ यि तोता यौद छि टोः फुट्य,
बावुनायि किन्य हृदयस चु सोख दिवांनी॥
(2)

ओमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुरेखा,
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।
निःष्यन्दमान सुखबोध सुधा स्वरूपा,
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम ॥३॥

چھ اکا شہ روپہ کنی ناد بندُ روپہ کنی
ژندرمہ کلا ہش چھکھ ژ پرزلان
وانی ہند شبد روپہ چون چھ تہ وُن
سوکھ تہ گیان امرت ژ پنے لِتِس نیران
بھگوان چھکھ لتس منز ژ پانے
ژ گتہ تس منز اسہ تہ با گیہ وان

चिदाकाश रूप किन्य नाद बिन्दरूप किन्य,
चन्दरस् कला हिश छख चु प्रज़लान ।
वांणी हुन्द शब्द रूप चोन छु आसुवुन,
सोख तु ज्ञान अमरथ्यतु चेय निश नेरान॥
चमत्कार छुख तस मंज़ मनस चु पानय,
ज़गतस मन्ज़ आसि युस बाग्यवान ॥३॥

आविर्भवत्पुलक संततिभिः शरीरै-
र्निष्यन्दमान सलिलैर्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपास्ते ये,
पादौ तवाम्ब! भुवनेषु त एव धन्याः॥४॥

آسن لیس رم ووگھٹونہ شریریس
وُش آسِس نیتھ وِنیران
وادٔ نٔ یِپٔر کیتھ گژھ گژھو
پادن ژٔھے آسہ لیس پوزا کران
لیس بیوگس شستا چھ تریلوکی منز
ترٔن بوٗنن منز چھ باگیہ وان۔(۴)

आसन वस हम वोथ्युनि शरीरस,
ओश आस्यम नेत्रव नेरान ।
ओश्य आस्यम

वांगी किन्य्र पद परि गित्य गंछ्य गंछ्य,
पादन ह्यैं आसि युस पूज़ा करान ।
तस छ्युव कुस सना छु त्रैयलूकी मन्ज़,
मन ववुमन मन्ज़ सुय छु आग्यवान ॥४

—•—

वक्त्रं यदुद्यतमऽभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदऽपि देवि! शिरः करोति।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमऽम्ब! तानि
कस्याऽपि कैरऽपि भवन्ति तपोविशेषैः॥५

موکلیس آسہ وُدلوگس توس
ہی ماج جاپٲنی تووتا کرلس پیٹھ
شرلیس ٲسے آسہ گرگرہ ہی ماج !
اپنیہ کنی نمسکار کرنس پیٹھ
منن لیس لوگمت آسہ ماج ژینہ کنی
سمرن کرہ حیون رات دوہ دین
آسہ کانہہ شہ باگیہ وان کمہ تانی خاص تیپہ کے
یوہ کنی روز گرگرہ ژینہ سترن (۵)

मोख्‌ यस आसिय वुछूगु सौंस ही मांज,
चांन्य तोता करनस प्यठ ।
शेर यसुन्दुय आसि गरि गरि ही मांज,
चैंय कुन नमस्कार करनस प्यठ ॥
मन यस लौगमुत आसि मांज चेंय कुन,
सुमरन करि चोन रात्रो द्यन ।
आसि कांह सु भाग्यवान कमि तान्य खास तफ़े,
पोशि किन्य रोज़ि गरि गरि चैंय करान् ॥
(5)

---o---

मूलालवाल कुहरादुदिता भवानि !
निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडिल्लतेव ।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु-
निःष्यन्दमान परमाऽमृत तोय रूपा॥६॥

مولادارِ نشہِ دزامیز ژٔنتے چھپوش زٔنتھ
بجلی ہشدی باعٹھ ہیئور کٔن کھسان
شُہسر ڈٔلہ سے مُنز اُژِتھ تورِ نیران
اَمرتہٕ واگی رٔو سیہ لبون چھہ واتان
(५)

मूलादार् निशि द्रामुच़ थंर शैं पम्पोश्चॅटिथ्,
बिजली हुन्द्य पाठ्य ह्योर कुन खसान।
संहस्र डलस्य मंज़ अंचित्थ तोर् नेरान,
अमरवत् वान्य रूप् बोन वैंयि छि वसान॥
—o— -(6)

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते,
मुग्धः कटाक्ष विधिरऽङ्कुरयां चकार।
धत्ते तदा प्रभृति देवि! ललाट नेत्रं,
सत्यं हियेव मुकुलीकृतमिन्दु मौलि:॥७॥

ییلہ زول کامدیو اکھ شیو ناتھن
اکہ کٹ اکھ تھتی کتی وو پداوتھ
تتہ سیٹھ مہادیو منز للاٹس
شرمہ نی اوڈے نیتھر چھ سراوتھ (8) -

येलि ज़ोल कामदीव अख शीव नाथन,
कि कटाक्षि तिथ्य कृत्य वोपदाविथ।
[illegible] महादीव मंज़ ललाटस [illegible]
[illegible] न्य ओडुय नेथुर छु मुचरांविथ

(-7)

अज्ञात संभवमनाकलिताऽन्ववायं,
भिक्षुं कपालिनमवास समद्वितीयम्।
पूर्वं कर ग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ॥ ८॥

زانِتھ زۄمُس کولہٕ سۄس بِکھِیُو
ننگے تہٕ دۄیمہٕ رۄس تھٕ چھِتھ کلہٕ مال
چانہِ وِیوانہٕ برو تھۄٚو ہی ہِماک پُتری
کُس اوس زانان شیوٕ سُندٕ حال
((۸))

ज़ांन्यमुति ज़न्म युस कोलु सोस बिछू,
नन्गय तु द्वोयमि रोस कुनिथ कलुमाल।
चानि व्यवाहु ब्रोंठ ही हिमालु पुत्री,
कुस ओस ज़ानान शीवु सुन्द हाल॥
(८)

—०—

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च,
भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ।
वेतालं संहति परिग्रहता च शम्भोः,
शोभां बिभर्ति गिरिजे! तव सहचर्यात्॥
(९)

چرم پوشاک شمشان بسما ملتھ
نژران شمشانن سۍ جیکھ منگہ ولن
بوت کھِل پرِوار آسہ ونن تس شِوس
شوبان تیلہ ییلہ ژیتھ سپتھ پُھکون (۹)

चरुम पोशाक शुमशान बस्मा मलिथ,
नच़ान शुमशानन सु जीख मन्गुवुन ।
बूत खिल परिवार आसुवुन तस शिवस,
शूबान तैलि यैलि च़ैय स्त्य ड्डुपकुवुन ॥ (९)

कल्पोप संहरण केलिषु पण्डितानि,
चण्डानि खण्डपरिशौरऽपि ताण्डवानि ।
आलोकनेन तव कोमलितानि मातः,
हस्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै ॥१०॥

گیانتان ناش نژراہ تہ گیلہ ناہ
تس مہادیوس ژھپ بڈ گرسہ
تہ تیۍ لہ دان سمسار منز
پیہ سراوان ژ تتھ شبوب لگاہ (۱۰)

कल्पान्तुक नाश नचुनाह तु भिन्दुनाह,
तस महादीवु संजि कि वेड क्रीड़ा
सोरुय सु बदलान सम्पदायन मंज़,
यैलि नावान तथ यु छोव नज़राह ॥ (१७)

जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये,
निःशेष पाश पटलच्छिदुरा निमेषात्।
कल्याणि! दैशिक कटाक्ष समाश्रयेण,
कारुण्यतो भवसि शाम्भव वेद दीक्षा ॥१८॥

زلوٗس کرٕمَن سٕتۍ بیٚتھ شوٗدی ۔۔۔
اَکہ ہمیشہ پیالس سُموٗ دُنس ژٕ کالان
ژٕ بیٚچھ ژھیۆکھ دٕیایہ کیٚنۍ گوٗرو رٕوپہ بنتھ
(॥) شِو شکتی دیکشا ووپدیش کران ۔

ज़ीवस कर्मन सपदिथ शोंदी,
अकि निमीशि फांशि समूह तस छु गालान,
चय छख दयायि किन्य गोर रूपु बनिथ तस,
शिवशक्ती दीक्षा वोपदीश करान ॥१८॥

मुक्ता विभूषणवती नवविद्रुमाभा,
याच्येतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या।
एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणां,
कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥२२॥

موختہ مالہ زیور روٗدر مالہ ژھنٛی ژھنٛ
آسوٗنی ژھکھ تہٕ ماج شوٗبایمانے
یُس پوٗرُش آسہ سنٛدیا تارکو سوٗس
چوٗن سوٗروٗپ یُتھ ہیو تس باسان
تس پوٗرشس ترٕبوٗنچہٕ یوٗگنیہ
پانٛژن کانہ روٗستی کامدیو شمران۔(۱۲)

मोरुतु मालु ज़ेवर रौद्र मालु छुन्य छुन्य,
आसवुन्य छख च मांज शूबायिमान।
युस पोरुष आसि सन्ध्या तार कव सोस,
चोन सोरूप युथ ह्यव तस वासान,
तस पोरुषस त्रिबवनंचि यूगिनीयि,
पांच़ि कानि रौस्ती कामदीव समरान॥

ये भावयन्त्यऽमृतवाहिभि रंशुजालै-
राप्याययमान भुवनामऽमृतेश्वरी त्वाम्।
ते लङ्घयन्ति ननु मातरऽलङ्घनीयां,
ब्रह्मादिभिः सुर वरैरऽपि कालकक्षाम् ॥१३॥

ہی ماتا یِم ژٕےٚ سوٚرٕونۍ آسَن
اَمرِتھ رۄُپہٕ سوکھ دِوان تٔرَن بۄَن
تِم کَران کالہٕ مُرۍ یادایہٕ اَلوٚر
یِتھ تٔرن کٔٹھُن برٛہمادِکَن تہٕ دیون (۱۳)

ही माता यिम च़े सोरवुन्य आसन,
अमरथ् रूपु सोख दिवान त्रन बवनन।
तिम करान कालु मंर्ययादायि अपोर,
यथ तरुन कठ्युन ब्रह्मादिकन तु दीवन॥
(१३)

—o—

यः स्फाटिकाक्ष गुण पुस्तक कुण्डिकाढ्यां,
व्याख्या समुद्यत करा शरदिन्दु शुभ्राम्।
पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते,
मातः! स विश्वकवितार्किक चक्रवर्ती॥
(१४)

ستٹکچ زپمال اکہ اتھہ دارتھ چھ
پوستک کمنڈل بییہ دون اتھن
ویاکھیانس پیٹھ بیاکھ اتھ چھ لوگمت
ژندرمس ہیو روپو زن ژھے آسن
ییس یتھ دیان کرِ چون مانز منز منس
سوین ہند ژکرورت بنان تس زگتس
(۲۰)

सटकुच ज़पुमाल अकि अथु दारिथ छु,
पोस्तक कमंडल बैयि दोन अथन।
व्याख्यानस प्यठ ब्यारुद अथु कुलीमुत,
चन्दरमस ह्युव रूपोभ्राजन छुं आसन।
युस युथ ध्यान करि चोन मांज मंज़ मनस,
स्वयन हुन्द चंक्रुत बनान सु ज़गतस॥
(14)

बर्हावतं स युत बर्बर केश पाशां,
गुंजावली कृतघनस्तनहारि शोभाम्।
श्यामां प्रवाल वदनां सुकमार हस्तां,
तामेव नौमि शबरीं शबरस्य जायाम्॥२२॥

سونہ پکچھہ ٹلہ سوس ژ چمکونہ کیتھ سوس
رژ فلہ ہار سوس ژ شوبایمان
چمکونہ موکھ سوس ژ کومل اتھن سوس ژ
تتھی شکار بایہ روپس بہ پرنام کران۔
(۱۵)

सोर् परिख सुकटु सोंस चु चमकुवुनि कोंथ सोंस,
र्च़ु फ़लि हार्सोंस चु शूबायिमान ।
चमकुवुनि मोख् सोंस तु कोमल अथन सोंस चु,
तथ्य शिकार बायि रूपस बो प्रणाम करान ॥
—(15)

—०—

अर्धेन किं नवलता ललितेन मुग्धे,
क्रीतं विभोः परुषमऽर्धमिदं त्वयेति ।
आलीजनस्य परिहास वचांसि मन्ये,
मन्दस्मितेन तव देवि! जडी भवन्ति ॥
(२६)

ہی ہا سوندری چھکھ زبے آسون
منوہر ژ سوندر ژ تھسر زن
کیا بہ ہیتھ تھک شوبہ چھکھ ہیو ساں

یُس سَخت بِیہ کٔٹھور شیٔو چھُے آسیوٗن
وَسُن سِتۍ اَتھ ہاسہ پوٗرۍ وَکھ وَژن
چانہِ کم اٮ۪سہٕ سِتۍ دۄکھ کرم بَن (۱۴) –

ह्री महासौन्दरी छख च्युय आसुवुन्य,
मनोहर त, सौन्दर नेव थव जन।
क्याज़ि होतथन मोल युथ ह्युव सामी,
युस संख्त कैयि कठोर शीव छु आसवुन।
व्यसन हुन्दि अधु हासि पूर्वक वनन,
चानि कस असन, सत्य मूडु छि तिम वनन॥
–o–
– (16)

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलोऽयं,
मायोदधिर्विविध दुःख तरङ्ग मालः।
आश्चर्यमऽम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति,
त्वद् ध्यान सन्तति महा वड़वा मुखाग्नौ॥
(१७)

برہمانڈ بُدبُد کھلہ پُرہ یہ مایا سۄدر
دوکھ لہرو سۭتۍ پُرہ آسیہ وُن

آستہ رٕژھی تاج ناشس چھ واتان
چون دیان اتھ کیتہ چھ واڈ وا اَگن (١٧)

ब्रह्माण्ड नुबर खिल बंरिथ यि माया सोंदुर,
बोख संहरव सत्य बंरिथ आसुबुन।
आख़र छु ही मांज नाशस छु वातान,
चोन ध्यान अथ क्युत छु वाडवा अंगुन।
(17)

—o—

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहारणीति,
कात्यायनीति कमलेति कलावतीति।
एका सती भगवती परमार्थतोऽपि,
संदृश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव ॥२८॥

دکھ تیتری ژٕرے مولا دانہ واستی
ہرتھ گوبھایہ منزٕ چھکھ ژٕ روزانی
کاتیایٔنی ژٕرے لچھمی ژٕرے سیٹھ
چھکھ کلاوٕتی نہ ژٕرے ھکووتی
...کٕ ژٕرے آستھ ہی تاج چھوانی
لبتھ چھکھ لیوان بہو روپہ نرتکی (١٨)

दक्षि पुत्री छुय मूलाधार वासिनी,
हथ गोफाहि मंज़ छुख च, रोज़ांनी।
कात्यायनी छुय लछमी छुय बैयि,
कुस कला वती छुय तु छुय भगवती॥
रूब कुनी आंसिथ ही मांज भवांनी,
लबनु छख विज्ञान छुहु रूपु नच़ांनी॥
(18)

आनन्द लक्षणमनाहत नाम्नि देशे,
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे।
प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं,
शंसन्ति नेत्र सलिलैः पुलकैश्च धन्या॥
(१९)

انند روپی ہتھ تراس منز
ناد روپہ بنہ یس چوں دیان
ابیا سہ کی انتر موکھ منہ
اشہ سوس کر دیان ہے چھ باگیہ وان (۱۹)

आनन्द रूपी हथ च़्रकरस मन्ज़,
नाद रूप बनि यस चोनुय ध्यान।

अभ्यास किन्य अन्तर सोखु मनु छिन्य,
अछि सोंख करि ध्यान सुय छु बाम्बन । २३।

—०—

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं,
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम् ।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनी त्वमूष्मा,
निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात् ॥ — (२०)

ژےٚ چھکھ ماج بوانی ژندرمس روشنی
ژےٚ سرییس دپتی آسان
ژےٚ چھکھ چیتنی پورشس آسونی
ژےٚ پوتس منز بل باسان
ژےٚ سادٕ پانس گنس شکتی
ژےٚ روس ژلت لب سار چھ روزان (۲۰)

च़ुय छख मांज बवांन्य च़न्द्रमस रोशनी,
च़ुय सिर्ययस दिप्ती आसान ।
च़ुय छख चैतन्य पोरुषस आसुवुन्य,
च़ुय पवनस मन्ज़ बल बासान ॥

दु पांगिस
स ज़गत निर्वा:

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्ति यदन्तरिक्षं,
सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च धत्ते।
यद्वाति वायुरऽनलो यदुदर्चिराऽस्ते,
तत्सर्वमम्ब! तव केवलमाज्ञयैव ॥ २१॥

ہی ماتا سِری یہ ژندرمہ تارکھ ؟
آکاشس پیٹھ یم پرکاش دِوان
شیش ناگس یُس کُل پرتھوی داران
میگ ییم رۄد زنتہ چھس تراوان
وایو چھیہ سران اگن چھُ زوتان
تم ساری چھانہ شکتی ہتی خیان (۲۱)

ही माता सिर्यियि चन्द्रमु तारख,
आकाशस प्यठ यिम प्रकाश दिवान।
शीशनाग युस कुल पृथ्वी दारान,
मेघ यिम रूद ज़गतस [illegible]न ॥

वायू फेरान अंगुन क्षु ज़ोतान,
तिम सारी चानि हुकमु सूत्य चलान॥
(२१)

—o—

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं,
वाक् तर्कयो स्त्वमऽसि भूमिरनाम रूपा।
यद्वाविकासमुपयाति यदा तदानीं,
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरी भवन्ति ॥२२॥

سنکوٗژ یژھا ییلہِ چھے ژٕ ستپدان
تیلہِ ژٕ نہٕ ماج من تہٕ بودھ نیرویکار بنان
ییلہِ ولکاس یوان چھکھ ژٕ ہی گرجے
تیلہِ چانی نام رۄپ تٔنی چھے نیران (۲۲)

संकूच़ यछा येलि छय चें सपदान,
तेलि चें मोज मन त, बोद्ध न्यर व्यकार बनान।
येलि व्यकासस यिवान छख चु ही गिरिजा,
तेलि चान्य नाम रूप नेन्य छि नेरान॥
(22)

सोगाय देवि भवती कृतिनः प्रणाम्य,
भ्रूकिङ्करी कृत सरोज गृहाः सहस्राः।

चिन्तामणि प्रचय कल्पित-कौलि शैले,
कल्पद्रुमो पवन एव चिरं रमन्ते ॥२३॥

ہا دلوی سوکھ یاپٹ بانشیر وان
پیّلہ زتے پچھی تم پرتام کرُان
تُلہ چانہ ہمبہ حرکتہ تمن لتھی [illegible]
ساسہ بنہ الیشوری چھہ روزان
چپتامنی رتنک [illegible]
کیہ [illegible] پہاڑس پیٹھ [illegible]
[illegible]
[illegible] (۲۳)

ही दीनी सोखुबापथ बाग्यवान,
यैलि यैकी तिम प्रणाम करान।
तैलि चानि बुम्बि हरकंच तिमन लछ्मी
[illegible] ज़ानी। तु
[illegible] तामणी रत्नुक [illegible] बनांव्यमुतिस
[illegible] लि हु[illegible]दस पहाडस प्यठ तिम खेलानी।
कल्प वृक्ष सौस्त्यव लंयमुत्यन बागन,
मंज़ तिम [illegible] की करानी ॥ २३॥

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशो,
संसार तापमऽखिलं दयया पशुनाम्।
वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्त्या,
धर्मं निजं शमयितुं निजयैव वृष्ट्या ॥२४॥

(११) ही मांज मोक्स संसार् दोख हारी ;
छिहस त्वय नाश करान दयाथि किन्य।
दोखन हुन्द नाश छेव मातहत कुअिसुन,
दोख न्यवृति ही छेव आधीन ।
शिषु पोंव्य शियैय छुय पनुनी नर्मी,
शोम्रावान पनुनि वर्षेनु किन्य ॥२४॥

—o—

ఆకి: శరీరమఽధిదైవతమన్తరాత్మా,

ज्ञानं क्रिया करणमानसं जालमिदं ...

ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं,
किं तन्नयद्भवसि देवि ! शशाङ्कमौलेः ॥२५॥

شریر ژے آسوٗنۍ شکتی ژے آسوٗنۍ
ویراٹ سوٗروٗپ چھکھ آسہ وۍنۍ ژے
زیو آتما دیان شکتی، کریا شکتی
اندریہ شکتی آسنہ شکتی ژے
یژھا شکتی ایشوری پریوار ژے
گرٕہدن ہنز جاے آسوٗنۍ ژے
کیا نہ چھکھ ژٕ آسوٗنۍ لیس سوٗروٗپ ژوٗشہ
سے سوٗروٗپ چھکھ پرٕ لوٗرن ژے (۲۵)

शैरीर च़ुय आसवुन्य शक्ती च़ुय आ सुवुन्य,
व्यराठ, स्वरूप छ़ख आसवुन्य च़ुय ।
ज़ीव आत्मा ध्यान, शक्ती, क्रिया शक्ती,
येन्द्रैयि शक्ती आसनु शक्ती च़ुय ॥
यछ़ा शक्ती ऐश्वरी परिवार च़ुय,
ग्रैह धन हुन्ज़ जाय आसवुन्य च़ुय ॥

क्या नु छुख चु आसवुन्य युस स्वरूप शिव, सुय स्वरूप छुख परिपूर्ण चुय ॥२५॥ सुन्द,

—०—

भूमौ निवृत्ति रुदिता पयसि प्रतिष्ठा,
विद्यानले मरुति शान्तिरतीतशान्ति ।
व्योम्नीति याः किलकलाः कलयन्ति विश्वं,
तासां विदूरतरमऽम्ब! पदं त्वदीयम् ॥ -(२६)

پرتھوی منز نورتی کلا روپ چھے
زلس منز پرتشٹا کلا روپ چھے
اگنس منز ودیا کلا آسوٕنی
وایس منز شانتی کلا چھے
آکاشس پیٹھ کلا یہ زٕنگھ داران
تمو لشہ دور چھون سوروپ آسہٕ ون
(۲۶) تمو گژھ نہ دور چھون سوروپ
تمو لشہ تاکہ دور روزان چھے -

पृथ्वी मन्ज़ न्यवृती कला रूप चुय,
जलस मन्ज़ प्रतिष्ठा कला रूप चुय।
अग्नस में विद्या कला चु आसवुन्य,

पवनस मज़ शान्ती काला छुय।
आकाशस यिम कलाधि ज़गथ कारान,
तिमव निशि दूर चोन स्वरूप आसुवुन।
तिमव कलायव निशि दूर चोन स्वरूप छु
तमि निशि मोज दूर रोज़ान छुय॥ २६॥

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं,
नाङ्गी करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये।
तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल प्रकारा-
स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति॥
(२७)

یوت تام نہ یاد جوئی چانی رتن ہردیس
یم بحث کرِو نی ولٹو وادی
یی زنگتھ رچھِو نہ یوت تانی تم شکِ تیرتھ
سوٗ دٕ باو تھئِند ناش گژھِ نہ شیدی (۲۸)

यौत ताम नु पाद जूर्य चान्य रतन हृदयस,
यिम बहस करवुन्य कुतर्कवादी।
ही ज़गथ रछिवुनि तौते तान्य तिम
शंक बंयच्य,

मूड् बालु तिहुन्द नाश करि सपदी॥२७॥

—o—

यद्देवयान पितृयान विहारमेके,
कृत्वा मनः करण माण्डलसार्व भौमम् ।
ध्याने निवेश्य तवकारण पञ्चकस्य,
पर्वाणि पार्वति नयन्ति निजासनत्वम् ॥
(२८)

ییم یوگی یوٗ پرٛش پرانہٕ اَبیاس یوٗگ،
اَبیاس کٔرتھ کٔری ہیٚلہ پرٛاوِن
پَنٕنۍ کھیٚلہ تہٕ مَن آسکھ زٕ پانچھ
(۲۸) تِم سوارٕ کَرٛان چھِ پانٕژَن کارَنَن

यिम यूगी पोश्य प्राण अभ्यासु, यूग ,
अभ्यास करिथ करिथ यैति प्रावन ।
यैन्द्रेय खिलु तु मन आस्यख ज्यूना त,
तिम सवारै करान छी पांचन कारणन ॥
(२८)

—o—

स्थूलस्य मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब ! यस्याः ।

पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं ,
सासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम॥ (२९)

پرتھوی توٚت پیٹھ مایا توٚتس تام
یِم ستھول مورتیہ مانٛج چھ آسان
کُنہ مورتی منٛز ہی مانٛج بوٚانی
چانی ہشہ وبھوتی چھینہ باسان
برہمادِکن تہ چھُنہ تیٚتھ ہیو سامرتھ
گوٚن چانی گوٚویتھ چھینہ تِمن تہ ہیکان
تِمہ وِلوٚتی ہشدی گوٚن کرِتھ گایِن
ماتی دِتم مے تِمیس پُر آشاوان (۲۹)

पृथ्वी तौत प्यठ माया तौतुस ताम ,
यिम स्थूल मूर्तियि मांज छि आसान ।
कुनि मूर्ती मन्ज़ ही मांज भवानी ,
चान्य हिश विभूती छेंन, बासान ॥
ब्रह्मादिकन ति छुन त्युथ ह्युव सामर्थ्य ,
गौण चान्य गेंविथ छिंनु तिम ति ह्यकान ॥

तिमय विबूती हुन्द्य गोण कैय में गायन,
मांफी दितम में हुस बं आशावान ॥ २९॥

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडध्वशुद्धौ,
आप्लावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम्।
श्यामां घनस्तनतटां शकली कृतौ च,
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति॥ ३०॥

کلپانتہ اگنہ پاٹھی گہہ سوس ہی ماج
سنسار ناشس پیٹھ ژ چمکان
سوزرے بیٹھ قایم کرنس پیٹھ
گھکھ ژ تیلہ امرتک ورشن کران
یم شامہ روپ سوندرہ جون دیان چھی دارا
تم ماج زگتک گورہ چھ سپدان (۳۰)

कल्पांतु अंग्न् पांठ्य गहे सोस ही मांज,
समसार् नाशस प्यठ ज़ु चमकान।
सौरुय बैयि कोयिम करनस प्यठ,
कोल ज़ु बेति अमृतक वर्षुन करान॥

यिम शामुरूपु सौन्दर चोन ध्यान छि दारान,
तिम मांज ज़गतुक्य गौरन छि सपदान॥
(३०)

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब! केचि-
दानन्दमेव कतिचित्कनिचिन्मायाम्।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम,
साक्षादपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव॥ ३१॥

کیہنٛہ چھی تھَوان وِدیا کیہنٛہ چھِہ آنند
کیہنٛہ چھی مایا روٗپ تٔرِ مانان
کیہنٛہ زگتھ ماتا ساکھیات حدروس
(۳۱) دیا سوٗروٗپ گورٕ روٗپ اَسۍ زانان

कैंह छी थंज़ विद्या कैंह छि आनन्द,
कैंह छी माया रूप ज़ै मानान।
कैंह ज़गथ माता साक्षात हद रोस,
दया स्वरूप गोरु रूप अस्य छे ज़ानान॥
(३१)

कुवलयदलनीलं बर्बर-स्निग्ध केशं,
पृथुतरकुच भाराक्रान्त कान्तावलग्नम्।

किमिह बहुभिरुक्तैस्त्वत्स्वरूप परं नः,
सकल भुवन मातः सन्तत सन्निधात्तम्॥
(३२)

کوٗرے ونگہ پاٹھی چھکھ ماج ژٕ چمکوٗنی
دوٗرمُت تُہندے ماج سوٗندر کیش
سوٗندر کمر سوٗس شینہ لوٗن تراوِتھ
ہی ماج آسہ وٕنی ژٕ زگتٕچ ایش
زیادٕ وٗنی چھے کیا، نیر حاصل ماج
سنتوشہ رٕژتم نیتھ دِتم تیتھ سندیش
(۳۲)

कुवलय वंगु पांठ्य छुख मांज च़ु चमकुन्य,
होरमुत मे छुय मांज सोन्दर केश।
सोन्दर कमर सोस सीनु बोन त्रोविथ,
ही मांज आसवुन्य च़ु ज़गतुच ईश।
ज्याद् वंन्यथुय क्याह नेरि हांसिल मांज,
सन्तोश मे रोज़तम न्यथ दितम त्युथ सन्देश॥
(32)

सकलजननीस्तवः।

(पांचवां स्तव)

अजानन्तो यान्ति क्षयमवश्यमन्योन्यकलहे,
रमी माया ग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः।
जगन्मातर्जन्म ज्वरभय तमःकौमुदि! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम्॥ (१)

نہ زانتھ وِنی ہوتھ پانہٕ وٲنٛز لڑی لڑی
اَوش پاٹھی ناشہ باوس چھ واتان
یم مَتہ وادی مایایہ ہنٛدی نے
گنٛڈنے تھٕنتھ یم ڈٲلہ ڈٲلہ گرزھان
ہی زگتہ ماتا اسہ تہ نمکی جور
بیہ کِہ تتیہ کے ژٲنٛدہ نسہ ژہ باسان
آستی شُرن چھی شننوکھ ہی آج
گلی گنٛڈتھ اسی ژٲنٛدے کٕر ژہ نام چھی کران (۱)

न ज़ानुवुन्य मूर्ख पानु वान्य लंड्य लंड्य,
अवश्य पांठ्य नाशि बावस छि वातान।
यिम मतुवादी मायायि हुन्दि नुय,

गन्डुनुय फंसिथ यिम डुलुडुलु गछ़ान।
ही ज़गथ माता अखि ज़न्मुक्य ज्वर,
क्यक्ति तमुकुय छ़ेन्दरस चु बासान।
आमुत्य शरण छी सन्मोख ही मांज,
गुल्य गंन्डिथ ओस्य छै कुन प्रणाम छी
—०— करान ॥ १ ॥

वचस्तर्कागम्य स्वरस परमानन्द विभव-
प्रबोधाकाराय द्युते तुलित नीलोत्पलरुचे।
शिवस्याराध्याय स्तनभर विनिम्राय सततं,
नमो यस्मै कस्मैचन भवतु मुरधाय महसे॥ (२)

وآنی کِنۆ وثرار کِنی چھکھ ژ آچ نہ ترآونی
چھکھ ژ چیتن صنوٗ روٗپ نیریہ آنند
نیلہِ اُتپلہ لوٗشہ دِقتی نسو شکتی رُپے
شوٗ باسیمان بنیہ گمان تہ آنند
شیوس چھکھ آرادنی زَنت لباوان
گمانہ کرِتھ یا ژُ سپیکھ تتہ یار کِنی
نمسکار آسی نے تتھ کنھ تا نی تیترس
ساریوے تھس اندر اَنان ژ پتیمہ یی (۲)

वांणी किन्य व्यव़ार किन्य छुख च़ु मोज़ न,
छुख च़ु चेतन स्वरूप परमु आनन्द। श्रावनी,
नीलि उत्पलु पोशि दिपनी सोंस वुष,
शूबायिमान बैथि ज्ञान तु आनन्द।
शिवस छुख आराधिनी जगतस बड़ावान,
ज्ञानु क्रिया रूपु तनु बारि किन्य।
नमस्कार आंसिनय तथ कथ ताम्य तीज़स,
सांविनय मुहस अन्दर अनान च़ु यैमि किन्य,
(२)

तुङ्ग गुञ्जाहार स्तनभर नमन्मध्यलतिका,
मुहुर्मुहुर्घर्माम्भः कणा पुलकित नीलोत्पलरुचम्,
शिवं पार्थत्राणप्रवणमृगयाकार पुलकितं,
भवानन्वग्यान्तीं शवरमहं सन्दवेमि शबरीम्॥
(३)

ارتس رچھنے تس شیوس پتہ پتہ

ہورت شکاری روپ لیس ترے آسون

تتھ شکاری یس روپس ہی ماج اوانی

گلی گنڈتھ چھیی کن آمت چھیپہ شرن ۔۳۔

रच़ु फोल्य हार छँ नॉल्य तनु क्यारि बेस्तरुम,
मॉखुल कमर मुख छँ मॉज़ शुबान।
कॉटिमुति मुनु सूत्य गुम छैंय छै सुवसुन्य,
नीलि उत्पल पोशि रंगु चमकान।
अर्ज़ुनस रछिने तस शोंत्स पतु पत,
ह्यरमुत शिकॉरि रूप मुख छँ आसुवुन।
तथ शिकॉरि बःयि रूपस ही मॉज भवॉनी,
गुल्य गॅन्डिथ छेय कुन आमुत हुमय
शरन॥ ३॥

—०—

मिथः केशाकेशि प्रथन निधनास्तर्क चटुला,
बहु श्रद्धा भक्ति प्रणय विषयाश्चास विपदः।
प्रसीद प्रत्यक्षी भव गिरिसुते! देहि शरणं,
निरालम्बं चेतः परि लुठति पारिप्लवमिदम्॥
(४)

وٕہَس کرٕونی چھی مَس کڑان اَکھ اَکِس
لٔڑۍ لٔڑۍ تِمَن پَتہٕ چھُ ناش سَپدان
سۭتھا پوٚرُش بَکھتی کِنۍ تہٕ پریم کِنۍ
شرادایہ کِنۍ چانۍ پوٗزا کران
ہی ماج پرکَٹ بَن اَسہِ پیٹھ پرسَن بَن
سنتوشٹ بَن اَسہِ روز بچاوان
اَسہِ چھہِ ژنۍ ژَل مَنہٕ سوٚس تھَپ روٚستے
تھپ کَر اَسہِ ماج نَتہٕ چھہٕ ڈُلہٕ گَرٕ شان -(۴)

व़हस करवुन्य छी मस कड़ान अख अंकिस,
लंडय लंडय तिमन पतु छु नाश सपदान।
स्यठा पोरुष वंस्की किन्य त प्रेयसु किन्य,
श्रदायि किन्य चांन्य पज़ा करान ।
ही मांज प्रकट बन असि प्यठ प्रसन्न बन,
सन्तोष्ट बन असि रोज़ बचावान ।
असि छि च़न्यच़ल मनु सोंस थपु रोंस्तुय,
थफ कर असि मांज नतु छि डुल गछान॥
(4)

स्नानं वा बह्वेवाँ स्वपरिवृढो वा यदशनं,
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति
अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहि ममाहाय वपुषि
प्रपद्येथाश्चेतः सकल जननीमेव शरणम् ॥
(५)

ہی منہ تھۄ شریرس سیتھ نہ ایشار
چھے خوراک یہ آگ یا تہی کھیوان
کیمہ وقتہ کتہ پیہ لیچھ یا تہی کیہ ملیکھ
پیٹہ یہوتھ شریر کس چھہ نہ زانان
میانہ منہ گژھ شرن زگتچہ ماجہ کن
شریرچ ممتا کونہ ژ [illegible] ترواوان (۵)

ही मन यथ शरीरस पथ न छिबार,
छुय खोराक ति अनुक या पंछ्यव ख्यवान,
कमि वक्त कथ [illegible], किथु पांट्य कमि तीलु,
पाये यथ शरीर कर कांह नु ज़ानान ॥
म्यानि मनु गछ़ु शरण ज़गतुचि माजि कुन,
शरीरुच ममता कोनु चु जल्द त्रावान ॥५॥

—०—

अनाद्यन्ता भेद प्रशंसि [illegible]

शिवस्यासीर्यस्त्वं परिणयविधौ देवि! गृहिणी,
सवित्री भूतानामऽपि यददभूः शैलतनया,
तदेतत्संसार प्रणयन महानाटक सुखम् ॥६॥

آدِ اَنتہ رۄس بییہ بید رۄس پرٛیہ سۄروٗپ
آسِتھ تہ چھکھ شیوس تٕنز پرٛتھمہ روٗپ
ولواہہ ویٚدی کنٛی ہی دلوی چھکھ
تَس مہادیوس تٕنز گرٛہستی روٗپ
ہی ہمالہ پُتری جیوٗن کران زٕ پادٕ
سَمسار لیلا چھہ چون جشنہ روٗپ (۵)

आदि अन्तु रोस बेयि बेदु रोस प्रेयि स्वरूप,
आंसिथ ति छख शेवु सन्ज़ प्रथमु स्वरूप।
न्यवाह वेंदी किन्य हौ दौवी छख ;
तस महादेवनु सुन्ज़ गृहणी रूप।
ही हिमाल पुत्री जीवन कारान ज़ु पांदु,
सम्सार लीला छि चोन जशनु रूप ॥6॥

श्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति! सदन्ये विदुरस-
त्परे मातः। प्राहुस्तव सदसदन्ये सु[illegible]।

परे नैतत्सर्वं समभिपद्यते देवि! सुधिय-
स्तुदेतत्स्वन्मायाविलसितमशेषं ननु शिवे॥
॥ ८ ॥

ہی دیوی کینٛہہ چھی وَنان ژےٚ تتو رُوپ
کینٛہہ چھی وَنان سَتھ کینٛہہ اَستھ رُوپ
کینٛہہ چھی وَنان تھدٕ کھوتہٕ تھوٚد سوٗرُوپ ماج
کینٛہہ دانا وَنان سَتھ اَستھ رُوپ
کینٛہہ چھی وَنان اَنِرواچیہ ژٕ آسیہٕ وُن
کینٛہہ وَنان یہ سوٗرُسے چھُےٚ چون پھولنہٕ رُوپ

ही दीवी केंह छी वनान च़ें तत्त्व रूप,
केंह छी वनान सथ केंह असथ रूप।
केंह छी वनान थदि खोतु थोद स्वरूप मांज,
केंह दाना वनान सथ असथ रूप।
केंह छी वनान अनिर्वाच्य च़ु आसवुन,
केंह वनान यि सोरुय छु चोन फोलनु रूप॥
(7)

—o—

ाि कोटिज्योतिर्द्युति दलित षड्ग्रन्थिगहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टि वपुषा।

किपट्यघुमिंघ्रसिरञ सदृली मूल ननाशी,
मदेधाम श्यामसुन्दरजलं व्योरफ़ानन ॥
(७)

گور و زلیہ ستھان جاگی دِنی ++
گنیشن ژئین ژٹھ چھکھ آران
سوادار ژکرس بیٹھ تو ہ نیران
امرِیتھ ورشن سوٚن دُوہ گوٚو سان
۸ کلا رُوپہ ژگتھ وِکیپ رِکھ ++
تنہ بار ئمیتھ کیشن ژٹ ہمکان
تتھ شامہ رُوپس ہی آنچھ لوٚگی
[illegible] روز ستیو کرران (۸)-

कोरु [illegible] [illegible] [illegible] दिपली,
कोलिन्यन शोन [illegible] [illegible] [illegible] अरान।
स्वादार चक्रस बेथि [illegible] [illegible],
अमरथ वर्षण स्वरूप [illegible] [illegible],
३८ कला रूप ज़गथ वैकासोविथ
तनु बारि नमिथुय [illegible]
तथ श्यामु रूपस [illegible] [illegible] चमकान।
[illegible] [illegible] [illegible] साज बनावी
ज़ुहा ब सीवा करान ॥ ८॥

चतुष्पत्रान्तः षड् दलभव पुटान्त स्त्रिवलय,
स्फुरद्विद्युद्वह्नि द्युमणि नियुताभद्युतियुते।
षडश्रं च भित्त्वादौ दशदलमथ द्वादशदलं,
कलाश्रं च द्व्यश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते॥
(९)

چتُش دَلہ کَملہ منٛز نیٖرِتھ شٹھہ دَلس
ترٛکونس منٛز ساڑٕ ترٛے وار سرپاکارس
ژُزلہ چمک زن ساسہ بُدٕ سترِ ییٚ زن
تیٚ دِتی کُنٛڈلنی شکتی ژٕ چمکان
شٹھہ دَلہ ترٛاوِتھ دَشہ دَلہ پتہٕ دٕوادَشہ دَل
پتہٕ شوڑشہ دَلہ پیٹھہ چیٚھ یمہٕ آن
دُہ دَلہ منٛز وٲتِتھ شِوس نِش وٲتِنی
ہا گرِی کوٚرُس تس سۄ ورُے پنٕس تیٚمسٕ کارہ کرٲن ((۹))

चतुशदलु कमल मंज़ नीरिथ षठ दलस,
त्रिकूनस मंज़ साडुत्रिवार सरपाकार।
वुज़मलु चमक ज़न सासु लेछ सिर्यियज़न,
शक्ती कुन्डलिनी तंती छु चमकान ॥

षठदल् रटिथ दशिदल् पत् द्वादशदल,
पत् षोडषिदल् प्यठ छि नेरान।
द्विदल् मन्ज़् द्रामुच् तस कुन्डलिनी,
ही गिरजी कुस तथ स्वरूपस नमस्कार
करान॥९

कुलं केचित्प्राहुर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः,
परे तत्सम्भेदं समभिदधते कौलमऽपरे।
चतुर्णामप्येषामुपरि किमऽपि प्राहुरपरे,
महामाये। तत्त्वं तव कथमऽमी निश्चिनुमहे॥
((१०))

کینژہ گیانی وَنان ژِٕ ۳۶ تتوٚ روٗپ
کینژہ گیانی وَنان ژِٕ پرمیشور روٗپ
کینژہ وَنان چھی ماج شیو شکتی روٗپ
کینژہ وَنان امہ کھوتہ تھوٚد چھُ چون روٗپ
کینژہ وَنان تھدِ کھوتہ تھوٚد گُستانی سوٚروٗپ
ہی مہا مایا کتھ پاٹھی بنہِ اسہِ نِشچے
کُس ستا اَولگ چھُ چون ماج سوٚروٗپ
((۱۰))

कैंह ज्ञांनी वनान च़ें 36 तत्वरूप,
कैंह ज्ञांनी वनान च़ें ब्रह्म शैव रूप।
कैंह वनान छी च़ें मांज शिव शक्ति रूप,
कैंह वनान अमि खोत् थोंद छु चोन स्वरूप।
कैंह वनान थदि खोत् कुस्तान्य रूप,
ही महामाया किथु पांठ्य बनि असि निश्चय।
कुस सना अलौकिक छु चोन मांज स्वरूप॥
((10))

षडध्वारण्यानी प्रलयरविकोटि प्रतिरुचा,
रुचा भस्मीकृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम।
वितन्वानः शैवं किमपि वपुरिन्दीवररुचिः,
कुचभयामानम्रः शिव पुरुषकारो विजयते॥
((११))

شتہ وَتہ سۆس حبنگل پژلے کالس پیٹھ
کرور دِپتی سۆس ژ پرزلان
پینہ پنُن نکھتین ہیم چانین ژ زنُن
پیچھ تخقوان مستنگ ٹھیکہ تمن رچھان
شۆپُشنز کوستانی سۆروپ ژ دِپتی سۆس

گیان کریا شتہ بارِ کتھ تہِ تنو بان
شتھ سُتر پور رشہ کار چِکس آج تہِ سو
تھی شکتہ رالسِ حجس تہ پرنام کران (۱۱)

शिवसि सोस जंगल प्रलय कालस प्यठ,
करीर दिपती सोस चु प्रज़लान ।
पनुन्यन बंख़्रयन विम चान्यन चरणन,
प्यठ ध्यान मस्तक कुल तिमन स्कान ।
शिवु सुन्ज़ कौस्तान्य स्वरूप चे दीपती सोंब,
ज्ञान, क्रिया तनुशरि नैमिष चे शूलान,
शिवु सुन्ज़ पोलषकार कुल संज चु आसुवन्य,
तथ्य शक्ती रूपस छुस चे प्रणाम करान॥

(11)

प्रियङ्गु श्यामाङ्गीमरुण तरङ्ग किसलयां
समुन्मीलन्मुक्ताफल बहुलनेपथ्य कुसुमाम्।
स्तनद्वन्द्वस्फार स्तवकनमितां कल्पलतिकां,
सकृद्ध्यायन्तस्त्वां दधति शिव चिन्तामणि-
पदम् ॥१२॥

سکرے پوشہ پاٹھ شاپ سونر رشیہ

دوپہِ وتھ چھکہِ دارا آئی ٭ ٭ ٭ ٭

چھوٚل میٚژ وچھ پیٚتھ پیٚشہ لیاس سوٚس

ترو باز تُلہِ تِہ شوٗ ناوی

ژ دلی تھکہِ پُھلہِ پھٚٹہ آسہِ چھوٚر

لیٚر اکہِ جون دیشان دارا آئی ٭

سہٖ تھوٚو دلی جنتا من ترت

چانہِ دیاہ تہ ژھ پساوناوی ـ (۱۴)

पिंगु पोशि पोंहुथ श्यास्, सेन्दर शोरु लौंद:

सोरुख वस्त्र कुरुथ नु दारोनी ।

फोंल्गुनि मोरुकु बेथि गोशि शिचारु लौंस,

तन खारि नेमिथुय नें शूबोनी ।

ही दीवी छुख नु करूर् थेर आसुहन्य,

कुस अकि लटि चौन दान दारोनी ।

सुय शीचि हृषी चिन्तामन रत्न,

चानि दयायि किन्य छु प्रावोनी ॥ १४ ॥

प्रकाशानन्दास्यामविदितचरीं मध्य ... ,

प्रवीशौ तद्द्वन्द्वं रवि शशि समाऽख्यं कवलयन्।
प्रविश्योर्ध्वे नादं लय दहन भस्मीकृत कुलः,
प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमङम्ब प्रविशति॥
(२३)

گیانہ کِنہٕ کرِیایہ کِنہٕ پھیرِتھ سُشُمنا
اَندر اَژِتھ دوشَونی گراس کران
اُرد ناد٘س اَژِتھ ژٕھیتھ وبھیرشہٕ اَنگنہٕ کِنہٕ
سارِنی چکرن بَسم چھ کران
تمہٕ پتہٕ چانہٕ اَنُگرہہٕ کِنہٕ سادک
اَوِناشہٕ شِوپدس پیٹھ چھ واتان- (۱۳)

ज्ञानु किन्य क्रियायि किन्य फीरिथ सुशमना,
अन्दर अंचिथ दोशवुनी ग्रास करान।
उर्द नादस अंचिथ च्यथ व्यमर्श अंगनु किन्य,
सारिनुय चकरन बसम छि करान।
तमि पतु चानि अनुग्रेह किन्य सादक,
अविनाशि शिवु पदस प्यठ छि वातान ॥13॥

षडाधारावर्तैरपरिमित मन्त्रोर्मिपटलै-

श्चलन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद् दैवतझषैः।
क्रमस्रोतोभिस्त्वं वहसि वरनादाऽमृत नदीं,
भवानि! प्रत्यग्रा शिवचिद्ऽमृताब्धि प्रणयिनी॥
((२४))

۶ چکر آولنہ نشہ منتر ملکو نشہ
مدرایی کفہ نشہ ییلہ ژ نیران
کرم روپہ گاڈو نشہ کرمکہ دئیی یاو نشہ
پرناد امرتھ روپہ ییلہ چھکھ وسان
ہی ماج واتان چھکھ نوس دئیی یاوس
شو روپہ ژیتہ سودرس منز ژ روزان
(۱۴)

6 चक्र आवलनि निशि मन्त्र मुलकव निशि,
मुद्राई कफि निशि यैलि च़ु नेरान।
क्रमे रूप गाडव निशि क्रमकि दंर्ययाव निशि,
परनाद अमृत रूप यैलि छख वसान।
ही मांज वातान छख नोविस दंर्ययावस,
शिव रूप च्यतु सोंदरस मंज़ च़ु रोज़ान॥
(14)

महीपाथो वह्निश्वसनवियदात्मन्दु रविभि,

वपुर्भिर्घस्तांशौरऽपि तव कियानऽस्त्व।
महिमा।
अमून्यालोक्यन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतर-
मऽवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योम
वपुषि॥१५॥

پرِتھوی، جل، اَگن، والو تہٕ آکاش
سِریہ، ژٔنٛدرمہ، بیٚیہ ژیو آتما
اَمشہٕ کِنۍ بناو متھی چھی ژٕۓ پانے
کوتاہ چھُ ماج بوانی چون مہِما
چانِس پرمہ آکاشکِس سۄروپس
منٛز چھینہٕ یِم تہٕ کُنہٕ وۄجودس یِوان (۱۵)

पृथ्वी, जल, अंग्न, वायू तु आकाश,
सिर्यि, चन्द्रमु, बेयि जीव आत्मा,
अमशव किन्य बनांव्यमुत्य छी चे पानय।
कोताह छु मांज भवांन्य चोन महिमा,
चानिस परमु आकाशकिस स्वरूपस,
मंज़ छिनु यिम ति कुनि वोजूदस यिवान॥

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोकत्रयमिदं
भवाम्भोधौ मग्नं त्रिगुण लहरी कोटिलुठितम्।
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम्॥
(९६)

منش، چارواے تہ دیو ترلوک
سمسار سۆندرس منز چھِ پھٹیمتی
شریر بز ستو رج تمہ لہرن منز
ترگن مُلکن منز ڈلہ چھِ گامتی
یودوے یِمن منز کانسہ چھون کرناکھ
ہے ماتا سہ زلہ اکھ چھہ وابان
پرمانند کس سۆرولین چھُس جلد
(۱۵) پرمیہ دیابہ چانہ کنہ چھُ پراوان

मनुष्य, चारवांव, तु देव त्रियलूकं
सम्सारु सोंदरस मंज़ छि फट्य मुत्य।
शरीर बज़ु सथ रज तमु लहरन मन्ज़,
त्रिगोण मुल्कन मंज़ डुल छि गामुत्य।

वोद्वय यिमन मंज़ बनि कांसि चोन कटाक्ष,
हीमाता सु ज़ीव अद छु वातान।
परमानन्दुकिस स्वरूपस छु जलदुय,
परम पद दयायि चानि किन्य छु प्रावान॥
(16)

कलां प्रज्ञामऽद्यां समयमनुभूति समरसां,
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथाम्।
प्रमाणं निर्वाणं परममतिमूलं परगुहां,
विधिं विद्यामाहुः सकलजननीमेव मुनयः॥
(१७)

ہی زَگت ماتا مُنیشورن چھ زِیہ وَنان
کِرِیا، بود، آدِ انُوبَو سمتا
گورِ پرم پَرا وِینے وۆپدیش شِوکتھا
پرمان، نِیرمان، پرتِبکِش تہٕ اَنُومان
رِتسُنیہ، گیان، مزی یادا بیۆہ وِدیا شکتی
زَگت ماتا چانی سۆروٗپ پانٛژ وَنان (17)

हीं ज़गत माता मुनीश्वर छि ज़ेय वनान,
क्रिया, बोद, आदि अनुबव समता।

गोरु परमपरा विनय वोपदीश शिवकथा,
प्रमान, स्थर्मीन प्रत्यक्ष तु अनुमान ।
रहस्य, ज्ञान, मर्यादा, ब्यथि विद्याशक्ति:
ज़गत माता चानी स्वरूप विस ज़ान ॥ (१७)



प्रलीने शब्दौघे तदऽनुविरते बिन्दु विभवे,
ततस्तत्त्वे चाष्ट ध्वनिभिरऽनुपाधिन्युपरते।
श्रिते शाक्ते पर्वण्यनुकलित चिन्मात्र गहनां,
स्वसंवित्तिं योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम् ॥ (१८)

اَشِد سمُوِد رُکاوِتھ نیتہ بیشِد ویُو گالتھ
نیتھ گیان ژِتھ آکاشس شرلیں کرِتھ
تتھ وِس سیٹھ آتمہ سوٗرؤلیس وو یادِ رَٹیس
تادِ نفیہ پیٹر آمرہ نبس منتر رُکاوِتھ
شَگفتہ بارنگ آشتریہ چھیم رَٹان
ژِہنتی مانزِ رہشیہ تم ویمرش کران
سایاوِک شیوِ سوٗرؤپس تم پراوان
تھڈِس شیوِ سوٗرؤلیس تم ستھاد کران (١٨)

शब्द समूह रुकांविथ पनु ब्यन्दु ब्यबू गोलिथ,
येंह्नु ज्ञान च्यथ आकाशस मंज़ लीन करिथ।
तत्वस् प्यठ आत्म स्वरूपस् थोपाह्नि रेय्यतिस,
नाद रूपु पर अनस्थतस मंज़ रुकांविथ।
शक्ति मा्नुक आनन्द छु तिम रटान,
देवन मा्नुक रहस्य तिम छ्यनशी करान।
स्वाभाविक शिव स्वरूपस तिम जानान,
थोदिस शिव स्वरूपस तिम स्वाद करान॥

(३४)

परं ब्रह्माकारं निरवधिच चित्रैश्वर्यं वपुषं-
निराकार ज्ञानं प्रकृतिमडमलंकिंचन करणम्।
शक्तिं शोधनां निरतिशय धामास्पदपदां
सत्तानां शाश्वत् मयं भवतु भवितावि भवतां नः॥

(३५)

تس برابرے چھے موکھیہ یا سمسار
یُس کُنہ رُوپہ چانی سیوا کران - (१९)

हदु रौस परमानन्द रूप सोन ध्यान,
शैव ऐश्वरी रूपु यस मानान।
न्यर विकार ज्ञानु सौंस हदु रौस दया रूपु,
ज़ीव पांदु करवुन युस च़ु मानान।
तस बराबरुय छुय मोक्ष या समसार,
युस कुनि रूपु चांन्य सीवा करान॥ १९॥



जगत्कायेकृत्वा तमऽपि हृदये तच्च पुरुषे,
पुमांसं बिन्दुस्थं तमऽपि परनादाख्य गहने।
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदऽपि परमानन्द विभवे,
महा व्योमाकारे! त्वदऽनु भवशीलो विजयते॥
(२०)

ژگت کایایہ منٛز چھکھ ہردے ژ آسہِ وِنی
ہردیس منٛز چھکھ آتمہ دلو رُوپ
آتمہ شکتس منٛز بِندو ژ چھکھ
بِندُس منٛز چھکھ پرٛ ناد رُوپ

نادس منز گیان روٗپ چون آسوٗن
گیانس منز پرماننٛد ویٚنو روٗپ
ہی زگت ماتا جے کار تسمنے
یم کرن چون انوبو مہا کاشہ روٗپ (۲۰)

ज़गत कायायि मन्ज़ छुख हृदय त्रु आसुन्य,
हृदयस मं॰ छुख आत्म दे रूप।
आत्म पीरब्रह्म मंज़ बिन्दु छु ठीकिथ,
बिन्दुस मन्ज़ ज्ञान रूप चोन आसवुन।
नादस मन्ज़ ज्ञान रूप चोन आसवुन,
ज्ञानस मन्ज़ परमानन्द वेनू रूप।
ही ज़गत माता जयकार तिमनुय,
यिम करन चोन अनुबव महा काशि रूप॥ (२०)

विध्ये विद्ये वेद्ये विविध समये वेद जननि,
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वे॰, गुलिके॰
शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदवदान्ये शिवानं॰,
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमाम्॥
(२१)

ہی کریاشکتی، گیان شکتی قسم قسم

سدانت آکار روپہ ہی وید ماتا

ہی وچتر روپی چھکھ ژ جگتچ آدی

وینیہ کینہ ژ پراوانی ویدچ سار

شیو اگنیایہ ہنز ژے سونہ روپی

شیو پد دوان ژے ہی ماتا

سوکھک خزانہ چھکھ اسرنے ژے ہی مانج

بے حد بکھتی دتہ ژے ہی ماتا!۔(۲۱)

ही क्रिया शक्ती, ज्ञानु शक्ती कुस्मु कस्मु,
सिद्धान्त आकार रूपु ही वीदु माता।
ही विचित्र रूपी छुख चु जगतुच आद्य,
व्यनयि किन्य चु प्रावानी वीदुच सार॥
शीवु आंगिन्यायि हुन्ज़ चुय सोनावु रूपी,
शीवु पद दिवान चुय ही माता।
सोखुकुय खज़ानु छुख असुरुन्य चु ही मांज,
बे हद बख़्ती दित चे ही माता॥ (21)

विधेर्मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले,
हरि शूल प्रोतं यदऽगमयदंसाऽऽभरणताम्।
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब। गिरिश:,
शिवस्थाया: शक्ते स्तदिदमऽखिलं ते -
विलसितम्॥२२॥

برہما سُنٛد کلہٕ الگ کٔرِتھ تتھ کلس
پننے اَتھک پاتر بناوِتھ
پننے پھیکہِ کرِ بنووُن زیور
نارائن تہٕ شولس پیٹھ وُلِتھ
شوُن کھٔنہ شیٹھہ زہر کِتھ تیمۍ تھون
ہٲرٕ لیُس پننے شوٗبہٕ رووُن
شوُرِس پیٹھ ٹھیکہٕ آمیہ شکتی ہٕند
(۲۲) یہ سورُے چھونے وِلاس چھہ آسوُن

ब्रह्मा सुन्द कलु अलग कॊरिथ तथ कलस,
पनुने अथुक पात्र बनाविथ।
पनुने फैकिलुय बनोवुन ज़ेवर,
नारायन त्रिशूलस प्यठ वुरिथ।

सरुत्, खोत्, सरुतुय जोहरुकि-न्ब्रह्म-तंम्य शिवन,
होंट युस पनुनुय ख़ूबरोवुन ।
शिवस प्यठ ठेकिमुत्रि अमि शक्ती हुन्द,
यि सोरुय चोनुय व्यलास हु आसवुन ॥
(२२)



विरिञ्च्याख्या मातः! सृजसि हरिसंज्ञा त्वम-
वसि त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वरदशाम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनी,
त्वमेवैकाऽनेकाऽवसि कृतभेदैर्गिरिसुते॥२३॥

برہمانادِ کنی کراں پاد ترٕ لوکی
نارایِنہ نادٕ کنی چھکھ تٕ ترتھ رچھان
رودرٕ نادٕ کنی چھکھ تٕ سے کراں سمہار
ایشر دشا چھکھ تٕ سے داوان
سدا شیو نادٕ کنی زگتس دوار سوکھ
پاشن مشدی شمہوہ تٕ سے گا
ہی ہمالہ پُتری تٕ سے کتی آستہ
[illegible] شیرٕن کا پچھ تٕ سان -
(۲۳)

ब्रह्मा नावुकिन्य क्रोन छु पांदु ग्रेयलूकी,
नारायणु नावुकिन्य छुख छु, तथ रछान।
रुद्र नावुकिन्य छुय छुख करान समुहार,
ईश्वर दशा छेख छुय दाबान।
सदा शिव नावुकिन्य जगतस दिवान सोख,
पाशान छुन्य समूह छुय गालान।
ही हिमालु कूरी छुय कुनी ओसिथ,
ब्योन ब्योन कार्यव किन्य अंनीख छु
बालान॥
(२३)

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायै रपि मनाक,
अशक्ये संस्प्रष्टुं चकित चकितैरऽन्त सततम्।
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरे,
कथं ते विन्दन्ति पदकिसलये पार्वति! पदम्॥
((२४))

ہی ماتا یم منیشور چھی منیہ کُو
گِلی ہیتو دو شو سوسی آسیہ ووُنی
تِم چھ کھوزی کھوزی باج جانِن یادِن
سزش کر لنس ستھ چھی نہ ہیکہ وِنی
سو باوِ کتھ کھنی پاسی پکی سے
وۄہ پپ لشپہ
جانن ژرشنن کتاں تل جاے پراون ((۲۴))

ही माता छिम मुनीश्वर छिय मनु क्थो,
गंव्य मुख्यव दूषस सोस्य आसवुन्य।
तिम ति खूच्य खूच्य मोंज चान्यन पादन,
सपॅदि करुनल प्यठ छिय नु यिकवुन्य।
ऑपनिशद सोंबावु, किन्य कठिन्य पोंठ्य
पांकिथुय तिम,
चान्यन चरनु कमलन तल जाय प्रावुन्य॥
((२४))



तडिद्वल्लीं नित्यामऽमृत सरितं पार रहितां,
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमऽगुण ग्रन्थि-
गहनाम्।
गिरां दूरां विद्यामऽवनत कुचां विश्वजननीः
म पर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो-
भगवतीम्॥२५॥

ووزلہ روپ اپار امرتھ ندی روپ
نیرملہ زٕندرمہ تہٕ گونا تھکہ روپ
وانی تٕہ دوٗر ژٕہے نقٕہ وِدیا سوروٗپ
گیان کرِتھ یاتہٕ توٗ نیتھ زگت ماتا روپ

چھی وَنان سَتھ زَن ہی دیوی چانٛۍ
یِم رۄُپ تہٕ بیٚیہِ اَننتہٕ لچھمی رۄُپ ((۲۵))

कुज़मलि रूप अपार अमरश्चतु नदी रूप,
न्यर्मल चंद्रस त्रगोणात्मक रूप।
वाणी निश्चि दूर छुय थज़ि विद्यास्वरूप,
ज्ञान क्रिया तनव निर्मित ज़गत माता रूप।
छी वनान सथ ज़न ही दीवी चांन्य,
यिम रूप त बेयि अनन्तु लछमी रूप॥
((25))

शरीरं क्षित्यम्भः प्रभृते रचितं केवलमिदं,
सुखं दुखं चायंकलयति पुमांश्चेतन इति।
स्फुटं जानानोऽपि प्रभवति न देही रहयितुं
शरीराहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते॥
((२६))

پرِتھوی، زَل، اَگِن، وایُہ تہٕ آکاش
چھُے یِمَن پانٛژ تَتَن شریر بنان
سُوکھ دُوکھ اَسِہ زانان پورِش چیتن

تۄ مُود پانٛی نہٕ اَسۍ اوٚنہٕ گژھان

ہی ہمالہ پُتری شریرک اہنکار
چھُنہ زیو چانہ اَنو گرٹھہٖ روٗز تس ترٲوان ۔((۲۵))

पृथ्वी, ज़ल, अंगन, वायु तु आकाश,
छुय यिमन पांचु बूतन शरीर बनान।
सोख दोख अस्युक ज़ानान पोरुष चेतन,
नोमुद पोठ्य ज़ीव अस्युक अनुबव करान।
ही हिमालु पुत्री शरीरुक अहंकार,
छुनु ज़ीव चानि अनुग्रेह, रोस त्रावान॥
((२६))

पिता माता भ्राता सुहृदनुचरः सद्म गृहिणी,
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति।
तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्धतमसं,
महाज्योत्स्ने मातर्भव करुणया सन्निधिकरी॥
((२७))

ہول ماج باے بنتھہٖ گرہٖ ہنی
شریر پُتر میٹر گرہِیہٖ ذنہٖ
بیٹھم وقت ترٲوتھ تم وقتہٕ یم
اتھ کار تس چل چل ژ موتی بن

تہاپر کاشِر رؤیہ کیٚن ننہ وۄیایہ کیٚن مان
نزدیک تُہنٛزِ تہ شمبُس کھسی بن - ((۲۷))

मोह मांज मांच बन्द नोकर तु ग्रेहणी,
शरीर पुत्र मेंत्र गर् बैयि दन् ।
यैमि वच्चु आवनम तमि वक्तु नय मुह,
अन्दकारस ज़लुद जलुद च्रुबन्य बन।
महा प्रकाशि रूप बंनिथ दयायि किन्य मांज,
नज़दीक तुहंदिस शम्भोस मैं बन ॥२७॥

सुता दक्षस्यादौ किल सकल मातस्त्वमुदभूः,
सदोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया।
अनाद्यन्ता शम्भोरपृथगऽपि शक्तिर्भगवती,
विवाहाज्जयासीत्यहह चरितं वेत्ति सकलः॥
(२८)

ہی زٕگت ماتا گوڈٕ سپٕدکھ آسکھ
دَکھ پرزا پتنی زٕنٛتھ کرٕ ماری
دۄشہٕ کیٚنہ زٕ وصلٕ ہتھ بیٚیہ زٕ تراوِتھ
پتہٕ بنیکھ ژٕ ہِمالہ کوری

آدی اَنتہٕ رَستی لٔیس تٔس شیوس لٔش چھکھنہٕ
زانہٕ تہٕ بیشوٗن ہی شکتی کنٛگوٗتی
ولیانہٕ روٗس دٕر دور رکھتَن ژٕ ییٚ سِتھ کر
تمہٕ پانٕی زیبہِ پترٕ کَستَی زانی - (۲۸)

ही ज़गत माता गोड्‌ यैति ऑसुख,
दक्षि प्रज़ापत् संज़ कुय कोमारी।
दूपि किन्य छुनथन सुय ज़ैय नांविथ,
पतु बनेयख चु हिमालय पुत्री॥
आद्य अन्तु रॅसितिस तस शिवस निशख्नु,
ज़ांह ति ब्योन ही शक्ती भगवंती:
ब्यवाह रैस वर दोरथन ज़ैय शंकर,
तिम चांन्य चरित्र कुस ज़ानी ॥ २८॥

कणास्त्वद्दीप्तानां रवि शशि कृशानु प्रभृतयः
परम्ब्रह्म क्षुद्रं तव नियतमाऽनन्द कणिका।
शिवादि क्षित्यन्तं त्रिवलय तनोः सर्वमुदरं,
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति॥
(२९)

ہی داوی ستری پہ ژندرمہ ہیٛیہٕ اگن

چانہٕ دِفتی ہنٛز چھ اکھ تیمبرا

پرم برہم چھے چانہٕ نیتہٕ آننٛدٕ منٛز

آسُن چھے اکھ لوکٹ ہشہٕ لشہٕ

شوناتھ سُنٛد پیٹھ پرتھوی تتوس تانی

سارنے ژٕ کُنٛڈلنی روٗپ روزان

آننٛدرٕ چھُ چون ماج بکھنتس چھکھ ژٕ ے

ہردیسٕ منٛز پٔرکھوٗ یا اچھی حمیکان - ((۲۹))

ही दीवी स्त्रियि चन्द्रमु बैयि अंग्न,

चानि दीफ्ती हुन्ज़ छि अख त्यम्बुरा ।

परं ब्रह्म छुम चानि नैत्यआनन्दु मंज़,

आसुन छुय अख लोकुट हिश लिश ।

शिवनाथ सुन्दि प्यठ पृथ्वी तत्वस तान्य,

सारिनुय चु कुण्डलिनी रूप रोज़ान ।

आन्दर छु चोन मांज बरुत्नेन छुख चुय,

हदयस मन्ज़ पेरमुत्य [illegible]॥

—(29)

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं,
त्वयैवेच्छत्यम्ब ! त्वमसि निखिला यस्य तनवः।
गतः साम्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम भवती,
तथाप्येवं हित्वा विहरति विश्वस्येति किमिदम॥ ३०॥

چانۍ کنۍ زانان چانۍ کنۍ بڑھان سُے
چانۍ کنۍ سُہ شِو زَگت چھُے بناوان
زُے دُکھ تَس سوَروُپ چانۍ کنۍ چھُے سُے
سامی باوَس پیٹھ واتان
چانے بڑھایہ تیلہ سُے چانِس
پرمہ آکاشَس منز لین سپدان۔ ((۳۰))

चांन्य किन्य ज़ानान चांन्य किन्य वढ़ान
चांन्य किन्य सु शेव ज़गत छुय बनावान। सुय,
सुय दुख तस स्वरूप चांन्य किन्य छुयसुय,
सोमी बावस प्यठ वातान।
चाने यढ़ायि तैलि सुय चांनिस,
परमु आकाशस मंज़ लीन सपदान॥ ॥३०॥

पुरः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं,
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकलमकुलं गुह्यमऽ-
गुह्यम्।
दवीयो नदीयः सदसदिति विश्वम् भगवती,
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनक्षोभ जननीं॥
((३१))

برُونٛہہ پتہ اَندر نیٚبر لوٗک بوٚڈ موٚٹ سوٗکھم
شو روٗپ شکتی روٗپ گُہیہ توٗ دروٗپ
دوٗر نزدیک ستہ اَستہ روٗپ یُس رنگت
تتھ سٕرشٹی سمہار تُہ کروٗ
زگتھ آگنیا کار زانہ پوان
((۳۱))

ब्रोंह पत अंन्दर् नेंबर् लूक बोंड मोंट सूक्षिम,
शिव रूप शक्ती रूप गु[illegible] रूप।
दूर नज़दीक सथ असथ रूपस [illegible] ज़गत,
तथ सृष्टीस्थिती समहार चु करवुन्य,
ज़गथ ओंग्न्याकार चु ज़ानुनु यिवान॥
((३१))

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्दीप्तिकलिकाः,
पयोधौ कल्लोलप्रतिहतमहिम्नीव पृषतः।
उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजैस्तात्त्विककुलै-
र्भजन्ते तत्त्वौघाः प्रशममनुकल्पं परवशाः॥
(३२)

سِریہ سنز کِرنہ زن، اَگنچ ٹیمبر زن
سمندرن ملکن ہنز پانئے چھکہ زن
تِتھے پاٹھی شوس پیٹھ پرتھوی تتوس تانْ
پرتھ کلپانتس وتھی وتھی لَے سپدان۔ ((۳۲))

सिर्थयि सुन्ज़, किरणु ज़न, अंगनुकि त्यम्बरि ज़न,
समन्दरन मलकन हुन्ज़ पानय छिकु ज़न।
तिथय पांच्थ शिवु प्यठु पृथ्वी तत्त्वस तान्य,
प्रथ कल्पान्तस वंथ्य वंथ्य लय सपदान॥
(३२)

विधुर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिरणुरात्मा दिनकरः,
स्वभावो जैनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमनिलः।
शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां,
विकल्पैरेभिस्त्वामभिदधति सन्तो भगवतीम्॥
(३३)

ژندرمہ، وِشنو، برہما بیٚیہ سِرِیہ

مایا، سوبھاو، مت، زیو تہٕ آتما

آکاش، وایو، شِو، شکتی یِم ناو

بید کِنہٕ ویدس یِم واتان

ستھ زن یِمو ناوو کِنہٕ بیٚون بیٚون

ہی ماج بوانی ژیٚے چھی سُمران ((۳۳))

चन्द्रम, वैष्णो, ब्रह्मा, बैयि सिर्यियि,

माया, स्वबाव, मत, ज़ीव त, आत्मा।

आकाश, वायु, शिव, शक्ती, यिम नाव,

बीद किन्य बीदस यिम वातान॥

सथ ज़न यिमव नावव किन्य ब्यौन ब्यौन,

ही मांज बवांनी चैंय छी सुमरान॥ ३३॥

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदययादैशिकदृशा,

षड्ध्वध्वान्तौघच्छिदुर गणनातीत करुणाम्।

परानन्दाकारां सपदिशिवयन्तीमपितनं,

स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवतीम्॥

॥ ३४॥

قدرتی دیایہ کنۍ گورٕ سُنز نظرِ کنۍ
یِم شکتی مارگس منز پرویش کران
تِمنۍ چھُ وتہ سٔوس سمسار اندکار
دیایہ کنۍ ہی ماج چھکھ ژُ گالان
پرمانندکۍ سوکھ دوان ژُ تِمنۍ
تِمے باگیوان ماج چھی ژٕ سے پراوان (۳۴)

कोदरती दयायि किन्य गोरु सुन्ज़ि नज़रि किन्य,
यिम शक्तिमार्गस मन्ज़ प्रवेश करान।
तिमनुय छ्यवति सोंस संस्सार अन्दकार,
दयायि किन्य ही मांज छ्ख च़ु गालान।
परमानन्दकुय सोख दिवान च़ु तिमनुय,
तिमय भाग्यवान मांज छी चे प्रावान ॥३४॥



शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी,
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादिर्गुणगणः।
अविद्या त्वम् विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं,
पृथक्तत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे॥
॥३५॥

ژے چھکھ شیو تے ژے چھکھ شکتی
ژے شمبھ تہ تتھ ژانہ ونی چھکھ ژے
ژے آتما چھکھ دوپدیش چھکھ ژے
ژے انیمادک اشٹہ سیدی ژے
ژے اودیا ودیا زگتک پدارتھ
ژے نشہ کانہہ تتو چھینہ اسی بیون زانان -(۳۵)

च़ुय छुख शिव तय च़ुय छुख शक्ती,
च़ुय शम्भ त, त्थ छुख ज़ानुन्य च़ुय।
च़ुय आत्मा छुख वोपदीश छुख च़ुय,
च़ुय अनीमादिख अष्ट सेदी च़ुय ॥
च़ुय अविद्या विद्या ज़गतुक पदारथ,
च़ैय निशि कांह तत्त्व छिन, अंस्य ब्योन ज़ानान

((35))

असंख्यैः प्राचीनैर्जननी जननैः कर्मविलया-
द्दते जन्मन्यन्ते गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम्।
आवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरऽपि त्वां विदितवान्
नयेयं त्वत पूजास्तुति विरचनेनैव दिवसान्॥
((36))

ہی ماتا اَسنکھیہ پرانٛن زٕمَن ہیٚنٛدی
کرٕم گلنہٕ کِنٛی وونٛی زٕنم پرٛاوِتھ ۔۔۔۔
گوٗروٗ شِو سوٗروٗپ لٮ۪وِتھ شکتی سوٗروٗپ پرٛاوِتھ
وارٕ پانٛٹھی مانٛج چون سوٗروٗپ زانِتھ
چانی تو تا تہٕ پوٗزا کرٕون بہٕ روز ہے
تہٕتھی سیٖتی ژھٕنہٕ بہٕ دِن دِن کٹاوِتھ ۔۔۳۶۔۔

ही माता असंख्य प्रान्यन ज़नमन हन्द्य,
कर्म गलनु किन्य वोन्य ज़नम प्रावित्थ।
गौरु शिव स्वरूप लॆबित्थ शक्ती स्वरूप प्रावित्थ,
वार पांछ्य मांज चोन स्वरूप ज़ानित्थ॥
चानी तोता तु पूज़ा करुन बु रोज़्हय,
तेथ्य सूत्य छ़नु बु दिन द्यन कटावित्थ॥ ॥ 36॥

यत् षट् पत्रं कमलं उदितं तस्य याकर्णिका-रुपा,
योनिस्तस्याः प्रथितमुदरे यत्तदोङ्कारपीठम्।
तस्मिन्नन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृत्तां,
श्यामाकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि॥ ॥ 37॥

سوادِشٹان تُرکرس منز شٹھ دل
پمپوش یُس چھُ ماج آسہ وُن
تتھ منز آسہ وُن یُس چھُ بیژک کوش
بیژ کوشس پیٹھ اونکارچ جاے
اونکارچہ جایہ پیٹھ واس کرہ وُنی
یوسہ کُنڈلنی چھکھ تتی ژ روزان
تسی شامہ سوندر مورتی دارہ وُنہ
زگت ماتایہ ژیے نیتھ بہ سمران (۳۷)

स्वादिष्ठान चेंकरस मंज़ षठ दल,
पम्पोश युस छुय मांज आसुवुन।
तथ मन्ज़ आसुवुन युस छु बीजुक कोश,
बीज़ु कोशस प्यठ ओंकारुच जाय।
ओंकारुचि जायि प्यठ वास करवुन्य;
योसु कुण्डलिनी छख तंत्य चु रोज़ान।
तंस्य शाम, सौन्दर मूरती दारवुन्य,
ज़गत मातायि चेंय न्यथ बे सुमरान ॥


((37))

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के,
सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका।
वहति कुचभराभ्यां या विनिम्राथि विश्वं
सकलजननि सा त्वं पाहि मामित्यवश्यम्॥
(३८)

پرتھوی، زل، اگن، وایو، آکاش
بریہ ژندرمہ یزمن یمن آٹھن
چھکھ کنی شکتی گیان کریا روپ
تنہ بارِ نمی چھے زگت ژے داروٗپ
سوے چھکھ ساری زگژ ژٕ ماتا
اوش پاٹھی رچھ ژٕ کر سون پالن -((۳۸))

पृथ्वी, ज़ल, अग्न, वायू, आकाश,
सिर्ययि चन्दरमु यंज़मन यिमन ओठन।
छख कुनी शक्ती ज्ञान क्रिया रूप,
तनु बारि नमि छुय ज़गत चु दारवुन्य।
सोय छख सारी ज़गतुच चु माता,
अवश्य पाठ्य रछ चु कर सोन पालन॥
((38))

ॐ

ध्यान

कालाभ्राभाम् कटाक्षैररि कुलभयदां-
मौलिबद्धेन्दुरेखां,
शङ्ख चक्रम् कृपाणं त्रिशिखमऽपि-
करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा-
पूरयन्ती,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिद[illegible]परिवृता
सेवितां सिद्धिकामैः॥

کالہ اَوبرکۍ پاٹھۍ شانہ رٔوسہ سوٗ سنٛدے، کتاکھتہ کنٛۍ دشمن
دٔلکس ہیتھ ژنٛدرس دوٗرِیت ششکہ ژٕکرہ تلوار ترشول اَتھن منٛز دارن کھیٚنۍ پیٚتھ نیرزان
ترٛے نیٚتر داپنۍ نٕہِش کھسِتھ ساری سیٚتۍ ترٛلوکس پٔنٕنہِ تیٚزٕ سۭتۍ پورناوان
دیان کرِتھ تس جےٚ ناوِ سٕیۍ درگا یتھ دلیوتمان سۭدی
یژھ وٕنِ سیوا ییٚس کرَان

میگھو ماہرشی بولے:- جب دیوی کے ہاتھوں مہشاسُر سینا سمیت مارا گیا تو اِندر
اور سب دیوتا پرسن ہوکر ساشٹانگ ڈنڈوت کرکے اِس پرکار بھگوتی کی
ستوتی کرنے لگے

काल, ओंबरुक्य पांठ्य शाम, रूप सोसतुय
कथाक्ष किन्य दुशमनन कुलज क्य दिवान,
ड्यकस प्यठ च़न्दरम दोरमुत शंख चक्र
तलवार त्रिशूल अथन मंज़ योसु दारान।
त्रे नेथुर दार वुन्य सहस खोलिथ सोंयतुय
त्रिलवनस पनुनि तीज़ पूरनावान।
ध्यान करिव तसजय नाव, सोस दुर्गायि हुन्द
देव नमान सेंदी यछुन सेवा यसु करान।
मेधा ऋषि बोले :— जब देवी के हाथों महिषासुर सेना सहित मारा गया तो इन्द्र और सब देवता प्रसन्न होकर साष्टांग डन्डवत करके इस प्रकार भगवती देवी की स्तुती करने लगे।

ऋषिरुवाच :—

ॐ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवः प्रणति नम्रशिरो धरांसा।
वाग्भिः प्रहर्ष पुलकोद्‌गम चारुदेहा॥ १ ॥

ہی دیوی ییلہ مأرِتھکھ ژٲے تِم دوشٹ
راکھس سینا یوس بلوان
وأنی کِنہ پرسن کٔرکھ ژٕ ئینِدرازن تہ
دیوو کٕلہ نومرأوِتھ کوٗرکھ ژٕ پرنام
ہرکٕنہ کِنہ تِمن رٕم رٕم تھود ووتلیہ
سوندر شریر سوس آسی تِم پرزلان ۔(۱)

ही दीवी येलि मार्यथक चे तिम दोष्ट-
राक्षस सैना योस बलवान ।
वांनी किन्य प्रसन्न करख चु, इन्द्राजन तु,
दीवव कलु नॊमराविथ कोरख
चे प्रणाम।
हरकि किन्य तिमन रुम रुम थोद वोत्लेयि
सॊन्दर शरीर सोस्य ऑस्य तिम
प्रज़लान॥

देव्या यया ततमिदं जगदात्म शक्त्या,
निश्शेष देवगण शक्ति समूह मूर्त्यां।
तामऽम्बिकामखिलदेव महर्षिपूज्यां,
भक्त्यानताःस्म विदधातु शुभानिसानः॥
(२)

ہی دیوی ژٕیے زَگت چھُے وِیاپِت
سوٗ ژٕے چانہِ شکتھی ستی چھُے شوبان
سارِنے دیوَن ہٕنٛز شکتھی ہٕنٛد سَموٗہ
چھُے ماج چٲنے سۄروٗپ آسِوُن
یَس کران چھ پوٗزا ساری دیوتا
بنیِہ وۄتمہ رِیٚشی آت
گِلی گنٛدِتھ چھُس کران پرنام تس
سوٗ ماج کرِ تَمن کلیان میٚون (۲)

ही दीवी छ़ैय ज़गत छुय व्यापत,
सोरुय चानि शक्ती सूत्य छु शोबान।
सारिनुय दीवन हुन्ज़ शक्ती हुन्द समूह,
छुय मोज चोनुय स्वरूप आसवुन।
यस करान छि पूज़ा सोरी दीवता
बंयि वोतम रेश तेमिस मोजिकुन।
गुल्य गंन्डिथ छुस करान प्रणाम तेमिस,
सोय मोज कंर्यतनम कल्याण म्योन।

- (२)

यस्याः प्रभावमऽतुलं भगवानऽनन्तो,

ब्रह्मा हरश्च नहि वुक्तुमऽलंबलं च ।
सा चण्डिकाऽखिल जगत् परिपालनाय,
नाशाय चाशुभभयस्यमतिंकरोतु ॥ ३ ॥

یمیٖ سُند پرباو چھُ حد رۆس آسہٕ وُن
بھگوان تہٕ شیشناگ چھِنہٕ ونِتھ ہیکان
برہما تہٕ شنکر چھِنہٕ تِم زٲری پاٹھی
طاقتہٕ سۆنٛسی مہماچوٗن زانان
سۆے چنڈی دیوی رٕچھِتَن مے
یوسہٕ ساری سے زگتس چھےٚ پالان
دِی تِم تِژھ شوٗد بوٗد سۆے دیوی
یمہٕ سٟتی اَشوب بےٚ ناش سپدان

(۳)
येम्य सुन्द प्रबाव छुय हद् रोस आसवुन,
भगवान तु शीशनाग छुन् वनिथ हेकान।
ब्रह्मा तु शंकर छिनु तिम ज़ेंव पाठ्य,
ताक्त सोंस्य महिमा चोन ज़ानान।
सोय चण्डी दीवी रेछ तनम में,
योस सारिसुय ज़गतस छै पालान।

दीतनम तिक़ शोब बोद्र सोय दीवी।
यैमि सूत्य अशोब बय नाश सपदान॥
(३)

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेषु लक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा-
तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि विश्वम्।
-(४)

باگیہ وان گرن منٛز لوٚسہ لکھشمی روٗپ
پاپی گرن منٛز لوٚسہ اَلَکھشمی
ستھ پوٚرشن شرٛدا کولہ پوٚرشن لزا
تشوٚد لوٚرشن بوٚد روٗپہ رواَنی
پالنا کرتہ ساری بہ زٕٹنس ماج
زٕبے چھےٚ گژھتہ پرنام کرانی -(۵)

बाग्यवान गरन मन्ज़ योस लछमी रूप
पापी गरन मन्ज़ योस अलछमी।
सथ पोरशन श्रदा कोल, पोरशन लज़्जा
शोद पोरशन बोदि रूपु रोज़ानी।

पालुना करतु ... सारिसुय ज़गतस मांज।
चेय कुरय गुल्य गंण्डिथ प्रणाम करांनी॥
(4)

किं वर्णयाम तव रूपमऽचिन्त्यमे तत्,
किंचाति वीर्यमऽसुर क्षयकारि भूरि॥
किंचाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि,
सर्वेषु देव्यसुर देव गणादिकेषु॥ ५॥

کیاہ کر ورنن چون سوروپ ہی ماج
یُس روٗپ چون آسہ وُن نہ سورانی
کیاہ کر ورنن چون بل تہ سامرتھ
یُس راکھسن چھ ناش کرانی
کتھ اُنہ لوٗر منز دانی ....
راکھس تہ دیو اشتر رس گرژھانی (۵)

क्याह कर वर्णन चोन स्वरूप ही मांज
युस रूप चोन आसुवुन नु सोरांनी।
क्याह कर वर्णन चोन बल तु सामर्थ,
युस राक्षसन छु नाश करांनी॥

कलि अनु बौज़ मंज़ चांन्य बड्य चरित्र,
राक्षस तु दीव आश्चरस गछांनी ॥5॥

हेतु समस्त जगतां त्रिगुणापि दोषैः
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरऽपि पारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतम,
व्याकृता हि परमाप्रकृतिस्त्वमाद्या ॥६॥

ساری زگتچ ہیتھ شکھ ژٕ ہی ماج
ترٛگُناتمک زگت لیٚس چھُ آسہٕ وُلن
نارٲینس شوٗس چھیٚنہٕ زانٕنہٕ لوٲن
ماتا چوٗن سوٗروٗپ لیٚش اپار آسہٕ وُن
حیانہٕ اَنشہٕ لیٚتس زگت چھُ ووپدیومُت
چونے آسرٕ لیٚتس چھُ آسہٕ وُن
آدہٕ برکرتی ژٕ چھکھ ہی ماتا نیر وِقار
تھدِ کھو تہٕ تھوٗد چوٗن سوٗروٗپ آسوُن (۵)

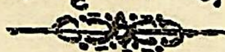
सारी ज़गतुच हीतो छख चु ही मांज,
त्रिगुणात्मक ज़गत लुस छु आसवुन ।

नारायनस शिवस छु ज़ानुन् यिवान,
माता चोन स्वरूप छुस अपार आसवुन।
चानि अंशि निशि छुस ज़गत छु वोपद्योमुत,
चोनुय आसर् तथ छु आस्वुन॥
आद्य प्रकृती च़ छख ही माता न्यरविकार
थदि खोतु थोद चोन स्वरूप आसवुन॥
॥६॥

यस्या समस्त सुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवी
स्वाहासिवै पितृ गणासि तृप्तिहेतुर
उच्चार्यसे त्वं अतेव जनैः स्वधा च ॥७॥

ییٚمۍ سٕندۍ ساری منتر پرنہٕ سیٖتی
یگنیا دِکن ترٛپتی چھ داتان
سوٚاہا شبد کِنۍ ہی دیوی ژٕ سے
دیوَن ترٛپتی ہیٚتھ کارٕن بنان
سوَدہا شبد کِنۍ ہی دیوی سارے
پِتر یوٚکن ترٛپتی چھے سیٚدان

यैम्यसुन्द्य सांरी मन्त्र परनु सूत्य,
यैज्ञादिकन तृप्ती छि वातान ।
स्वाहा शब्द किन्य ही दीवीं त्वुय,
दीवन तृप्ती हुन्द कारण बनान ।
स्वधुः शब्द किन्य ही दीवी सारिनुय,
प्यत्रु लूकन तृप्ती छय सपदान ॥१॥



या मुक्ति हेतुर अविचिन्त्य महा वृत्तास्त्वं,
अभ्यस्यस्ये स्वनियतेन्द्रिय तत्व सारै,
मोक्षार्थिभिर्मुणि भिरस्त समस्त दोषैः
विद्यासि सा भगवती परमाहिदेवी ॥
((८))

ژےٚ چھکھ موکھتی ہُند کارن ماج
ژےٚ ییژھ تتوٚ سادٕ سوّس نہ سیورنی
ہُند ریشیہ رُٹھتھ آسَن ییلہ ورتہٕ عتی
تیلہ ژاپنی ووپاسنا چھےٚ سیدآنی
تیلہ مۄکھی ییژھ وٕنی منیشوس ییم دوشہٕ رٕستی
چھیکھ تمَن ژہٕ ودیا رۄپ بھگوتی - ((۸))

च़ुय छ़ख मोरुती हुन्द कारण मांज,
च़ुय बडि तत्वु सारु सोंस नं स्वरनी।
यैं द्वैति रैटिथ आसन यैलि वृतु सोंस्य,
तैलि, वोपासना छें सपदांनी ।
मुख्य यछ़ुवुन्य मुनीश्वर यिम दूषि रंस्य,
छ़ुख तिमन च़ु विद्या रूपु भगवंती ॥४॥



शब्दात्मिका सु विमल र्ग्यजुषाम निधान-
मुद्गीथ रम्य पद पाठवतां च साम्नाम् ।
देवेत्रियी भगवती भवभावनाय,
वार्ता च सर्व जगतां परमार्तिहन्त्री ॥९॥

شَبدٕ رۄُپہٕ رِگ٘ھ، یَجُر، سامہٕ ویدٕک خَزانہٕ
ژٕرے پد، ژٕرے پاٹھ، ژٕرے پزٕلو رۄُپ
سَمسارٕ پالنا یہٕ پانٕژھ ہی دیوی
ژٕے آسہٕ وٕنی ژھیکھ ترٕلوے ویدٕ رۄُپ
زٕ گتٕک آرتٕ رٕ گالنہٕ پانٕژھ، ۓ ۓ ۓ ۓ ۓ
ژٕرے ژھیکھ آسہٕ وٕنی وارتا رۄُپ ۓ

शब्द रूप ऋक्, यजु, साम वीदुक खज़ानु।
चुय पद, चुय पाठ, चुय प्रनव रूप।
सुरसार पालुनायि बापथ ही दीवी,
चुय आसवुन्य रुख ज्ञनुनय वीद रूप।
ज़गतुक ओरचुर गालुनु बापथ;
चुय रुख आसुवुन्य वारता रूप॥



मेधासिदेवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारि हृदयैक कृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशि मौलिकृत प्रतिष्ठा॥
((१०))

ہی دیوی یُو شاسترن ہُنْد سار زون
چھکھ ژٕہی بوُدِ روٗپ ژٕ آسانی
دُرگا روٗپہ کِنی مُشکلس تارنی
سمسار ساگرس ژٕ ناو بنانی
لکشمی روٗپہ کِنی نارائنس ژھکھ
ہردیس منٛز ژٕے واس کرانی

گوری رۄپہ کِنۍ ژندرمہ نِشِ کلس
تَس شِوناتھس نِشہٕ ژٕ روزانی - ॥۱۰॥

ही दीवी यिमव शास्त्रन हुन्द सार ज़ोन,
छख तिमन बोद्धि रूप चु आसानी।
दुरगा रूप किन्य मुशकिलस तरनी,
सम्सार सागरस चु नाव बनानी।
लछमी रूप किन्य नारायणस छख,
हृदयस मन्ज़ छुय वास करानी।
गौरी रूप किन्य चन्द्रम यस कलस,
तस शिवनाथस निश चु रोज़ानी ॥10॥



ईषत्सहासममलं परिपूर्ण चन्द्र,
बिम्बानुकारिकनकोत्तम कान्ति कान्तम्।
अतियद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि,
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥११॥

پرٕ پوٗرن ژندرمہ نیرمل ژندر بمب ہیو
چون موکھ سونٕکی یا آلٕٹی وسِتن چمکہٕ وُن

آسہٖ وُن سوٗنٛدر ووتم موکھ چون
شوٗبایہٖ سوٚس آشٔرٕ کرٕ وون
حٔلس ڈٕلِ سٕہ موکھ وُچِتھ ہشا سوٕ رٕسے
یُس اوس رٔکھشَس کرٕ وُڈٕ کرٕ وون۔(۱۱)

पशि... ...म ...न्दुर ...ख्युव,
...न मोख सोनुक्य ... ...ओस चमकवोन,
अस्वुन सोन्दर वोत्तम मोख चोन,
शूबायि सोस आश्चर करवोन।
हास डेल्य सु मोख वुछिथ महिषासुरस्य,
युस ओस राछ्स्य कुद करवोन ॥ ११॥

दृष्ट्वापि देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमु-
धुच्छशाङ्क सदृशं च्छविरन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीवचित्रं,
कैर्जीव्यतेहि कुपितान्तक दर्शनेन ॥ १२॥

وُچھتھ تہٕ دیوی کرٕوٕد ستیہ بریھے
... ...

پرٛان ترٛاوی تمی وقتہٕ مہشاسورنے
کانٛہہ آشرٕ ژھینہٕ توتہ شپدان ۔
کُس روزِ زِندٕ ماج یتھ زٕگتس منٛز
ییلہٕ وُچھہِ سُہ مہاکال کرٛوٗدی نبان (۱۲)

वुछिथुय चु दीवी क्रुद्ध सूत्य बॊरिथुय,
वॊदयि सौस चन्द्रम् ज़न चु प्रज़लान।
प्राण त्रॊव्य तमी वक्त महिषासुरनुय,
कांह आश्चर कुनु तोति सपदान।
कुस रोज़ि ज़िन्द मांज यथ ज़गतस मंज़,
यॆलि वुछि सु महाकाल क्रूदी बनान ॥१२॥

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बल सुविपलं महिषासुरस्य ॥२३

ہی دیوی وودٕنی اسہ پیٹھ پرٛسن وَن ۔
ژھکہٕ پٹھ ماج آسہِ ونٛ سوتے کلٛشان

پیٚلہٕ ژھٕل شٔیدان کرٕ دی ہی ماج!
تیٚلہٕ چھُکھ یکدم کُلن ناش کران۔
مہِشاسورُن فوج ناشس واتنوو تھن
یُس فوج تَس اوس سٹھا بلہٕ وان-(۱۳)

ही दीवी वोन्य असि ठ प्रसन्न बल,
छुख च़ु मांज आसवुन्य सोनुय कल्याण।
यैलि छख सपदान कूप्टी ही मांज,
तैलि छुख यकदम कुलन नाश करान।
महिषासोरुन फौज नाशस वातनोवथन,
युस फौज तस ओस स्यठा बलवान॥ (13)

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदाराः,
तेषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥१४॥

شہرٕ ژنٛز ماج تمی سے چھِ ماُن ؛
دِنہٕ سمپدا یِہ سوٗس تم چھِ آسان ؛

تیمنے یَش ثُران دھرم تہٕ کرم گژھان
تیمنے دِنہٕ واد سارِی دِوان
وینیہ سوٗس تیمنے [illegible]، شتان، نوکر
زگتس منز ماج تم باگیہ وان
تیمنے ہمیشہ چھکھ ووٚدِیہ سوٗس روزان
یمن پیٹھ چھکھ ژٕ ماج پرسن سپدان (۱۴)

शहरन मंज़ मांज तमिस्य छि मानान,
धनु सम्पदायि सोंस तिस छि आसान।
तिमनुय यश बडान धर्म नु कम गछ़ान,
तिमनुय धन्यवाद सारी दिवान।
विनयि सोंस तिमनुय त्रुय, सन्तान, नोकर,
ज़गतस मंज़ मोज तिम भाग्यवान।
तिमनुय हमेशि छख वोदुयि सोंस रोज़ान।
यिमन प्यठ छख चु मांज प्रसन्न सपदान। (14)
धर्म्यरिा देवि [illegible] नि सदेव कर्मान।
अत्या: सुत: प्रतिदिन सुकृती करोति।

स्वर्गं प्रयाति च ततोऽपि भवत्प्रसादात्,
लोक त्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥१४॥

ہی دیوی یم پرتھ دوہہ چھی کران
دھرمچ کامہ بڈ آدر سان
سورگس کھسان تم چانہ انوگرٛہٕ سیتی
زگتس منز چھی تم بھاگیہ وان
نشچے کرتھ ماج ترن بونن منز
تژے چھکھ بوانی یس پھل دوان (۱۵)

ही दीवी यिम प्रथ दोह छी करान,
धर्मुच्चि कामि बडि आदर सान।
स्वर्गस खसान तिम चानि अनुग्रेह सूत्य,
ज़गतस मन्ज़ छी तिम भाग्यवान।
निश्चय केरिथ मांज त्रन बवनन मंज़,
चुय छुख बवांनी यस फल दिवान॥
(15)



दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र दुःख भयहारिणिका त्वदन्य :
सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता ॥ २६॥

ہی دیوی چانہ سُمرنہ زیوس
ساری بے چھیس ناش سپدان
وار پاٹھی یینلہ سہ کرِ چونے سُمرن
تیلہ چھکھ کلیاٖنچ بود ژٕ تس دوان
دارِدرِ باوٕ بے بینہ کٹھُن دۄکھ تہٕ غم
کُس سنا ژٕ یسے رۄس ماج دور تمن کران
وۄپکار چھکھ کران ہی ماج سارِنے
ہر ہمیشہ کوٗمل ژٕ ہتہ سۄس ژٕ روزان (۲۶)

ही दीवी चानि सुमरनि ज़ीवस ,
सारी भय छिस नाश सपदान।
वार् पाठ्य यैलि सुकरि च्वोनुय सुमरन,
तैलि छुख कल्याणुच बोद् च़् तस दिवान।
दारिद्र, बावु भय बेयि कठिन्य दौख तु ग़म,
कुस सना छै रोस मोज दूर तिमन करान॥

वोपुकार छुख करान ही मांज सारिनुय,
हर हमेशि कोमल दयथ सोंस चु रोज़ान॥
(16)

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते,
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु,
मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवी॥ १७॥

ژیرتام نرکس مشر روزنہ باپتھ
یم زیوت بڈا پاپھ ماج چھی کران
تہندی مارنہ سیتی ہی ماج لوانی
سورے تر لوکن سوکھ چھیہ پراوان
یم چھکھ لڑایہ منز ماران ژہی ماج
تم چھکھ سورگس ژ واتناوان
ہی ماتہ یوہے نشچے کرتھ چھکھ
ہی دیوی ستشرن ژ گالان - (17)

चेर ताम नरकस मन्ज़ रोज़न बापथ,
यिम जीव स्यठा पाफ मांज छी करान।

तिहुन्दी मारनु सूत्य ही मांज बवांनी,
सोरुय त्रिबवन सोख छु प्रावान ।
यिम छुख लडायि मंज़ मारान चु ही मांज,
तिम छिहख स्वर्गस चु वातनावान।
यी मोनिथ युहै निश्चय करिथ छुख,
ही दीवी शत्रन चु गालान ॥ १७ ॥



दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म,
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहीणोषि शस्त्रम् ।
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र पूता,
इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेष्व साध्वी॥ १८॥

چانہٕ دٕرشنٕی سیتی کیاز شیدیٕ نہٕ لسیم
سارٕنی راکھسن تہٕ بیئیہ دشمنن
مگر چھکھ ژٕ تراوان شستریٕ ما چھ
تیٚم آمہٕ شستی شود شیدان ژٕ
شود تیٚم واتن ییم تہٕ سورگ لوکس
یوہے ہنگار چھکھ تمن پیٹھ کران
-(۱۸)-

चानि दृष्टि सूत्य क्याज़ि सपदि्नु बसुम,
सारिनुय राक्षसन तु ब्यायि दुश्मनन।
मगर छुख चु त्रावान शस्त्रही मांज,
सुय यिम अमि सूत्य शोद सपदन।
शोदि, बनिथ वातन यिम ति स्वर्गलूकस,
योहय हेतुकार छुख तिमन प्यठ करान॥
(18)

खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः,
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्॥
(१९)

کھڑگہ دِفتی سمہٕ وٕ، کٕنڈٕنہ چمکہٕ ہنٛد سمہٕ وٕ
تہٕ شوٗلہ دِفتی سمہٕ وٕ لیٛس تٕرٕنہ چمکان
تٕرٕزانن چھےٚ چوٗنُے موکھ تیٚتھےٚ ہی ماج
راکھِسن تتھ سیٚتھ نظر چھنہٕ دران
ژندرٕ مہٕ ستھٕ شٕزری لوٗزن دِفتی سوٗس
ماج! تیٚتھُے چھےٚ چوٗن موکھ وُچھان- (19)

खड्ग दिप्ती समूह, कठिनि चमकि हुन्द समूह।
त्रिशूल दिप्ती समूह, युस छे चमकान ॥
प्रज़लान छुय चोन मोख स्युथुय ही मांज,
राक्षसन तथ प्यठ नज़र छुनं दरान।
चन्द्रमु सुन्ज़ी पूर्न दिप्ती यौस,
ही मांज स्युथुय छु चोन मोख बुज़ान ॥
((९६))

दुर्वृत्त वृत शमनं तव देवि शीलं,
रूपं तथैतदविचिन्त्यम तुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृहृतदेव पराक्रमाणां,
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥२०॥

خراب چلن ہی ماج چھکھ ناوان شانت
آسہ وُن یوہے چھے چونے سوبھاو
رُوپ چون آسہ وُن ہی ماج نہ سوپُنہ
چانہ رُوپک خد چھنہ کینْہہ لَتسیان
دلِیُن ناش گومُت یُسّ سارنئ
چھکھ تمن پور شارُکھ بڑاوان

شُتھرَن سیٹھ چھکھ ہی آج لوٰانی
دِیا یہ سوس تِمن دِیا پرکٹ چھکھ کران.
((۴۰))

खराब चलन ही मांज छुख बनावान शांत,
आसुवुन योहय छुय चोनुय स्वबाव।
रूप चोन आसुवुन ही मांज नस्वरुन्,
चालि रूपुक हद् छिनु कैंह लबान॥
दीवन नाशगोमुत युस सामरथ,
छुख तिमन पोरषारथ बडावान।
शथरन प्यठ छुख ही मांज बवांनी,
दयायि सोंस तिमन दया प्रकट छुख
करान॥४०॥

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य,
रूप च शत्रु भयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्तं कृपा समर निष्ठुरता च दृष्टा,
त्ययय्येव देवि वरदे भवन त्रितयेऽपि॥

کَس کرِ بَرابری تِتھ پانہ وِپر تایہ
چھون رُوپ شتھرن بےرُوانی

کُنہ حایہ چون رُوپ منوہر آسہ وُن ٭ ٭
دیایہ سوّس ہرد ے کُنہ حایہ چھکھ توانی ٭
لرّایہ مَنزِ رُوپ چون کٹھور مانج آسہ وُن
ترن لوکن چھکھ وَر دِوانی ٭ ٭ ٭ (۲۱)

कुस करि बराबरी मांज चानि वीरतायि,
चोन रूप ... रन लय दिवांनी।
कुनि जायि चोन रूप मनोहर आसुवुन,
दयायि सोंय हृदय कनि जायि छुख थवांनी।
लड़ायि मन्ज़ रूप चोन कठोर मांज आसुवु.
त्रन लूकन छुख वर दिवांनी॥ २१॥



त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन,
त्रातं त्वया समरमूर्द्धनि तेऽपिहत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तम,
ऽस्माकमुन्मद सुरारिं भवं नमस्ते॥
॥ २२॥

سارِنے دُشمنن لرّایہ مَنزِ ناش کرِتھ
بچاوتھ ژِ ہے ہی مانج ترِ لوکی ٭

ماری تھکہ راکھس لڑایہ منزی ماج
کھاری تھکہ ژےٚ سورگس ہی بوانی
ناش کورتھ دشمنن اسہ بے دور کورتھ
اسی ژےٚ ماتا گلی گنڈتھ پرنام کرانی - (۲۲)

सारि नुय दुशमनन लडायि मन्ज़ नाश करिथ,
बचांवथन चे ही मांज त्रैलूकी ।
मांरिथक राछ्स लडायि मज़ ही मांज,
खांरिथक चे स्वरगस ही बवांनी ।
नाश कुरुथ दुशमनन असि बय दूर कोरथ।
अस्य चे माता गुल्य गांन्डिथ प्रनाम करांनी। ((22))

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बके।
घण्टास्वने नः पहि, चापज्यानिःस्वनेन च॥ ((23))

پنے ترشولہ ستی رچھتہ اسہ ہی ماج
کھڈگہ ستی رچھتہ اسہ ہی ماتا
گنٹایہ شبدہ ستی رچھتہ اسہ ہی ماج
کمانہ شبدہ ستی رچھتہ ہی ماتا - (۲۳)

पनुने त्रिशूलु सूत्य रछत् असि ही मांज,
खड्गु सूत्य रछत् असि ही माता ॥
गन्दायि शब्दु सूत्य रछत् असि ही मांज।
कमानि शब्दु सूत्य रछत् असि माता॥
((२३))

प्राच्यां रक्ष प्रतिच्यां च, चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म शूलस्य, उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥
((२४))

پوٗرِ کنِہٕ رٔچھِتھ اَسہِ پچھِمہٕ کنِہٕ رٔچھِتھ اَسہِ
ہے چنڈی رٔچھ اَسہِ دٔکھِنہٕ کنِہٕ
پھیرناو ترِشول ژیٚن اَسہِ ژٕو باگو ہے ماج!
ہے ماتا رٔچھ اَسہِ وۄتہٕ برِ کنِہٕ (۲۴)

पूर्य किन्य रछत् असि पछमु किन्य -
रछत् असि।
ही चण्डी रछ असि दक्षणु किन्य।
फिरनाव त्रिशूल पनुन अंस्य च़ोपांर्य
ही मांज।
ही माता रछ असि वोतर, किन्य ॥२५॥

सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन्त घोराणि, तै रक्षास्मांतथाभुवम्॥
(२५)

سوندر روٗپ چانۍ ماتا یِم ژےٚ آسہ ونۍ
ترٚیلوٗکی منٛز پھیرانۍ
گوٗرٕ روٗپ، کٹھِن روٗپ یِم چانۍ آسہ ونۍ
(۲۸) تِموٕ سیتۍ اَسہ تہٕ پرٛتھوی رٛچھ ژوٕپارۍ

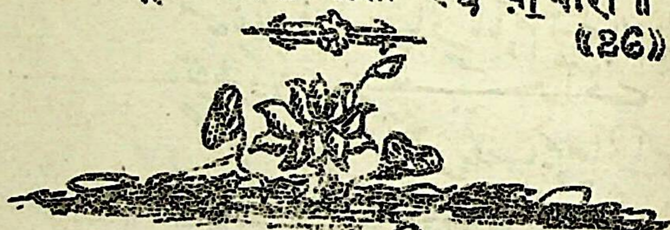
सौन्दर रूप चांन्य माता यिम चे आसवुन्य,
त्रैयलूकी मंज़ फेरांनी ।
गूर रूप, कठिन्य रूप यिम चांन्य आसवुन्य,
तिमव सूत्य असि तु पृथ्वी रछ चोपारी ॥२५॥



खड्ग शूल गदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके,
करपल्लव संगीनि, तैरस्मान रक्ष सर्वतः॥
(२६)

کھَڈگ، ترشوٗل پیٚشا دِیک یِم ژےٚ آسہ ونۍ
استر یِم ژٕ ماج چھکھ وارانۍ
پمپوشہ اتھن منٛز ژٕ تھِکھ چھکھ ژٕ ہی ماج
تمو سیتۍ اَسہ ماج رچھ ژوٕپارۍ

खड्ग त्रिशूल यैत्या चक्र यिम चै आसवुन्य,
अस्तुर यिम चु मांज छुख दारानी ।
पम्पोशि अथन मन्ज़ रैटिथ छखचुही मांज,
तिमव सूत्य असि माता रछ चोपारी ॥
(२६)



क्षमास्तुति

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदापि च न जानेस्तुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदापि च न जानेस्तुतिकथा॥
न जाने मुद्रास्ते तदापि च न जाने विलपनं,
परं जाने माता तदऽनुसर्णं क्लेश हरनम् ॥१॥

منتر تہ ینتر ژھۄ نہ کینہہ زانان
زانان چھس نہ ماج چون مہما ✢
آواہن تہ دیان چھس نہ کینہہ تہ زانان
زانان چھس نہ ماتا ماجی لوتا
مدرایہ تیانہ ماج چھسنہ کینہہ زانان
زانان چھسنہ ماتا چون ولیپن
بدہش یو کھتی ماج چھسنہ زانان

زٕ یئہ پیتہ پکھ وٕچھن اش سپدان (۱)

मन्त्र तु यन्त्र छुस न केंह ज़ानान,
ज़ानान छुसनु माता चोन महिमा।
आवाहन तु ध्यान छुसनु केंह ति ज़ानान,
ज़ानान छुसनु माता चोन्य तोता।
मुद्राय चानि मंज छुसनु केंह ति ज़ानान,
ज़ानान छुसनु माता चोन विलीपन,
बेड हिश योरुती मांज छुसनु ज़ानान,
चैय पत पत पंकिथ दोखन नाश सपदः
((१))

विधेरज्ञानेन द्रव्यन विरहीनालस्तया
विधी अशाक्यत्वात्तव चरणयो या च्युत्यभूत।
ततेतद क्षिन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे:
कुपुत्रो जायेत कुचिदऽपि कुमाता न भवत:
((२))

چھس وینڈی نہ زانہ ؤن دیہ روس تہ آلزی
زٕ رنہ سیوا چانی چھسنہ کنیہہ کران
بیزتہ آلزی سوس چھس یہ کرتم کھیما
ہی ماتا ساریہ نہ چھکھ وودار کران

کوٚنہ چھیہٕ زٕگتس منٛز یادٕ سپدان
ماتا کو ماتا زانہہ تہٕ چھیہٕ نبان۔ (۲)

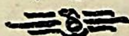
कुस विदी न ज़ानुचुन, दनु रोस त आलुच़्य,
च़रन, सीवा चोन्य कुस नु कैंह करान।
यिछ़ि आलुच़्य सोस कुस वेकरतम हास..
ही माता! साविन्य छख बोदार करान॥
कोपुत्र छि ज़गतस मन्ज़ पोद सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छनु बनान॥
(२)

प्रथ्यिव्या पुत्रास्ते, जननि बहवैसन्ती सरला:,
परम तेषां मध्य-विर्लतरलोहं तव स्वत:।
मध्य योयं त्याग: समुचित्तं इदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायीते, कुचिदपि कुमाता न भवते॥३॥

ماتا پرتھوی پیٹھ ستھا زٕ سنتان
تِمن منٛز ئبے لیوت چھسے نابہ کار
چھکھ مےٚ تراوان ماتا چھےٚ نہٕ زٕ یہ جایز
ہی پاروتی کوٚنہ چھکھ وہتاران
کوٚنہ چھیہٕ زٕگتس منٛز یادٕ سپدان

ماتا کو ماتا زانہ نہ چھُنہٕ بنان -(۳)

माता पृथ्वी प्यठ स्यठा छे सन्तान,
तिमन मन्ज़ बंय यीत कुसय नाबकार।
कुस मे नावान माता क्युय नु छे यि जॉयिज़,
ही पारवंती कोनु छख व्यछ़ारान ।
कोपुत्र छि ज़गतस मंज़ पादु सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छुनु बनान ॥३॥



जगतमातर्माताः तव चरण सेवा न रचिता,
न वादत्तं देवे द्रव्यनंपि भोयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं, मयि निरुपममयत प्रकरुषि
कुपुत्रो जायीते कुचिदपि कुमाता न भवते॥
(४)

ہی زگت ماتا چانٕی ژرنہٕ سیوا
نہٕ کرٕم ہیتھ کُن نہٕ وُنی کین کران
چانہٕ باپتھ خرچ کُنہ کوٚرُم نہٕ ازتانی
وُنی کین تہٕ دِنہٕ ژےٚ ہیتھ چھُس نہٕ خرچان
توتہٕ چھکھ ژٕ سو ماتا، لٔسی چھُ میون حدرؤس

موحبتہ تہ لوسہ چھم تسے گرزِ رچھان
کو پُتر چھِ زگتس منز پاؤ سپدان
ماتا کو ماتا زانہہ تہ چھنہ بنان۔ (۴)

ही ज़गत माता चांन्य चरन् सीवा,
न कॅरुम पथकुन न कुन्यक्यन करान।
चानि बापथ खर्च कुनि कॊरुम न अज़तास,
कुन्यक्यन ति दन् चॆ पथ छुसन् खंचान।
तोति छख च़ सो माता, यस छु म्योन हद रोस
मोहबथ तु यॊस् छम में गरि गरि रछान।
कोपुत्रुर छि ज़गतस मंज़ पाद् सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छन् बनान्॥
((4))

परित्यक्ता देवान विविधविद् सेवाकुलतया,
मया पञ्चाशीतेऽधिकमपनीतेतु वयसि।
इदानींचिद्मातः तव यदि कृपानापि भक्ता
निरालंबो लंबोधर जननि कं यामि शर्णम्॥
(५)

سارے دیوَن ہنز سیوا ترائو
سٹھ ونت ژھیپ تاج سیٹھا و یا گل

۸۵: وُدی گُزرآو شے وُہِ بند ی
سپُدمُت چھس بہ مانج سیٹھا نبرکل
دونی یودوےٗ منے بنہٕ ہنز چانی کرپا ہی ماںج
تھپہ روس چھسے بہٕ ماںج کس گژھہ شرن (۵)

सारिनुय दीवन् हुन्ज़ सीवा में त्रांव,
सपुदमुत छुस बे मांज स्यठा व्याकुल।
85 वरी गुज़रांव्य में वुम्बरि हुन्द्य,
सपुदमुत छुस बे मांज स्यठा न्यरबल।
वीन्य योदवय में बनि न चान्य कृपा ही मोज,
थपि रोस छुसय बे मांज कस गछु शरन॥
((5))

चिता भस्मालेपो घरलमशनंचयकपट दुरी,
जटा धारी कण्ठे भुजगपति हार पशुपत्ते।
कपाले भोतेष्व- भजसि जगत्तद्दैकपदवीं,
भवाने त्वत पाणे ग्रहण परिपाट्य फलम इदम्॥
(६)

چِتا بسما لیپ زہر چھے خوراک
ننگے وتھ نگہ مالہ نالی تراوان -
واسک یہٕ لیس لیس چھا چھ داراں ، موت لیس سا دی بنیہ چھ مانں

سے شُو زُنگتاکس ساٹھی باوتس
ہی ماتا چانہ اَتھواسہ چھُو واتان -(6)

चिता बस्मा मॅलिथ यस ज़हर छुय खोराक,
नंगय तु कलु मालु नॉल्य ज्ञावान।
वासुक हटि यस सुसज़रा छु दारान,
मोत यस सॉमी पनुन छु मानान।
सुय शिव ज़गत्तकिस सॉमी बावस,
ही माता चानि अथवासु छु वातान ॥6॥

न मोक्षस्याकान्क्षा न च विभव: वाञ्छापिन नं
न विज्ञानानऽपीक्षा, शशिमुख सुखेचापि न पुनः॥
अतस्ताम समयाचे, जनीन जननं यातु मुम वै:
मृडानी रुद्राणी, शिवशिव भवानीति जपत:॥7॥

چھینہ مانج ہو کینہ کانکیا آسون = بیٹیہ چھینہ وسہ پہ آج کانہہ تُھما
کنیا چھ اپیاکھیا چھینہ مانج سہی آسوی = سی کھ سُرمانہ چھینہ ماتا کانکھان
چھس بہ ماتا تریہ منگان زندگی گزارا = شو شو لو آنی زپ کرانی

छमनु मॉज मूक्षिच कांक्षा आसवुन्य,
बेयि छमनु व्यववुच ति मॉज कांह यछा।
ज्ञानुच अपीक्षा छमनु मॉज मे आसवुन्य,
सोख यछाति छुसनु माता कांछान। ।
छुस बॅ मांता चैय मॅगान ज़िंदगी गुज़ारहा,

शिव शिव बवानी ज़प करानी ॥०॥7॥

कश्मीर होटल बोर्डिंग

अमीराकदल, श्रीनगर।

शालीमार आर्ट प्रेस, रेडक्रास रोड,
श्रीनगर।
टेलीफोन नं० : 74372.